BHOJPURI JUNCTION-DELBHO/2021/81811

Title Code - DELBHO00011

http://humbhojpuria.com/ https://twitter.com/bhojpurijuncti2/ https://www.facebook/com/bhojpurijunct2

पाक्षिक पत्रिका | 1- 30 अप्रैल, 2024 | मूल्य - ₹ 20

भोजपुरी जंक्शन

रामजी के चिरई, रामजी के खेत

(रामजी पर कवितन के संग्रह)

रामजी के भइले जनमवा हो रामा...

BHOJPURI JUNCTION-DELBHO/2021/81811

Title Code - DELBHO00011

http://humbhojpuria.com/ https://twitter.com/bhojpurijuncti2/ https://www.facebook/com/bhojpurijunct2

पाक्षिक पत्रिका | 1 फरवरी - 31 मार्च, 2024 | मूल्य - ₹ 20

भोजपुरी जंक्शन

राम रसायन तुम्हरे पासा

वर्ष :4, अंक : 15-16 | 1 - 30 अप्रैल, 2024

भोजपुरी जंक्शन

पाक्षिक पत्रिका

अध्यक्ष आ प्रधान संपादक
रवीन्द्र किशोर सिन्हा

संपादक
मनोज भावुक

उप संपादक
अखिलेश्वर मिश्रा, अनिल कुमार दुबे 'अंशु'
मनीषा श्रीवास्तव, परिधि जैन

कला अउर सज्जा
ज्योति सिन्हा

सोशल मीडिया
सुमित रावत

विपणन विभाग

सहायक उपाध्यक्ष
विशाल सिन्हा (मो.- 8853531208)
जनसंपर्क अधिकारी: संदीप द्विवेदी (मो. 9868317507)
क्षेत्रीय प्रबंधक : बिहार-झारखंड
मनीष किशोर (मो.-9334919888)

संपादकीय कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
editor.humbhojpuria@gmail.com

पंजीकृत कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
http://humbhojpuria.com/
https://twitter.com/bhojpurijuncti2
https://www.facebook.com/bhojpurijunct2/

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक रवीन्द्र किशोर सिन्हा द्वारा ई - 1, ईस्ट ऑफ़ कैलाश, नई दिल्ली - 110065 से प्रकाशित अमर उजाला लिमिटेड, सी - 21/22, सेक्टर - 51, नॉएडा 201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित । संपादक - रवीन्द्र किशोर सिन्हा ।

लमहर कविता

प्रभाकर पाठक.....88
परिचय दास.....90

भाषांतर

बुद्धिनाथ मिश्र/मैथिली कविता.....94
राकेश कुमार /मगही कविता.....95

लोकगीत

राम पर लोकप्रिय दू गो लोकगीत.....96

एह अंक में

सुनीं सभे

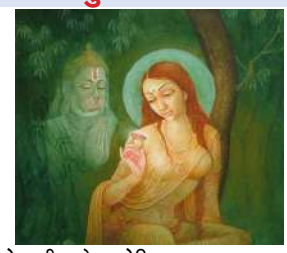

अब माता सीता के भी गहराई से जानी यूरोप-अमेरिका 6

धरोहर

महेन्दर मिसिर.....8
भिखारी ठाकुर.....9
रघुवीर नारायण.....10
योगेन्द्र प्रसाद 'योगी'.....11
शारदानन्द प्रसाद.....12
ब्रजकिशोर दुबे.....13
अनन्या प्रसाद.....14

राम कवितावली

आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन'.....15
डॉ. ब्रज भूषण मिश्र.....16
भगवती प्रसाद द्विवेदी.....17
मार्कण्डेय शारदेय.....18
सुभाष चन्द्र यादव.....19
तंग इनायतपुरी.....20
सूर्यदेव पाठक पराग.....21
सौरभ पाण्डेय.....22
संगीत सुभाष.....23
माधव पाण्डेय निर्मल.....24
विनय राय बबुरंग.....25
रामप्रसाद साह.....26
भरत सिंह "भारती".....27
विष्णुदेव तिवारी.....28
शशि 'प्रेमदेव'.....29
संजय मिश्र 'संजय'.....30
राजनाथ सिंह 'राकेश'.....31
चंदेश्वर परवाना.....32
चंद्रेश्वर.....33
अनिल ओझा नीरद.....34
कनक किशोर.....35
दिनेश पाण्डेय.....36
कृष्ण मुरारी राय.....37
ओम प्रकाश पाण्डेय.....38
रामरक्षा मिश्र विमल.....39
डॉ.निखिल कांत.....40
डॉ. प्रतिभा कुमारी पराशर.....41
बिम्मी कुंवर.....42
सरोज त्यागी.....43
पार्वती देवी "गौरा".....44
कैलाश नाथ शर्मा 'गाजीपुरी'.....45
यमुना तिवारी व्यथित.....46
राजकान्ता राज.....47
मीरा श्रीवास्तव.....48
किरण सिंह.....49
डॉ. कादम्बिनी सिंह.....50
उमेश कुमार पाठक 'रवि'.....51
दिलीप पैनाली.....52
वीणा सिन्हा.....53
माया शर्मा.....54
निशा राय.....55
अनिल कुमार दूबे'अंशु'.....56
इंदुबाला.....57
डॉ. नीलम श्रीवास्तव.....58
मनोज भावुक .,,,,.....59
डॉ.दिवाकर राय.....60
राजीव कुमार.....61
अजय साहनी.....62
श्वेता राय.....63
अजय कुमार.....64
फतेहचंद बेचैन.....65
वृन्दा पाण्डेय.....66
संजय कुमार.....67
धर्मप्रकाश मिश्र.....68
ब्रजेन्द्र नाथ मिश्र.....69
कामेश्वर दुबे.....70
ऋचा वर्मा.....71
निवेदिता श्रीवास्तव 'गागी'.....72
साधना शाही.....73
डॉ अन्नपूर्णा श्रीवास्तव.....74
डॉ. भोला प्रसाद 'आग्नेय'.....75
डा. मधुबाला सिन्हा.....76
गोपाल दूबे.....77
गीता चौबे गूँज.....77
करुणा कलिका.....78
राम बहादुर राय.....78
सरिता सिंह.....79
कुमारी पलक यादव.....79
रचना झा.....80
डॉ. कल्पना पाण्डेय 'नवग्रह'.....80
राम मनोहर.....81
रामविलास भगत माली.....81
रेणु अग्रवाल.....82
करुण बाला.....82
अरविन्द तिवारी.....83
अश्विनी द्विवेदी.....83
नीलू सिंह.....84
लक्ष्मी सिंह रूबी.....84
अजय कुमार मिश्र 'अजयश्री'.....85
राकेश कुमार पाण्डेय.....85
कृष्णा श्रीवास्तव.....86
ऋचा पराशर.....86
रीमा ओझा.....87
अवनींद्र आशुतोष.....87

भगवान राम पर मुस्लिम शायर लोग के अशआर.....107

आईं भोजपुरी जंक्शन के सोशल अड्डा पऽ

https://humbhojpuria.com

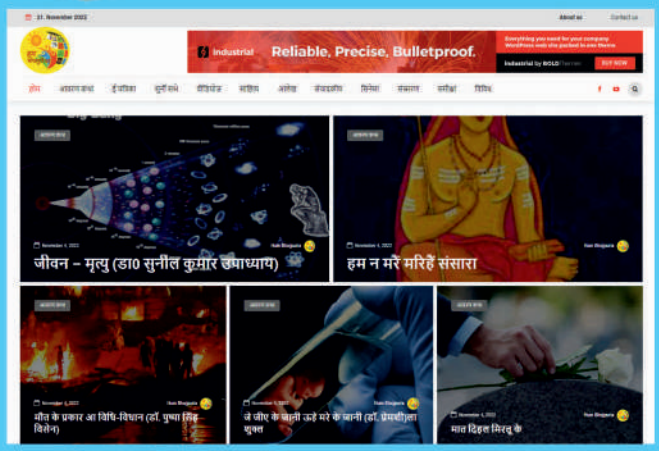

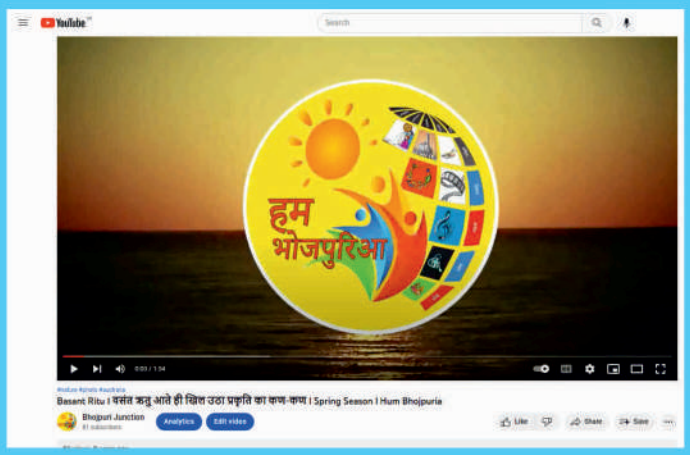

https://facebook.com/humbhojpuriaa/

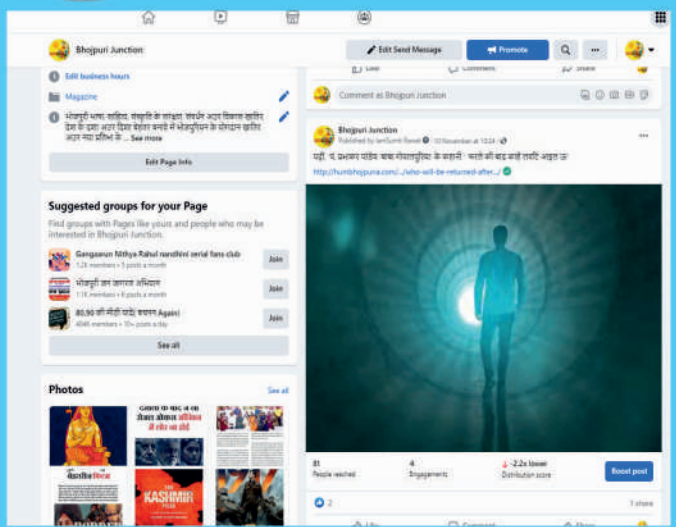

https://twitter.com/humBhojpuria

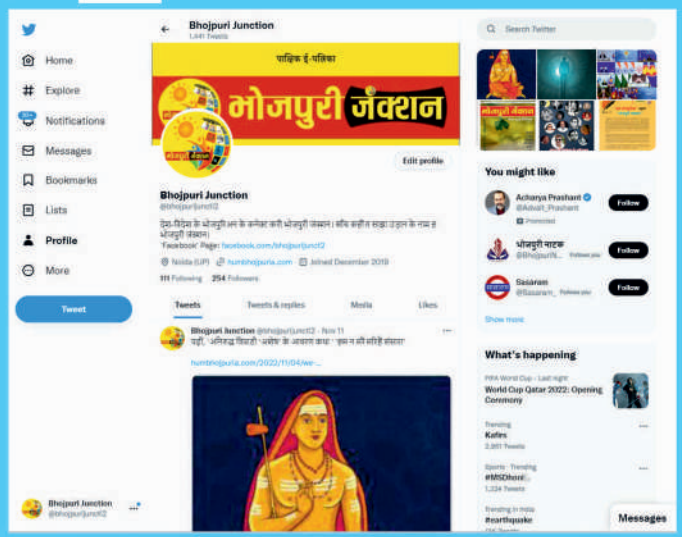

संपादकीय

राम जी के चिरई, राम जी के खेत

'राम जी के चिरई, राम जी के खेत;
खा ल चिरई, भर भर पेट।'

ए पाँतिन के मरम बुझा जाय आ बात चित्त प चढ़ के चेतना में उतर जाय, आत्मसात हो जाय त 'तसलवा तोर कि मोर' के सवाले ना रह जाई। सब रामजी के ह आ सबमें रामजी बाड़ें। राम के बिना जीवन के कल्पने नइखे हो सकत। भारत में त बिल्कुल ना।

तबो कुछ लोग राम, उनकर नाँव आ अस्तित्व पर सवाल उठावत बा। चलीं; सवालो तक ठीक बा बाकिर कुछ लोग त गरियावहूँ से बाज नइखन आवत। राम ओह लोग के सद्बुद्धि देस। ओह लोग के बुझात नइखे कि राम के अपमान माने मानवता के अपमान, भारतीय आस्था के अपमान आ भारत के अपमान।

हमरा खिड़की से होके आवत झिर-झिर हवा का संगे राजन जी महाराज के एगो गीत के बोल छन-छन के भीतर ससर आवता-

"धनि-धनि चइत महिनवा कि सुघर समइया नू हो / रामा; प्रगट भए रघुरइया, परम सुखदइया नू हो"

लैपटॉप पर 'भोजपुरी जंक्शन' के पिछला अंक खुलल बा- राम पर केंद्रित अंक- "लोक में राम : राम में लोक", राम पर साहित्य, सिनेमा, संगीत, लोकरंग, रामलीला आ रामराज्य पर लेख आ प्रकाशित किताबन के कभर पेज ... आदि 108 पेज के गद्य सामग्री।

सामने खुलल पन्ना पर एगो सोहर बा-

"चइत अंजोरिया के नवमी, त राम जनम लिहले हो, ललना; बाजे लागल अवध बधाव, महलिया उठे सोहर हो"

ई चइत महीना ह। रामजी के जनम के महीना। रामजी पर भोजपुरी कविता के अंक रउरा सब के भेंट करत बानी। धरोहर में कुछ दिवंगत कवि लोग के रचना बा। बाकी वरिष्ठ, कनिष्ठ आ नवोदित सभे शामिल बा। रचनात्मक सहयोग खातिर सबके आभार।

कुछ लोग के राम पर केंद्रित अंक निकललो पर आपत्ति बा। अब एह देश में राम आ कृष्ण पर अंक ना निकली त केकरा पर निकली? राम से बड़ आदर्श के बा ?

राम कवनो व्यक्ति भा नाँव भर नइखन, ऊ भारत आ भारतीयता के मन-प्राण बाड़ें, भारतीय जीवन शैली के आधार बाड़ें। भारत के पहचान बाड़ें, प्रतिरूप बाड़ें। भारतीय जन-जीवन के उनका से अलग करके सोचले नइखे जा सकत। हमनी के बात-बात में राम बाड़ें। हर घटना आ परिस्थिति में राम बाड़ें। रोअला-गवला में, शादी-बिआह आ रस्मो-रिवाज में, हर मूल्यांकन-विश्लेषण में, गणना-गणित, भोजन-भजन, हवा-पानी आ जनम से मरण तक, सब जगह राम बाड़ें। राम से भारत आ भारत से राम के विलग करे खातिर केतनो कुचक्र रच लीं, केतनो विष-वमन कर लीं, राम पर केतनो कलंक लगा लीं, केतनो चाल चल लीं, राउर दाल ना गली। राम हर भारतीय के रोआँ-रोआँ आ साँस-साँस में समाइल बाड़ें। राम भारत के आत्मा बाड़ें, पर्याय बाड़ें। राम के कवनो विकल्प नइखे।

जीवन में जब कुछ ना सूझेला त राम सूझेलें। राम गहन निराशा में आशा के नाम ह।

सभे जानत बा कि घोर निराशा के युग में रामजी के जनम भइल। ओह समय संसार के समस्त जीव, इहाँ तक कि देवतो लोग असुरन के अत्याचार से आतंकित रहे। राम से सभका आराम मिलल। राम के संघर्षमय अउर उदात्त जीवन के गाथा में हमनी के जीवन के हर समस्या के समाधान बा।

'राम जी के चिरई, राम जी के खेत; ... के गूढ अर्थ समझ लेला पर एह गाना के अर्थ भी खुल जाला कि ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है...

शून्य से शुरू होके सब शून्य पर खतम हो जाए के बा। धरती के रजिस्ट्री करा के हमनी खुश होत बानी कि हमरा हेतना बिगहा खेत आ हेतना तल्ला मकान हो गइल आ ..आपन भरोसे नइखे कि कब ले बानी! अरे ई सब व्यवस्था जीये-खाये खातिर बा, देखावे-जरावे, लूटे-खसोटे आ अत्याचार-अहंकार खातिर ना। सब रामजी के ह। रामजी के मर्जी से बा। खेत आ मकान-दोकान त छोड़ीं, जीवन में अइसनो समय आवेला कि आदमी अपनो के ना चीन्ह पावे। जीवन के तमाम भौतिक, अभौतिक उपलब्धि सब के एगो एक्सपायरी डेट बा। एह से कवनो चीज के अहंकार ठीक नइखे।

राज्याभिषेक के जगह बनवास मिलल रामजी के। रामजी कौशल्या जी से कहलें, "बाबूजी हमरा के पूरा जंगल के राजा बना देलें माई!"

जीवन के एह से बड़ सकारात्मक नजरिया नइखे हो सकत। कबो-कबो लागेला कि ई जीवन निरर्थक बा। राम जीवन के सार्थकता बतावेलें अउर बतावेलें हर मुश्किल से बाहर निकले के उपाय।

तुलसीदास जी कहले बानी-

सीय राममय सब जग जानी।
करउं प्रणाम जोरि जुग पानी॥

सम्पूर्ण सृष्टि सीता-राम के ही स्वरूप बा अर्थात सबमें भगवान के वास बा। एह से हाथ जोड़के सबमें समाइल सियाराम के प्रणाम करे के चाहीं।

सबके प्रणाम। जय सियाराम !
मनोज भावुक

सुनीं सभे

आर. के. सिन्हा

अब माता सीता के भी गहराई से जानी यूरोप-अमेरिका

भारत, राम आ हिंदी के लेके विदेशी विद्वानन में सदियन से जिज्ञासा के भाव बनल रहल बा, जवना के पता ना काहे हमनी के आपन बुद्धिजीवी आ इतिहासकार छुपावे के भरपूर प्रयास कइले बाड़न। एह जिज्ञासुअन में अनेक यूरोपीय, अमेरिकी, चीनी, अरबी अउर जापानी विद्वान लोग भी शामिल रहल बा। ओह नाम में अब एगो नाम अमेरिकी लेखिका डेना मेरियम के भी जुड़ गइल बा। ऊ बिगत चार दशक से हिंदू धर्म के गहन अध्ययन कर रहल बाड़ी। अब ऊ माता सीता पर गहन शोध के बाद एगो किताब 'द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ सीता' लिखले बाड़ी।

भारत, राम आ हिंदी के लेके विदेशी विद्वानन में सदियन से जिज्ञासा के भाव बनल रहल बा, जवना के पता ना काहे हमनी के आपन बुद्धिजीवी आ इतिहासकार छुपावे के भरपूर प्रयास कइले बाड़न। एह जिज्ञासुअन में अनेक यूरोपीय, अमेरिकी, चीनी, अरबी अउर जापानी विद्वान लोग भी शामिल रहल बा। ओह नाम में अब एगो नाम अमेरिकी लेखिका डेना मेरियम के भी जुड़ गइल बा। ऊ बिगत चार दशक से हिंदू धर्म के गहन अध्ययन कर रहल बाड़ी। अब ऊ माता सीता पर गहन शोध के बाद एगो किताब 'द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ सीता' लिखले बाड़ी।

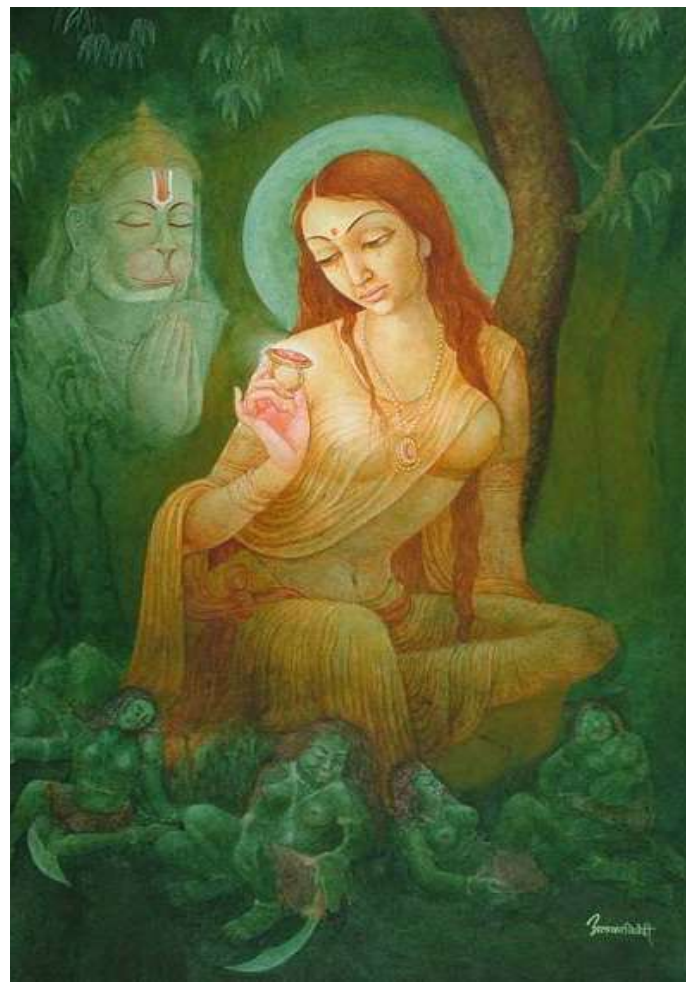

जनवरी 2024 में भइल अयोध्या में राममंदिर के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के आलोक में डेना मेरियम के माता सीता पर आइल किताब के महत्वपूर्ण माने के चाहीं। उनका अपना देश अमेरिको में प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के लेके अभूतपूर्व उत्साह देखे में आइल रहे। प्राण-प्रतिष्ठा कार्यक्रम अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर के फेमस टाइम स्क्वायर पर भी दिखावल गइल रहे। अमेरिका के हर शहर में राम मंदिर उद्घाटन कार्यक्रम के टेलीकास्ट कइल गइल रहे।

डेना मेरियम के 'द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ सीता' तुरंत विद्वानन के ध्यान आकर्षित कइले बा। माता सीता पर कइल गइल मूल शोध के नजरअंदाज कइल असंभव बा। माता सीता आधुनिक समाज के नारी खातिर प्रेरणास्त्रोत बाड़ी। अगर नारी, मां सीता के आदर्श के अपना जीवन में आत्मसात कर लें उनकर जीवन भी आनंदमय होके संकट मुक्त हो जाई। माता सीता के जीवन आधुनिक परिवेश में भी अनुकरणीय बा। पतिव्रत धर्म के पालन करत-करत ऊ राजमहल के ऐश्वर्य के त्याग करके वन में संघर्षशील जीवन बितइली। अतने ना, पति के आदेश पर अपना दोसरका निर्वासन के दौरान वन में साधारण स्त्री के तरह रहत आ एगो आदर्श माँ के कर्तव्य निभावत उच्च आदर्श स्थापित कइली। आज

के समाज में ओह आदर्शन के त लोप होत जा रहल बा।

डेना मेरियम के पुस्तक के देखला के बाद स्वर्गीय कथाकार-उपन्यासकार मृदुला सिन्हा जी के स्मरण हो रहल बा, जे दशको पहिले एही विषय पर एगो अद्भुत उपन्यास ''सीता पुनि बोली'' लिखले रहली। डेना मेरियम भी प्रख्यात हिंदी सेवी आ राम चरित मानस के प्रकांड विद्वान फादर कामिल बुल्के के तरह ही हिंदी के उदभट विद्वान बाड़ी। ई निर्विवाद बा कि माता सीता के बिना राम अधूरा बाड़न। माता सीता पृथ्वी से जन्मल एगो देवी हई। ऊ हिंदू धर्म में समृद्धि, धन आ सुंदरता के देवी लक्ष्मी के अवतार भी मानल जाली। सीता के आदर्श पत्नी अउर महिला के रूप में चित्रित कइल गइल बा, जबकि उनकर पति राम, भगवान विष्णु के अवतार, रामायण के नायक अउर आदर्श पति आ **मर्यादा** पुरुषोतम बाड़न। माता सीता, जेकर भारत पूजा करेला पर किताब लिखे खातिर डेना मेरियम, भारत में ऋषिकेश, अयोध्या आ वैष्णो देवी जइसन कई हिंदू तीर्थ स्थानन के यात्रा कइले बाड़ी। उनका खातिर भारत दूसरका घर जइसन बा। ऊ मैक्स मूलर अउर फादर कामिल बुल्के के परंपरा के विदेशी बाड़ी, जे भारत आ हिन्दू धर्म के अहम प्रतीकन के गहराई से अध्ययन कइले बा। डेना मरियम परमहंस योगानंद के शिष्या आ क्रिया योग ध्यान के अभ्यासी रहल बाड़ी। ऊ वैदिक परंपरा के महान ग्रंथन के भी लम्बा समय से छात्रा रहल बाड़ी।

ई सुखद बा कि एगो विदेशी लेखिका माता सीता पर एगो प्रामाणिक पुस्तक लिखले बाड़ी। 'द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ सीता' के प्रसिद्ध प्रकाशक 'मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशिंग हाउस' प्रकाशित कइले बा।

डेना मरियम अपना पुस्तक में सीता के जीवन के पारंपरिक कथा के प्रतिस्थापित कइले बाड़ी। माता सीता वास्तव में देवी नारायणी के अवतार हई। सीता ओह समय एगो नया सभ्यता के नींव रखे में श्री राम के साथे शामिल होखे खातिर पृथ्वी पर आइल रहली, जवना समय मनुष्य प्राकृतिक दुनिया से अलग होखे लागल रहे। ऊ लोग के दिल अउर दिमाग में, जंगल आ नदी, पौधा आ जानवर के जीवन खातिर एगो महान प्रेम पैदा करे के चाहत रहली।

केकरा नइखे पता कि फादर कामिल बुल्के खातिर भारत अपना मातृभूमि से भी कहीं ज्यादा प्यारा रहे। बेल्जियम में जन्मल फादर

डेना मरियम के पास दर्शन के गहरा ज्ञान त रहले रहे ऊ भारतीय दर्शन के भी गहराई से अध्ययन कइली। एह पुस्तक में, डेना मेरियम सीता के विवाह, मिथिला से प्रस्थान, अयोध्या में समायोजन, प्राचीन अयोध्या में पुनर्जन्म, मंदोदरी द्वारा सीता के शिक्षा, अयोध्या में वापसी, वन में वापसी, वन में जीवन, शिक्षा आदि पर अध्याय समर्पित कइले बाड़ी।

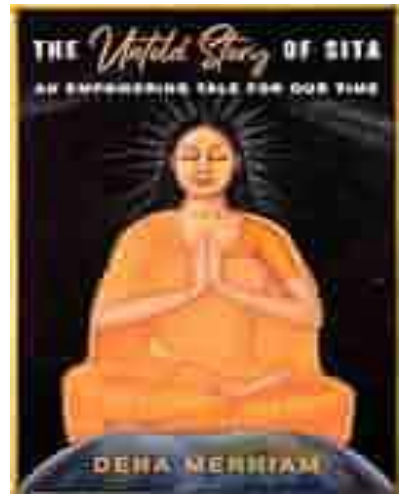

कामिल बुल्के इलाहाबाद विश्वविद्यालय से ''रामकथा उत्पत्ति और विकास'' पर डाक्टरेट कइले आ रांची के सेंट जेबियर्स कॉलेज में जिन्दगी भर हिंदी पढ़इले। ई असंभव बा कि हिन्दी पट्टी के कवनो शख्स उनकर नाम ना सुनले होखो भा अंग्रेजी के कवनो जटिल शब्द के हिन्दी में सही आ उपयुक्त शब्द जाने खातिर फादर कामिल बुल्के द्वारा निर्मित शब्दकोष के पन्ना ना पलटले होखो। फादर बुल्के आजीवन हिन्दी के सेवा में जुटल रहले। ऊ हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोश के निर्माण खातिर सामग्री जुटावे में सतत प्रयत्नशील रहले। आज उनकर अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोष सबसे प्रामाणिक मानल जाला। हमरो सौभाग्य रहल बा कि अनेक वर्ष रांची में होखे वाला तुलसी जयंती समारोहन में उनका के सुनलीं आ अनेक बार मिले के मौका मिलल। एगो सौभाग्य के बात इहो रहे कि हमार धर्म पत्नी उनहीं के शिष्या रहली आ उनहीं के मार्गदर्शन में रांची विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. कइली।

डेना मरियम के पास दर्शन के गहरा ज्ञान त रहले रहे ऊ भारतीय दर्शन के भी गहराई से अध्ययन कइली। एह पुस्तक में, डेना मेरियम सीता के विवाह, मिथिला से प्रस्थान, अयोध्या में समायोजन, प्राचीन अयोध्या में पुनर्जन्म, मंदोदरी द्वारा सीता के शिक्षा, अयोध्या में वापसी, वन में वापसी, वन में जीवन, शिक्षा आदि पर अध्याय समर्पित कइले बाड़ी।

एही बीचे, ई सभका पता बा कि मैक्स मूलर कबहूँ भारत नइखन आइल बाकिर ऊ, संस्कृत के गहन अध्ययन कइले बाड़न। एकरा बाद से त संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थन के अनुवादो के सिलसिला शुरू भइल। उहाँ का 'मेघदूत' के जर्मन भाषा में पद्यानुवाद कइले बानी।

डेना मरियम कहलीं कि ऊ जब माता सीता के जीवन आ संघर्ष के बारे में पढली त उनका लागल कि एह विषय पर लगातार शोध करे के आवश्यकता बा। एही से ऊ माता सीता पर शोध कइली आ एगो पुस्तक भी लिखली।

माता सीता भारत के नारियन खातिर त हमेशा आदर्श रहिहन। ऊ कबहूँ धैर्य नइखी खोवले। ऊ त्याग, पति के मान आ पतिव्रत के पालन जीवनपर्यंत करत रह गइली। माता सीता के चरित्र संपूर्ण विश्व के ज्ञान देवे वाला चरित्र बा, जवन नारी के त्याग, समर्पण, साहस शौर्य के प्रत्यक्ष प्रमाण बा। ई हर्ष के विषय बा कि माता सीता के जीवन चरित्र पर एगो अमेरिकी लेखिका लिखले बाड़ी। अब त मानल जा सकेला कि माता सीता के बारे में अमेरिका आ यूरोप के समाज के भी ठीक से पता चल जाई।

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार आ पूर्व सांसद बानी।)

अइसन दुलहवा हम कबहीं ना देखनीं

सोरहो सिंगार करि चलु रे सहेलिया
से देखि आई राम चारो भइया हो लाल।

कलंगी सोहावन लागे जामा केसरिया
से साँवरी सुरतिया मनवाँ मोहेला हो लाल!

सोने का थाली मे आरती उतरनीं
से केशर के चन्दन लगाई हो लाल।

तबला सारंगी बाजे खंजरी सितारा
से नीको बड़ी लागे सहनइया हो लाल।

अइसन दुलहवा हम कबहीं ना देखनीं
से हँस-हँस मोह अंगनइया हो लाल।

हिलि-मिली गाऊ सखिया राम के रिझाऊ
से कब ले दू अइहें ससुरिया हो लाल।

कहत महेन्दर आजु चारों दुहलवा के
हँस-हँस गरवा लगइहो हो लाल।

फूल तूड़े गइनीं राम राजा जी के बगिया

फूल तूड़े गइनीं राम राजा जी के बगिया
बनवारी हो, मिली गइलें राजा के कुमार।

साँवली सुरतिया रामा मोहनी मुरतिया
बनवारी हो, लागि गइलें नैना के कटार।

एक डर लागे मोहे सास ननद के
बनवारी हो सइयाँ मारी मूंगरी के मार।

तोहरी पिरीतिया रामा जिया से ना भूले
बनवारी हो चाहे जिउआ रहे चाहे जाय।

कहत महेन्दर मोरा जिया के लोभवलें
बनवारी हो, हंसी करे गउआ जवार।

(सौजन्य- डॉ. ब्रज भूषण मिश्र आ अनिल कुमार दूबे "अंशु")

प्रसंगः दुलहा राम सहित चारो भाई के सौन्दर्य वर्णन

अइसन ना अइलन नगर में दुलहा, अइसन ना अइलन नगर में। टेक ।
नर-नारी मिथिला के बासी चरचा करत घर-घर में। दुलहा,अइसन....

भाल तिलक, कान कुंडल, अलफी' मउरी बिराजत बा सर में।
पैताबा, पैजामा, छकलिया, पेन्हले चारु गत्तर में। दुलहा, अइसन...

उमर बरोबर, रूप के आगर, सागर समइलन गागर में। दुलहा,अइसन
नाई 'भिखारी' कहत ना निकलिहन, गड़िन गइलन भितरी नजर में। दुलहा, अइसन...

प्रसंगः दुलहा चारो भाई श्रीराम आ दुलहिन चारो बहिन सीता के शोभा के वर्णन

देखऽ राम दुलहा-दुलहिन के। टेक।
भरत, लखन, रिपुसूदन समेते सोभा चारू भाइन के। देखऽ...
स्यामल, गोर, मनोहर अइसन दुनियाँ में दोसर बा फिन के? देखऽ...
जनकसुता, कुसकेतु लाड़ली ओसहीं चारू बहिन के। देखऽ...
ब्रह्मा, महेस, सेस गुन गावत कहत 'भिखारी' नाई जिनके । देखऽ...

(सौजन्य- डॉ. ब्रज भूषण मिश्र आ अनिल कुमार दूबे "अंशु")

विजयी नायक रामायण के अंश

राम राम राम रामजी के नमवाँ हो ना।
राम जन "रघुवीर" के प्रनमवाँ हो ना।
राम रूपकला माता के चरनवाँ हो ना।
राम जन "रघुबीर" के प्रनमवाँ हो ना।
राम शुभ सावित घरिया लगनवाँ हो ना।
राम आई पहुंचल पुष्पक विमनवाँ हो ना।
राम हाले हुले बाबू दरसनवाँ हो ना।
राम देवी देवता घेरे असमनवाँ हो ना।
राम पहिले बाबू रोपेले असनवाँ हो ना।
राम बाबू पीछे सीता के असनवाँ हो ना।
राम पेन्हले बारो फूल के कंगनबाँ हो ना।
राम तेकरा पीछे लषन उतनवाँ हो ना।
राम चली भैले पुष्पक विमनवा हो ना।
राम बेल गेल ऋक्ष हनुमनवाँ हो ना।
राम तहाँ बीर बायू के ललनवाँ हो ना।
राम बेद धुनि फलल बा गगनवाँ हो ना।
राम बरसे फूल दुनो का बदनवाँ हो ना।

(सौजन्य- डॉ. ब्रज भूषण मिश्र आ अनिल कुमार दूबे "अंशु")

धरोहर

योगेन्द्र प्रसाद 'योगी'

तुलसी

(१)
बँधा गइल सीमा में बहत जल
इ त तोहरे काम हउये।
आज बंदी बन उतरले
इ त तोहरे राम हउयें।

घुल मिलल सब एक रस में,
भक्ति, ज्ञान आ योग जप।
छलक रहल बा प्रेम मद से
इ त तोहरे जाम हउए।

राम हउयें हर सुबह त
राम ही फेर साँझ हउयें।
इ सत्य जाहिर कर दीहल
तुलसी तोहरे काम हउये।

(२)
सोना जइसन शब्द ले ले
वेद के माने रख देहलऽ।
तू त रामायण बना के
गीता के सानी रख देहलऽ।

राम सीता के कहानी में
सब दर्शन खुल गइल।
जिंदगी के सब तिलिस्म
खोल के रखा गइल।

आँट गइली गंगो सिमट के,
इ त तोहरे जाम हउए।
बूँद में दरिया लुकाइल,
तुलसी तोहरे काम हउये।

(३)
राम के साँचा में तू त
देख लिहलऽ विश्व के,
इहे दू गो अक्षरन में,
बँध गइल सब फलसफा।

इहे दुनू अक्षरन के
तहरा पर अइसन जादू चलल,
राम ही के रंग में
सगरी दुनिया रंग देहलऽ।

ऋषियन के भी भेद ना मिलल जवन
उ राम हउयें।
स्वर्ग ले सीढ़ी लगावल
तुलसी तोहरे काम हउये।

(४)
तहरा के कविवर कहीं
कि भक्त पैगम्बर कहीं,
कह दीं होमर के बराबर
कि बहुत बढ़ के कहीं ?

कम नइखे दर्जा तोहार
सूर कालीदास से,
हम बहुत घबड़ा रहल हई
का तहरा के शायर कहीं ?

जात जेनहू बा नजर
बड़ी ऊँच तोहर धाम बा,
जेकर तुलना सम्भव नइखे
तुलसी तोहरे काम हउये।

(५)
हट गइल करिया घटा सब
मिट गइल अब सब भरम।
देखाई सगरो देबे लागल
सत्यम शिवम आ सुन्दरम।

योग से, जप से, तपस्या से,
पहुँच पइले ना मुनि।
भक्ति से ही मिल गइल
तहरा परमपद उच्चतम।

सत्य के रूख से हटल घूँघट
त देखनी राम हउयें।
ई करिश्मा ह गजब,
तुलसी तोहरे काम हउये।

(६)
सत्य के पथ पर मोसाफिर
दू कदम आगे बढ़ल,
धर्म पर फेर लवट आइल
जे धर्म से भागल रहल।

खींच ले अइलऽ स्वर्ग के
तू निकट इंसान के,
सुत गइल दुष्कर्म सब
जे चित्त में जागल रहल।

हृदय पर 'योगी' के छपल
राम के एक नाम बा।
काठ पर मोती जड़ल
तुलसी तोहरे काम हउये।

(मूल हिन्दी कविता के भोजपुरी अनुवाद। रचना वर्ष 1938. कवि- योगेन्द्र प्रसाद 'योगी': जन्म 20 जून, 1903, खेम भटकन, सिवान। प्रयाण- 24 जनवरी 1994, गोपालगंज। कवि के काव्य संकलन 'प्रेम पयाम', राजकमल, 1978, से। अनुवादकः कवि-पौत्र यशेन्द्र प्रसाद।)

शारदानन्द प्रसाद

रामलीला के रावण

रामलीला के रावन

राम का हाथे मरा गइल।

लोग थपड़ी पीटत

आ धमगज्जड़ मचावत

घरे चल दिहल।

पेन्ट कइल पर्दा गिरल।

स्टेज से उठके रावन

पाकिट से दूगो बीड़ी निकाल के

एगो राम का ओर बढ़वलस।

आ राम

दियासलाई के एके गो काठी से

दूनो के धरा लिहले।

ब्रजकिशोर दुबे

पाहुन बोलीं ना

जनक नगरिया के पूछेली झुर्रियां
पाहुन बोलीं ना
कहां पवलीं रूप ई अपार......

चान के लजावे रउवा मुंहवां के पनिया
पाहुन बोलीं ना
तनिका सा लिहीं ना निहार.....

मिसिरी नियन लागे माधुरी बचनियां
पाहुन बोलीं ना
हंसिला त बरिसे रसधार....

सोनवें अछरिया विधि लिखले सिया बगिया
पाहुन बोलीं ना
सोना में सुहागा के सिंगार.....

डर लागे हमनी के काटहूं में चूंड़ियां
पाहुन बोलीं ना
फुलवो से बानी सुकवार....

मन करे जिनिगी भ देखितीं सुरतिया
पाहुन बोलीं ना
हमनी के देस जनि बिहार

अनन्या प्रसाद

रावण

त्योहार आवेला, संग अपना खुशी के फूल बरसावेला
जब जब होला गरबा आ डांडिया के शहर में धूम
लइका सयान बूढ़ जवान सभे नाचेला खुशी से झूम-झूम
तब-तब होला बुराई के विनाश
(पता ना कइसे हो जाला बुराई के जन्म?)
अउर जब-जब रावण के हमनी के जलावेनी
तब मिलेला हमनीं के सुकून!
पर कइसन सुकून?
ऊ सुकून जे कुछ ही पल के रहेला
भलही हमनी जलावेनिसन रावण के पुतला !
लेकिन असली रावण त
बइठल बा हमनी के अंदर
आ काबू में रखले बा, सबके जकड़ के
अपना जबड़ा के मजबूत पकड़ में
रावण के त सिर्फ पुतला जलेला
समाज में असली रावण के अंत कइल
बहुत ही कठिन बा, जइसे मगरमच्छ के
मुँह में हाथ डाल के फेरू निकालल!

अनन्या प्रसाद (जन्मतिथि- 10 नवंबर 2004, पुण्यतिथि- 30 सितंबर 2023) भोजपुरी, अंग्रेजी आ हिंदी में बहुत कम उम्र से लिखे के शुरूआत कइली। ऊ एगो Youtuber आ Blogger भी रहली। साथ ही चित्रकारी, गायन, नृत्य आ तैराकी में उनकर गहिरा रूचि रहे। हिंदी के प्रसिद्ध कवि अरुण कमल जी उनका के "असीम सम्भावनाओं के कवि" कहले रहनी। ई रचना ऊ भोजपुरी जंक्शन के महिला अंक खातिर भेजली। कुछ समय बाद 19 साल से भी कम उम्र में उनकर निधन हो गइल। विद्वान साहित्यकार अनिल प्रसाद-ज्योत्स्ना प्रसाद अपना बेटी के स्मृति में इनका कविता, लेख आ पत्र के संकलन के प्रकाशन के तइयारी करत बा। - **संपादक**

राम कवितावली

आचार्य हरेराम त्रिपाठी 'चेतन'

सिद्धाश्रम में राम-लक्ष्मण

पावन परम राति पूनम सोहावन ई,
ऊगल बा चान्द जे आनन्द के बढा रहल।
जगमग तरेगन उसुकावत बा नीन्द प्रीत,
पुरवैया रसे रस बेनिया डोला रहल।
दिन के हरारत हरत सपना के जीत,
कुश के बिछौना सुख-शिखरे चढा रहल।
माटी तपोभूमि के गमक सोन्ह चूमे गात,
गंगा के प्रवाह साम-गीत बा कढा.गइल।।

झलमल जोन्हीं कोनाकोनी कहूँ गूच्छ-गूच्छ
चान्द बिसवे उदास होखत मुन्हार बा।
सुरुज के स्वागत में हय हिहिनात,
जीन पीठ ले, लगाम मुँह-टापे खुरछार बा।
उचटल नीनि, कंज मने-मने मुसुकात,
दिनभर के जिनगी जिए के तइयार बा।
छलछल लोर आँखी, भर भर रोवे राति,
देखि ऊषा-सुंदरी के सजल सिंगार बा।

आजु के विहान गुरु-नेह देखे छोह देखे,
देखे दाएँ-बाएँ काँटदार जिनगी के आर।
आर राड़ अरिन के, डर निशिचरिन के,
चरिन-हरक, सहमल आजु गंग-धार।

धार के पजाके तीर वीर दुनों कुँवर के,
कु-वर सुबाहु आ मरीच बटमार के।
मार के शिकार, फार-फार, देखे यज्ञकुंड,
कुंड कुकरम देखे निशिचर-नार के।।

केकर जराई देह, केकर खिलाई नेह,
जिनगी आ मउवत में खिरकोंई होता आजु।
धरती के छाती होई हलुक, कुभार टरी,
किरिन-अन्हार दू में टोवा-टोई होता आजु।
ताके धधकत आँखि, ताके लाल-लाल दूनो,
बीखि-भींजे बानन के ढोवा ढोई होता आजु।
प्राण-साधि भूमा में निहारे नीके विश्वामित्र,
रावन-महल शोक रोवारोई होता आजु।।

मुअल मुनिन-हाड़, लागत जियत खाँड,
वेद-ऋचा गा-गा के अशीषे रघुनाथ के।
चेंथल चेंथाइल सपन-खँड़हर किदो-
चरन के धूरि छू-छू चंदन लगावे माथ।
कौशिक के तप, राम-लखन-कुटस्थ राह,
जोति रूप लीन होत धनुविद्या साथ-साथ।
राम-बान बाँक किदो मउवत के टेढ़ आँखि,
ताड़िका के कुब्ज प्रान देह के करी अनाथ।।

डॉ.ब्रज भूषण मिश्र

रामजी अइलें भवनवा

घरे घर बाजेला बजनवा
हो रामा
राम जी अइलें भवनवा

पाँच सै बरिस रामजी तमुए में रहलें
भगतन के अँखिया से लोरवा टपकलें
आइल सपूत एगो रचलस विधनवा
हो रामा
रामजी अइलें भवनवा

ऊँचा बा आसन तबहूँ सूतल ऊ भुँइये
खइलस नाहीं अन्न बस नीमू पानी पीये
व्रत राख पूरा भइल जब अनुष्ठनवा
हो रामा
राम जी अइलें भवनवा

जनकपुर से आइल भारे भार सनेसवा
धन द्रव्य भेजत बाटे देसवा विदेसवा
असरा पूरन भइले हरखित मनवा
हो रामा
रामजी अइलें भवनवा

कतहूँ के लोगवा घंटा भेजवावल
कतहूँ के लोग भवन फूल से सजावल
कतहूँ से आवे मेवा मिष्ठनवा
हो रामा
रामजी अइलें भवनवा

चल के हजार कोस केहू त आवे
माथे पर राख के खड़ाऊँ ले आवे
केहू ले आवेला आसनवा
हो रामा
रामजी अइलें भवनवा

केहू बाटे नाचत केहू गीतिया गावत
धजा फहरावत केहू दीयरी बा बारत
घरे घरे होखत बा पूजनवा
हो रामा
रामजी अइलें भवनवा

राम कवितावली

भगवती प्रसाद द्विवेदी

सांस-सांस में आस

बसे राम में लोक,
लोक में राम विराजत।

सिया-लखन का साथे
वने-वने जे भटकल,
ऋषी-मुनी के कुटियन में
जेकर मन अंटकल।

संवरत बिगड़ल काम,
काम में राम विराजत।

जूठ बइर शबरी के जे
सवाद ले लीहल,
बूटी बनिके लछुमन के
नवजीवन दीहल।

भाई-अस हनुमान,
भगति में राम विराजत।

पत्थल मूरत अहिला के
जे ह उद्धारक,
लंकाधीश दशानन
असुरन के संहारक।

ई जिनिगी संग्राम,
जीत में राम विराजत।

सियाराममय लोक,
लोक के अजगुत दुनिया,
सियाराम के धरती
आ चिरई चुनमुनिया।

सांस-सांस में आस,
आस में राम विराजत।

से कवना काम के!

जे मोरा राम के ना,
से कवना काम के !

धरती ई रामजी के
रामजी के दुनिया,
चहके चिरइया
बारी के चुनमुनिया।

अनमोल निधिया
भेंटाला बिना दाम के ।

राम नाम जपना
पराया माल अपना,
दुनिया दुरंगी
राम लागेले कलपना !

होला राम नाम सत
भोगे जे हराम के !

भंवर समुंदर में
जिनिगी के नइया,
बेड़ा पार होई
बाड़े रामेजी खेवइया ।

रामे में बा दुनिया के
सुख चारों धाम के ।

जे बा दुराचारी ओके
राम कइसे भइहें,
बगल में छुरी राखि
कइसे गोहरइहें ?

कुकुरे बा रखवार
घरवा बा चाम के !
जे मोरा राम के ना,
से कवना काम के !

राम कवितावली

मार्कण्डेय शारदेय

अवध में स्वागत बा श्रीराम!

अवध में स्वागत बा श्रीराम!
अवध में स्वागत बा श्रीराम!
बहुत दिनन से बेघर रहलीं, आईं अपना धाम।
अवध में स्वागत बा श्रीराम!

जीवन-कला सिखाईं आईं,
ऊँच-नीच के भेद मिटाईं,
प्रेम दया करुणा पौरुष में बिहरीं आठो याम।
अवध में स्वागत बा श्रीराम!

देखीं का बा हाल देश के,
जन-जीवन के आ जनेश के,
स्वार्थ-स्वार्थ में युद्ध मचल बा, कर दीं काम तमाम।
अवध में स्वागत बा श्रीराम!

रावणत्व सगरे फइलल बा,
भय-आतंक फफन पसरल बा,
छन में दोस्ती हो जाले आ छन में कत्लेआम।
अवध में स्वागत बा श्रीराम!

व्यभिचारिन खातिर सुकाल बा,
सुपथिन खातिर ई दुकाल बा,
लूट मचावेवाला सुख में श्रमिकन के विधि वाम।
अवध में स्वागत बा श्रीराम!

रउरा आइबि शासन आई,
सुख-साम्राज्य सगरियो छाई,
बाघ बकरियन के साथे ले घूमी सुबहोशाम।
अवध में स्वागत बा श्रीराम!

राम से सिखले कहाँ गँवार!

रामायण नित पढ़ते गइले,
लोभ मोह ममता न भुलइले,
गिरल अठन्नी कतहूँ कसहूँ पिटले खूब कपार।
राम से सिखले कहाँ गँवार!

राज-पाट जे छने तियगलस,
जंगल-जंगल बहुत भटकलस,
तोरा मन के उलुटा होखल, ले ले उठा पहाड़।
राम से सिखले कहाँ गँवार!

सम्बन्धन के स्वयं सजइलस,
अगहर होके नीक निबहलस,
कइले प कइला के जेकर रहल न कबो विचार।
राम से सिखले कहाँ गँवार!

स्वार्थ-परक मैत्री ना कइलस,
जन-जन के मित्रत्व सिखइलस,
तोरा खातिर मित्र उहे बा, जे दे नगद-उधार।
राम से सिखले कहाँ गँवार!

राजधर्म में पक्षपात ना,
केहू साथे भेद-घात ना,
तोरा लउके आपन-अनकर हरदम घर-परिवार।
राम से सिखले कहाँ गँवार!

एको गुन मन रे! अपनइते,
गात्र-पात्र के कुछ चमकइते,
राम बने के बरत रही त अगिले जनम सुधार।
राम से सिखले कहाँ गँवार!

राम कवितावली

सुभाष चन्द्र यादव

अजोधा

चलि चल मनवाँ राम की नगरिया हो, डगरिया तू भुलइल कहवां।
जहां लहरे रोजो सरजू के लहरिया हो,
डगरिया तू भुलइल कहवां।।

मंदिर बहुते बनल निराला, जहवाँ सगरो लोगवा जाला,
हीरा मोती जड़ल जेकरा दुवरिया हो।।
डगरिया तू भुलइल कहवां।।

सगरो सुन्दर साज सजल बा, दियना चारु ओर बरल बा,
चम-चम चमकत बाटे सोने के झलरिया हो।।
डगरिया तू भुलइल कहवां।।

उहे हवे अजोध्या धाम, जहवाँ राम करें विश्राम,
रोजो छलके जहवाँ प्रेम के गगरिया हो।।
डगरिया तू भुलइल कहवां।।

जहिया जीव सरन में जाई, ओकर सब बिगड़ल बनि जाई,
किरिपा करिहें जहिया हो जाई नजरिया हो।।
डगरिया तू भुलइल कहवां।।

सगरो लोगवा भरम भुलाइल, बाटे सबकर ज्ञान हेराइल,
भारी लागल बाटे माया के बजरिया हो।।
डगरिया तू भुलइल कहवां।।

चाहें जीव जहाँ ले जाई, निसदिन राम नाम गोहराई,
प्रभु जी रखले बानी सबहीं के खबरिया हो।।
डगरिया तू भुलइल कहवां।।

भरमल चौरासी के छोड़, नाता राम नाम से जोड़,
रंगि ल राम रंग में आपन तू चदरिया हो।।
डगरिया तू भुलइल कहवां।।

राख रोज मिलन के आशा, तोहसे बिनती करें सुभासा,
सहजे मिलिहें तोहसे राम जी साँवरिया हो।।
डगरिया तू भुलइल कहवां।।

राम रघुराई

हमरा भरोसा बाटे राम रघुराई के।
रहिया निहारतानी आसरा लगाई के।।

दशरथ कोसिला के बनिके ललनवां,
ठुमुकि-ठुमुकि खेलें घरवां अंगनवां।
देबी देव खुश भइलें फूल बरसाई के।।
हमरा भरोसा बाटे ...

बकसर जाइ राम ताड़का के मरलें,
गौतम नारी सती अहिला के तरलें।
धेनुखा के तुरले जनकपुर जाई के।।
हमरा भरोसा बाटे ...

पिता के बचन मान तजलें नगरिया,
होके बनबासी धइलें बनके डगरिया।
पतई बिछा के सूतें बन फल खाई के।।
हमरा भरोसा बाटे ...

बनवा में घूमि-घूमि असुर संघरलें,
साधू संत धरती के दुख सब हरलें।
वेदवा पुरान नाहीं थाके गुन गाई के।।
हमरा भरोसा बाटे ...

लंका दहन करि अजोधा में अइलें,
सुर नर मुनि सब हरषित भइलें।
आरती सुभाष करें दियना जराई के।।
हमरा भरोसा बाटे ...

राम कवितावली

तंग इनायतपुरी

मोर रामजी लगइहे बेड़ा पार सुगना

काहे जिनगी से भइलऽ अलचार सुगना
मोर रामजी लगइहें बेड़ा पार सुगना।।

जब-जब केहू कतो मन से पुकारे
प्रभु चलि आवेले भगत के दुआरे
कइलें, सबरी के सपना साकार सुगना
मोर रामजी लगइहें बेड़ा पार सुगना।।

राम-राम भील राजा रोज गोहरावें
कहियो त अइहें प्रभु आसरा लगावें
अइलें, संगवा में ले ले परिवार सुगना
मोर रामजी लगइहें बेड़ा पार सुगना।।

राम के चरनिया में नेहिया लगाईं
चाहे गोहराईं, चाहे भजन सुनाईं
हंउए उनहीं के सब संसार सुगना
मोर रामजी लगइहें बेड़ा पार सुगना।।

राम राम सुगना

जिनगी के पिंजड़ा में मंगल मनावे
राम राम सुगना, भोरे भोरे गोहरावे
राम राम सुगना ! भोरे भोरे ---!!

जनमे से राम राम सुगना पुकारे
राम राम करते उमिरिया गुजारे
मनवे में राम राम, राम के बोलावे
राम राम सुगना ! भोर भोरे --- !!

राम हऊंए अतमा आ राम परमातमा
साधु-सनेयासी चाहे मुनि भा महतमा
गेयानी-बिगेयानी लोग अरथ लगावे
राम राम सुगना ! भोरे भोरे ----!!

लऊके ना पीछे केहू, नाहीं केहू आगे
सकल जहान मोरा राम राम लागे
अब केहू हमरा के जनि भरमावे
राम राम सुगना ! भोरे भोरे ----!!

मन रे तें प्रभु के गुन गाव !

मन रे तें प्रभु के गुन गाव !

स्वारथ के सभ साथी-संगी
जिनगी इन्द्रधनुष बहुरंगी
पल-पल बीत रहल रे पगले !
अबहूँ से कर चाव !

सूखी सुख के चिन्ता से तन
के ले जाई लादि अतुल धन
खाली हाथ सभे चल जाई
रंक रही भा राव !

जोड़ू दीनबन्धु से नाता
उहे शांति-सुख सभ के दाता
शरणागत के अपनावेलें
उनकर सरल सुभाव !

जपले नाम राम के पावन
दर्शन करले छवि मन-भावन
डूबि रहल बा भव-सागर में
डगमग डोलत नाव !

राम कवितावली

सौरभ पाण्डेय

दिन बहुराइल बा अब जाके

दिन बहुराइल बा अब जाके
सदियन के ऊँघी टूटल बा
चमक उठल बा मन मरुआइल
मनसायन जे घड़ी बनल बा

सूरुज के ना आवल लउके
बेरा डूबल कहाँ बुझाओ
आन्ही-पानी, ओला-पाला
केकर ओ'रहन कवन दियाओ

अधमुअला अस रहे अजोध्या
रोआँ-रोआँ प्रान बहल बा

पीढ़ी ना पीढ़ियन के चिंता
बनल फाँस हिरदै में जामल
ताकत टुक-टुक बरिसन बीतल
रहल करेजा बाकिर तातल

गत्ते-गत्ते, रेसे-रेसे
लोक राग के तान चढ़ल बा

मन में, तन में, जन में, कन में
राम बिरल बन व्यापल बाड़े
जे बन्हले मरजादा जग के
ऊ दसरथसुत जनमल बाड़े

इचकी भर ई बात भुलाके
निहतनियन के तींत बढ़ल बा

तन से मनई मन से राछछ
उतपाती अतताई पागल
मन्दिर भर ना अहसासो के
तुरला थुरला में बस लागल

जिद-जबरी के घटा-टोप बलु
पाँच सदी के बाद छँटल बा

राम कवितावली

संगीत सुभाष

सवैया

कोल- किरात के, भील- निषाद के,
गिद्ध के गोद उठाइत के?
साँच के, न्याय के, नेम के, छेम के,
प्रेम के रत्न लुटाइत के?
भाई के, माई के, बाप, गुरू,
मितवा के सनेह सजाइत के?
राम जो ना अइतें ए धरा पर त
मरजाद जोगाइत के?

लोक मधे व्यवहार विचार सुनीति विनीति सिखाइत के?
दंभ भरे दशकंधर के कुविचार कुकर्म बताइत के?
मात-पिता गुरु-बंधु बदे शुचि भाव सदा बतलाइत के?
राम लला अइतें न धरा पर ई मरजाद जुगाइत के?

रोस के आगि प नेह के शीतल नीर गिराइ बुताइत के?
न्यायतुला पर एक समान महीपति रंक चढ़ाइत के?
घोर बिपत्ति मिले बड़ राज रहे निरलिप्त कहाइत के?
राम लला अइतें न धरा पर ई मरजाद जुगाइत के?

राज तजी छनहीं भर में अनचीन्हल जंगल जाइत के?
बंधु परे जब संकट में धरि अंकन लोर बहाइत के?
राहि निसाचर मारि उजारत वास अलोत पठाइत के?
राम लला अइतें न धरा पर ई मरजाद जुगाइत के?

केवट के भरि के निज अंक अभिन्न सखा
अपनाइत के?
ढारत लोर अपार उठावत गिद्ध के तात बताइत के?
आसन डासत भीलनि के घर बेर परोसल खाइत के?
राम लला अइतें न धरा पर ई मरजाद जुगाइत के?

देश प सत्य प न्याय प संकट देखत बान उठाइत के?
सिंधु महा शतजोजन ऊपर सेतु महान बन्हाइत के?
नीति सुधर्म के दंड गिराइ संहारि दशानन आइत के?
राम लला अइतें न धरा पर ई मरजाद जुगाइत के?

उत्तर दक्खिन पूरुब पच्छिम
औधपुरी लइ आइत के?
एकहिं गीत करोड़न कंठ से
के सुनवाइत, गाइत के?
बंदन जोग ह भारत के भुँइ
विश्व के बोध कराइत के?
रामलला अइतें न धरा पर
प्रेम के पाठ पढ़ाइत के?

तापस- जज्ञ - बिधंसक दानव
जोजन कोटि भगाइत के?
शापित नारि बना जगवंदित
लोक मधे पुजवाइत के?
शंकर के धनु तूरि विदेह के
शोक- समुद्र सुखाइत के?
रामलला अइतें न धरा पर
शौर्य के मोल बताइत के?

सब लोग करे चरचा इहवाँ, पग धूरि जरूर कमाल दिखाई।
छुइ जाइ जो पाथर पाँवन से, तुरते अति सुन्नर नारि बनाई।
सब सोचि बिचारि कहीं तहसे, नइया कइसे सब जानि गँवाई।
एह घाट प नाव लगी तबहीं, जब कोमल पंकज पाँव धुवाई।

दीनन के प्रतिपालक राघव भक्तन हेतु सदा हितकारी।
नेह लुटावत बंधु सखा पर मात पिता गुरुदेव पुजारी।
पालन में मरजाद भले छुटि जन्मभुई धन धाम अटारी।
शोक बिखाद किरोध कलेस न राम भजऽ मन संशय टारी।

द्वार नरेश लुटावत सम्पति ढोल मँजीर गहागह बाजे।
आँगन में पुरनारि बिठाइ के रानि गवावत सोहर साजे।
सूरुज थोरिक तेज घटाइ के झाँकत रूप निहारत गाजे।
आजु ले सून रहे नगरी अब पालन लालन राम बिराजे।

राम कवितावली

माधव पाण्डेय निर्मल

अवधपुरी के राजा राम

परमात्मा अवतारी भइलन
अवधपुरी के राजाराम।
जग में पुरुषोत्तम कहलइलन
अवधपुरी के राजाराम।

घटघटवासी रमन करे जे
कनकन में हर प्रानी में,
धरती-अम्बर, ताल तलैया
नदी समुंदर पानी में,
न्याय-धरम के रक्षा कइलन
अवधपुरी के राजाराम।

राक्षसगन के अत्याचार-अनेत
बढ़ल जब धरती पर,
साधु-संत-सज्जन लोगन के
जीअल दूभर धरती पर,
तब त्रेता में परगट भइलन
अवधपुरी के राजाराम।

बक्सर में मारीच-सुबाहू
असुरन के आतंक बढ़ल,
विश्वामित्र मुनी के रक्षा कइलन
यग्य भइल सफल,
अततायिन के मार गिरइलन
अवधपुरी के सीताराम।

जनकनंदिनी सीता मइया
बनली संगी जीवन के,
तपसी बन जंगल में गइले
सुख छोड़ले सिंहासन के,
बनवासिन के गले लगइलन
अवधपुरी के सीताराम।

बलशाली रावन के मरले
रामराज्य के भइल उदय,
असुरशक्ति के अंत साथ ही
देवशक्ति के भइल उदय,
धरती के संताप मिटइलन
अवधपुरी के राजाराम।

पाँच शताब्दी तक कलियुग में
फिर से राक्षस अइले,
धाम अयोध्या अपने घर से
राम भगावल गइले,
किसिम-किसिम लीला रचवइलन
अवधपुरी के राजाराम।

सत के विजय सदा भइल बा
असत हमेशा हारल बा,
सियाराम के भव्य भवन
अयोध्या में पधारल बा,
फिर से आपन महल में अइलन
अवधपुरी के सीताराम।

रामभक्त हिन्दू सब बोलस
रघुपति राघव राजाराम,
कोटि-कोटि जन भजन कर रहल,
श्रीराम जय राम जयजय राम,
निर्मल भोजपुरी में गवलन
अवधपुरी के सीताराम।

श्रीराम जय राम जयजय राम।
जय सियाराम जयजय श्रीराम।

अयोध्या के राम मंदिर

मोर देखल सपनवां साकार हो गइल,
राम जी क भवनवां शानदार हो गइल,
मंदिर लागे अस कैलाश पर्वत नियर-
जइसे त्रेतायुग के अवतार हो गइल॥

अयोध्या अब सरग के समान हो गइल,
जन-हित में सबकर कल्यान हो गइल,
आके सरजू में डुबकी लगइहऽ पहिले-
फिर राम जी क दर्शन आसान हो गइल॥

ई मंदिर दुनिया में बेजोड़ हो गइल,
प्रभू दर्शन बदे भक्तन में होड़ हो गइल,
जबसे आठवां अजुबा राम मंदिर बनल-
तबसे भक्तन क संख्या करोड़ हो गइल॥

जेहर देखऽ ओहर धरती राममय हो गइल,
देश खातिर राम मंदिर गरिमामय हो गइल,
हर मजहब से आवे भक्त दर्शन के बदे-
जइसे राम जी से सबसे बिलय हो गइल॥

जब भी अइबऽ अयोध्या सजावल पइबऽ,
हर मंदिर पर दियना जरावल पइबऽ,
जहिया अयोध्या रहल होई राम के समय-
ओसे कम नाही आजो निभावल पइबऽ॥

राम कवितावली

रामप्रसाद साह, नेपाल

सीता हरण, जटायु मरण

बिरहा :--

घायल जटायु के पाँखवा कटल हो बांटे
भूँइया जपस राम राम ।
ओहि रहिया से श्रीरामजी घुमत अइले
लेई लिहले गोंदिया थाम।।

प्रभु से मिलन होखे एके गो आसरा रहे
अब तेजी देबो ई परान ।
दखिन राहे सिया के अबे हरन कइल
रावन का बड़ा अभिमान।।

लड़त लड़त हैरान कइनी ओकरा के
काटी दिहल उड़त पाँख।
जेतना सकनी सीता माँ के मदत कइनी
परवाह ना जान के राख।।

खबरी जनावेला परान के रोकले बानी
दरस के बाद ना परान।
भगति ममता श्रीरामजी से बनल रहो
दुनिया से पाप नोकसान।।

दोहा :---
भगति प्रेम के माङ वर, एवमस्तु करी राम ।
गिद्ध मिले भगवान में, लिहले तब विश्राम ।।

* सुग्रीव के बानर सेना चारों दिशा में भेजल *
बिरहा :--
बानर का पैरवा में पाँख लागी हो गइले
पूरन रिसि के वरदान ।
उड़ी के आकासवा पता लगाई हो लिहले
हरि के करत गुनगान।।

* अशोक वाटिका में सीता- त्रिजटा संवाद *
बिरहा :---
बड़ा समुझावे मइआ नाहीं धीरिज धरे
ढारेली नयनावा से लोर ।
आजु ले ना आवे कोई अजोधा नगरिया से
सुधि ना लेलन प्रभु मोर ।।

* त्रिजटा के सीताजी के समुझावल*

बिरहाः---
त्रिजटा घरे गइलिन लाख समझाई के
सीताजी का मनवा में सोंच।
मिले नाही अगिया चितवा बनाई कइसे
विपत्ति के लागल बा खोंच ।।

दोहा :---
गिरल मुद्रिक अशोक से, निरखी सोंच विचार ।
माङल आगी जे रहे , पावक प्रभो अपार ।।
हवे मुद्रि श्रीराम के, भइल बा चमत्कार ।
चूम नयन से देखली, उपर मोर रखवार ।।
आई प्रकटे कपि तहाँ , सिय के नाई सीस ।
कुशल नेह प्रभु भेजही, हवे मुद्रि आसीस ।।

* हनुमानजी द्वारा लंका दहन *

बिरहा :--
जरि गइले लंका लवटि चले हनुमंता
खुसी भइले कपि लोग ।
सीता के सुधि पाइके राम हर्सित भइले
ले आवेला होता उतजोग ।।
दोहाः---
जबले सीता ना लवटि, मन में ना विश्राम ।
बानर सेना बा बनल, लंका के पेयाम।।

* मन्दोदरी द्वारा पति रावन के समुझावल*

बिरहा :--
गोड़ लागी पँइया परी अउरो निहोरवा
जनी करी राम से विरोध ।
एक दिन श्रीपति क्रोधित अगिन होखब
केहू से ना होई अवरोध ।।

पति के समुझावल कुछो ना फरक परे
रनिया झखेली दिनरात ।
मन अनुमान करे देव विपरित बाड़े
सामीजी हो जइहें बेहाथ।।

* विभिसनजी भगवान राम के सरन में अइले *

दोहाः---
अहो भाग्य बाटे हमर, सरनागत हो राम ।
सेवे जेके शिव पिता,भजल करे निष्काम।।
***

असरदार बाटे नयना रामजी के हो

असरदार बाटे नयना।
रामजी हो असरदार बाटे नैना,
रामजी हो असरदर बाटे नैना।

पलना पर ललना के मइया झुलावे।
एको छन हटला पर मिले नाही चयना।
असरदार बाटे नयना रामजी के हो।

पाव पयजेब में लागल बा घुघरू।
मोतियन के माला गले लटकेना।
असरदार वाटे नयना रामजी के हो।

काली काली जुलफी बा, केश सब उलझी बा।
ठुमुक ठुमुक चाल चले बोले मृदुबयना।
असरदार बाटे नयना रामजी के हो।

अँखिया में अइसन भरल बा जादू।
देखला पर हटलो हटवले हटेना।
असरदार बाटे नयना रामजी के हो।

लाल लाल होठ, सुगना के लाजवे।
भारती के आरती चरण में लागेना।
असरदार बाटे नयना रामजी के हो।

राम कवितावली

विष्णुदेव तिवारी

राम के आवहीं के बा

अच्छा
अब
समिलाते
गीत गावल जाउ
गाँव के चउगठत
बिजुरी के तार
बाँस के खंभा से झुला के
एह तरी बान्हल जाउ कि
ओपर चुकचुकिया बवल बरे
त लागे रति के बियाह के
सजावट ह।

सजावट
सभ्य होखे के
सबसे बड़की चिन्हासी ह
रतजगा करत
गाल बजावत
गोल में सबसे ऊँच टाँसी मारे वाला
सबसे बड़ संस्कृति रक्षक ह
बरगद के फेंड़ के खोंढ़रा में
महीना में तिरपन बेर केंचुल छोड़े वाला
फनियर के आँख
चुकचुकिए बवल अस
भाक-भुक करेला
जे दोसरा के देख-देख अनसोहाते जरेला
ऊ सबसे बड़
देशभक्त ह।

कई गो परिभाषा
अब बदले जा रहल बा
कुछ लोग भारत के परिभाषा
प्रवास में बदलत बा
खाता एहिजा
ओकात बा दक्षपुरी में
कुक्कुर लोग खुश बा।

अँगरेजी बोल के
हीरा के झिंकिड़ा
नइखे बनावल जा सकत
केंकड़ा केंकड़े रही
ओकरा के
समुन्दर के
फेफड़ा नइखे बनावल जा सकत
आजु से
अबे से
आगे खातिर ई जान लीं
क्रिकेट टीम जब हारे
तब कबो मत कहब कि
भारत हार गइल।

हवा में सल्फ्यूरिक एसिड के धुआँ
भरल बा
जनात बा
कर्मनाशा में फेर
त्रिशंकु के लार झरल बा
आज ना त काल्हु
कवनो विश्वामित्र आवहीं बोलत बाड़े
आ जो विश्वामित्र अइहें
त राम के आवहीं के बा
चाहे अयोध्या में आवसु
चाहे बगसर में।

राम कवितावली

शशि 'प्रेमदेव'

मंगलम् ! मंगलम् !
सुंदरम् ! सुंदरम् !

देखि के ई नजारा
मगन बा हृदय !
मंगलम् ! मंगलम् ! सुंदरम् ! सुंदरम् !
हो गइल देश आपन
पुनः राममय !!
मंगलम् ! मंगलम् ! सुंदरम् ! सुंदरम् !

गोड़ बैरिन क' आखिर उखरिए गइल !
आज धाजा धरम के फहरिए गइल !
बाद सदियन सनातन भइल बा अभय !!
मंगलम् ! मंगलम् ! सुंदरम् ! सुंदरम् ! हो गइल देश ...

साँच पितरन् क' सपना भइल् जाके अब !
सारथक हो गइल् त्याग-बलिदान सब !
नाथ सुनि लिहले भक्तन क' अनुनय-विनय !!
मंगलम् ! मंगलम् ! सुंदरम् ! सुंदरम् ! हो गइल देश ...

काम बाकिर अधूरे कहाई , गुरू !
'राम के राज' तबले ना आई, गुरू !
जबले जन-जन में रावन क' होई ना क्षय !!
मंगलम् ! मंगलम् ! सुंदरम् ! सुंदरम् ! हो गइल देश ...

संजय मिश्र 'संजय'

आजु मंगल मनइबो अवध नगरी

आजु मंगल मनइबो अवध नगरी।
झूमि झूमि अगरइबो अवध नगरी।

होई अइसन अँजोर पसरी जोत चहुँओर,
घर–घर दियना जरइबो अवध नगरी।

भीड़ रही घनघोर लउकी नाहीं ओर छोर,
धर्म–ध्वजा फहरइबो अवध नगरी।

सहिके दुखवा कठोर प्रभु अइनीं वन छोड़,
पा के दरस अघइबो अवध नगरी।

होई मनवा विभोर लखि अवध किशोर,
लोर हरखि बहइबो अवध नगरी।

पाप कटी सब मोर छूटी नाहीं कवनो कोर,
जा के सरजू नहइबो अवध नगरी।

जोरि राम जी से डोर 'संजय' दसों नोंह जोर,
राम राम गोहरइबो अवध नगरी।

राम कवितावली

राजनाथ सिंह "राकेश"

चर्चा बा गली गली प्रभु श्री राम के

भजन पूजन हवन होता
सरयू में लागत गोता
राम के बिना दुनिया ना कवनो काम के
चर्चा बा गली गली----------

आवत उपहार बाटे
सभे के सत्कार बाटे
जय जय श्री राम भावे आठो जाम के
चर्चा बा गली गली----------

वन्दन रोज होता
राम राम करे तोता
दर्शन प्रभु जी के मिले सुबह शाम के
चर्चा बा गली गली----------

मणी से महल सजल
होत बाटे गीत गजल
पुण्य लोग लुटे अवध में चारो धाम के
चर्चा बा गली गली----------

सोना चानी बा जड़ल
धनुषा पर चित्र गढ़ल
पिताम्बर संग सोहे जनकपुरी धाम के
चर्चा बा गली गली----------

राम राज्य आगइल
भगवा रंग छा गइल
रावण के टूटल नशा पियलका जाम के
चर्चा बा गली गली----------

राम कवितावली

चंदेश्वर परवाना

महिनवाँ चड़त रहे

ए रामा राम जी जनमलें अजोधिया,
महिनवाँ चड़त रहे।
ए रामा घरे-घरे बाजत बधइया,
महिनवाँ चड़त रहे।

राजा दसरथ भवन मझारी,
अवतारी सिसु के किलकारी,
अन-धन लुटावेली मइया।
महिनवाँ चड़त रहे।

जग में जोति पसरि गै भारी,
मंगल सोहर गावें नारी,
दमके महलिया मड़इया।
महिनवाँ चड़त रहे।

ग्यानी जन गुन-गान उचारें,
देव लोक से देव निहारें,
हरसेले तिथिया समइया।
महिनवाँ चड़त रहे।

चंद्रेश्वर

रावन-राम के कथा

क क गो रावन
सगरो लउकत
डेग-डेग प
चौक -चौराहा प
बाजार में
मैदान में खेल के
खेत-खलिहान प
लगवले दीठि
रावन क क गो

सड़क प
संसद में
विधान सभा में

मठ- मंदिर
मस्ज़िद में
गिरिजाघर में

एक-एक वन के
उजाड़े में लागल
ई दशानन
क क गो दशानन

सब जगह देखल जा सकेला
बस, रेलगाड़ी, हवाई आ
पानी के जहाजन प सवार
करत सफर देश -दुनिया में

त्रिलोक में लिहले चेहरा प
अजब-गजब मुस्कान

घर-घर में ...हर मन में
बसल ई दशमुख
क क गो दशमुख

राम आपन -आपन

अलग-अलग द्वीपन में
भटकत- छिछियात राम

निर्वासित आ विस्थापित राम
घर-घर से
वन-वन से
हर मन से
बाहर होत राम

कइसन चलल आन्ही-बयार
कि उठल बवंडर
कि लागल आगि

हाय-हाय रावन
कि हे राम।

दोहा

सांस सांस ह राम के, कण-कण बाड़े राम।
राम नाम जे रमि गइल, जीवन सुफल,सुकाम।।

अवधपुरी ह आतमा, मोहित बा हर प्रान।
दरशन से संसय मिटे, करे भक्त गुणगान।।

कौशल्या जस माता जेकर, दशरथ जइसन तात।
सूर्य वंश के रोशनी, रघुकुल राम प्रभात।।

असुर विनासक राम हवे, जग के पालक राम।
कृपा राम के होते बनिहें, सभके बिगड़ल काम।।

राम नाम संजीवनी, हरेले सभके रोग।
मन से,वचन से,कर्म से, मुक्त रहे सभ लोग।।

राम नाम अमृत हवे, राम धर्म अवतार।
राम शरण जे आ गइल, ओकर बेड़ा पार।।

त्रेता में अवतार ह, कलयुग तक गुणगान।
रघुकुल भूषण हे प्रभु, तोहसे देश के मान।।

पांच शतक संघर्ष के,आजु सफल परिणाम।
अवध अलौकिक फेर बनल, अइले राजा राम।।

राम नाम बस सत्य ह, राम नाम हे राम।
राम बिना सद्गति कहां, भजहुं राम निष्काम।।

राम कवितावली

कनक किशोर

शुभ कोहबर

राम विराजत हिया में मोरा
हम त सिया सुकुवारी
हाथ में लेके हम वरमाला
राम - राम पुकारी
मिलन के राति
आँखिन बा खोजत
शुभ कोहबर।

तरसत नयन मिलन के सखी
रचिके मेंहदी हाथे
नीक न लागे जग के ठिठोली
ना जग जाई साथे
ठिठकीं जनि अब
आईं राम दुलारे
शुभ कोहबर।

सेज सजाई बइठल सेज पर
सुनर सिया सुकुवारी
आईं हटाईं घूंघट सिया के
पकड़ीं भरि अँकवारी
महकी प्रेम रस
सिया उर अँगना
शुभ कोहबर।

सिया राम मिली एक हो जाई
भागि पराई जुदाई
कनक भवन गुलजार होई
हिया में बसी खुदाई
जग जरि जाई
देखि मिलन के
शुभ कोहबर।

नईहर के दिन चार

जनि अगरा सखी बाबा दुआरे
छोड़े के रहऽ तइयार
माई के हऊ आँखि के पुतरिया
बाबू के हऊ दुलार
जनि भूला साँच बाति ह
ससुरे ह घर बार
नईहर के दिन चार।

बाबा के चाहत राम जस दुल्हा
धिया तूहूँ सिया सुकुवार
माई कहे बेटी रखिह इज्जतिया
दूनो कुल दिह तूहूँ तार
बाति के मरम बूझऽ
ससुरे तोहार घर
नईहर के दिन चार।

नईहर छूटी जानल बा बतिया
राम बनिहें दुल्हा तोहार
रोअल धोअल काम ना आई
दुअरा प आइल कहार
जग ई नईहर
ससुरा राम घर
नईहर के दिन चार।

जनि बटोर अन्न धन सोनवा
माहुर ई संसार
राम संग नाता जोड़ऽ धिया तू
हो जाई बेड़ा पार
सांचहूँ धिया मोरि
राम तोहार बर
नईहर के दिन चार।

दिनेश पाण्डेय

अनहद राग

रामजी!
अवध अनन्द भरे।

कवन टोनही के दीठिऔले,
सुर्ख भइल मटिहानी।
कवन पुरंधर रोकत रहले,
सरजुग जी के पानी।
जुग-जुग से पाथर हियरा में,
तल-सोती ससरे।

रामजी!
गंगा-जमुन ढरे।

होखी रामराज अजुधा में,
जन-जन मन मुसुकाई।
बंचक कुटिल अधम जड़मूरख,
जइहनि ओत पराई।
तिरिया-जिद्द सनक-सुपनख में,
केहू नाहिं जरे।

रामजी!
हरिन अचिंत चरे।

जहाँ दूरि ले जाय नजर अब,
दिखे कनेर फुलाइल।
साँवर-नील फलक छाँहीं पर,
पीयर रंग पुताइल।
के रोके आवेग हिया के,
सइ सागर उमड़े।

रामजी!
अवध अनन्द भरे।

अवध में बाजे बधाई

लिहले जनम रघुराई, अवध में बाजे बधाई ।।

सुर नर मुनि सबकर ललचेला मनवा,
दौड़ि दौड़ि आइल सब दशरथ अँगनवा,
आजु सबकर हियरा जुड़ाई ..अवध में।।

काग भुशुंडि जी बनि गइलन चेला,
भोले बाबा गुरु बन लगा दिहलन मेला,
हथवा देखावस आके माई ..अवध में।।

मोतियन क माला लुटावें दशरथ राजा,
ड्योढ़ी पर बाजे बधाई क बाजा,
ठुमुक ठुमुक नाचस कपिराई .. अवध में।।

सुरुज क छाती धधाके भइल दूना,
एक माह रथ रूकल जानल केहू ना,
बहे मद्धिम हवा चउवाई ... अवध में ।।

राम कवितावली

ओम प्रकाश पाण्डेय

राम से जाई धधा लिपटें

एक दिन सांझि के सरजू किनारे,
सुनअ टहरत रहलन चारो भाई।
भरत कहलें हे भइया सुनअ,
एकठो बतिया तनीं देबअ बताई।।
माइय कैकेई मन्थरा मीलि,
दुनों बन राहि तअ दिहली देखाई।
सांच बतावअ कि राज ही धरम,
में राजद्रोह ई हउवें की नांईं।।

उनके कुचालि से भाविय राजा,
गये रानिय संग घर बहिराई।
चौउदह बरस एबन ओबन,
तूहीं कहअ कि भटकलें की नांई।।
नां दुख झेललें पिता महराज,
गये सरगे ओरियां रहिआई।
राज धरम अनुसार कहअ,
मृत्यु दंड दिआइल कांहे हो नाईं।।

भरत के बतिया सुनि राम,
निरखि तिरछे कहलें मुसुकाई।
धर्मपरायण चरित्रवान,
अगर कुल जनमल पूत हे भाई।।
कअइय पीढ़िय पितरन के,
सगरो पपवा सुनअ जालें नसाई।
जवनें कोंखियां तोहरे जस पूत,
कहअ तूहीं कइसेके दंड दिआई।।

भरत के नाईं संका मिटल,
कहलें इते मोंह हवें बड़ भाई।
राज के दंड बिधान जवन होला,
मोंह से मुक्त ऊ देला दिखाई।।
अनुज नाई अजोध्या के परजा,
बा पूछत साफ देबअ बतलाई।
राजा के नींयर उत्तर दअ,
काहें माई के दंड तूं देहलअ हो नाई।।

भरत के बतिया सुनि के,
छन भर सिरि राम त गयिलें चुपाई।
कहलें फिर एक ही भूल के दंड,
कठोर बड़ी भोगलसि मोर माई।।
रहल जे जहवां अपने,
जगहीं निज करतब रहें निभाई।
सांच कहीं तिल तिल छन,
ऊते मरत समय देहली बिताई।।

एक ही भूल के कारन मांगि के,
सेनुर उनकर गयिल धोवाई।
चारिगो पूत सुनअ उन कर,
उनके लगवां से त गयिलें हेराई।।
राजा के रानी रहलि सगरो सुख,
साधन देखिलअ गयिलि भुलाई।
अपराधिनी बोध से आजु तलक,
सुनिलअ मुक्ती उते पवलसि नाई।।

बीति गयिल बनवास सुनअ,
गयिले नगर खूसी लहर छितिराई।
घर के लोगवन केना चेहरन पर,
लअ निहारि गइल मुस्कान छिटाई।।
उन कर चेहरा निहारिलअ,
देखति केहू के नाई ऊ आंखि मिलाई।
तूहीं बतावअ की कवनों ही राजा,
कठोर का एसे सजा देई पाई।।

हीया के पीर भरत सुनिलअ,
कवनें बिधि हम तुहके देखलाई।
कारन हम बनली जवनें कर,
झेलति बा दुखवा मोर माई।।
राम के नयनन कोर में लोर के,
छीपलि बुन्न परत बा दिखाई।
भरत सत्रुघन लखन के,
जिभिया सटली तरुआ मेना जाई।।

माई के भूल कहल अपराध,
सुनअ नांई नींक है भरत भाई।
मानि पिता के बचनि सुनिलअ,
हम ते बनवां गयिलीं रहिआई।।
बनवासिय जीवन भरत लखन,
भाई के नेंह में देहलें बिताई।
भाई में भाई के प्रेम हअ का,
बन गइले सुनअ जग गइल छिटाई।।

नभ सूरुज चान रही जबले,
जबले रही गंगा में निरमल पानी।।
भाइन में चाहीं कयिसन प्रेम,
ई गूंजी धरा अनमोल कहानी।।
भरत सूनि चुपा गइलें,
निकरल नाई मूंह से कवनों बा बानीं।
राम से जाई धधा लिपटें,
नयना से झरे झर झर झर पानीं ।।

डॉ.रामरक्षा मिश्र विमल

बेरि-बेरि सीताराम सीताराम कहीं जा

बेरि-बेरि सीताराम सीताराम कहीं जा
जसहीं उहाँका राखीं ओही तरे रहीं जा।

तनिके बिपतिया में काहें घबड़ाईले
अँखिया के मोतिया बेपइसे लुटाईले
दुखवो ह रामे जी के खुश होके सहीं जा।

अन-धन बाले घर भरले जुड़इलीं ना
कतनो मिलल सुख तबहूँ अघइलीं ना
मन के मनाई आउर मउजे में रहीं जा।

बने-बने घूमि-घूमि शीत-घाम सहलीं
असुरन से धरती के रामजी उबरलीं
दियवा जराके अङना जगमग करीं जा।

डॉ. निखिल कांत

मुस्कइहें राम

आसीन भव्य नव्य मंदिर में जग प राज चलइहें राम
रामराज्य के केन्द्र अयोध्या नगरी फेरू बनइहें राम

रही ना कौनो अंखियन में आसूं दुख दूर भगइहें राम
मंद मंद हमनी सभ के खुश देख देख मुस्कइहें राम

हनुमत जइसन भक्तन के त सीना में बस जइहें राम
केवट राज निषाद से यारी याद करत इठलइहें राम

जगमग सजल अयोध्या नगरी दुनिया के दिखलइहें राम
रोज दशहरा रोज दीवाली सभ के साथ मनइहें राम

धरती प सभ एक बराबर राजा बन समझइहें राम
जूठ बेर शबरी के हाथों फेरू से सांचों खइहें राम

बा जे अहंकार में डूबल बीच सभा लजवइहें राम
पर गरीब गुरबन के घर के इज्जत लाज बचइहें राम

चलत रहन ठुमकत ठुमकत जहाँ राजा उहें कहइहें राम
पावन जल से सरयू तट प मन भर खूब नहइहें राम

रोंआं रोआं में भक्तन के दरसन दीहें समइहें राम
वसुधा प हर लोक कुटुंब ह सभके खुदे पढ़इहें राम

जोहत बाटे बाट समूचा जग अब बोध करइहें राम
पढल-लिखल मूरुखनके भीतर ज्ञानके दीप जरइहें राम

राम कथा आनंद के पोथी घर घर में पढ़वइहें राम
उत्तम हिन्दू धरम सनातन सबके इ मनवइहें राम

राम होखे के मर्म अर्थ का सभके इ बतलइहें राम
जय श्री राम जीत के नारा ह सभसे लगवइहें राम

राम शब्द के गौरव गरिमा सबके आज बतइहें राम
मरयादा पुरुषोत्तम भा परमेश्वर भी कहलइहें राम

डॉ. प्रतिभा कुमारी पराशर

रामजी के तिलक

रामजी के चढ़ेला तिलकवा सखि हे मंगल गाई।
दशरथ के चार गो ललनवा, सखि हे मंगल गाई।।

पान , कसैली अक्षत अरु चनन।
पीतल,काँसा चाँनी के बरतन।।
सोना के चढ़ेलवा चयेनवा, सखि हे मंगल गाई।
रामजी .....

सीरे मुकुट काने कुण्डल सोभे।
अँखिया में कजरा मनवा के लोभे।।
गलवा में बैजन्ती हारवा, सखि मंगल गाई।
रामजी के....

एहि तिलकदेउआ के पारीं सभे गारी।
घुमेली बहिन इनकर घर-घर कुँवारी ।।
बानर जइसन बाटे इनकर मुँहवा, सखि हे मंगल गाई।

राम जी के .....

राम कवितावली

बिम्मी कुंवर

राजा राम जी पधरले

बाईस जनवरी उजियार।
नया-नया बाटे त्योहार।।
अक्षत-रोरी, टीका-चंदन, माथे कलसी
छलकवले।।
कि ऐ कुंवर चलि ना अवध नगरिया
राजा राम जी पधरले।।

होखी दिनवा मंगल गवाई,
हरसित लोगवा सकल सुहाई,
घरे-घर आग्या पेठइहे।
कि ऐ कुंवर चलि ना अवध नगरिया
राजा राम जी पधरले।

अंगना लीपाई जी, चउका पुराई।
बेकल मनवा! रचि-रचि काज निपटाई,
अंग-बसन, सोना-गहना अउर
मेवा-मिठाई गठिअवले।।
कि ऐ कुंवर चलि ना अवध नगरिया
राजा राम जी पधरले।

पान सई बरिस से छछनत करेजा के आस पूजाई,
सपना रहे जवन हर सनातनी के उ पूरा हो जाई,
अयोध्या के बसिया मन के उछाह सम्हरले।
कि ऐ कुंवर चलि ना अवध नगरिया
राजा राम जी पधरले।

छूटी मय बाधा जे सियाराम गोहराई,
मिली बैकुंठ जे राम भजन गाई,
अयोध्या के लोग बड़भागी दसरथसुत के नितदिन
चरण पखरिहे।
कि ऐ कुंवर चलि ना अवध नगरिया
राजा राम जी पधरले।

के ना चाही राम जी लेखा पूत!
सनातनी के रउरा सच्चा दूत,
कइसन अनुपम छन उ होखी! देवता लोग
अकुलइले।
कि ऐ कुंवर चलि ना अवध नगरिया
राजा राम जी पधरले।

अवधपुर बाजै बधाई

अइहैं महल रघुराई, अवधपुर बाजै बधाई
भगतन क मनसा पुजाई अवधपुर बाजै बधाई।

साधु संत सब मंगल गावैं
सरजू के धारा में गोता लगावैं
मोदी करैं अगुवाई, अवधपुर बाजै बधाई।

कन्हियां धनुहिया मुकुट सिर साजै
सिया सुकुमारी क छागल बाजै
सथवां लखन छोट भाई, अवधपुर बाजै बधाई।

सोने कलसवा गंगा जल पानी
चन्दन चउकी के का हम बखानी
रचि रचि चउका पुराई, अवधपुर बाजै बधाई।

घर घर में दीप जरी, आई खुसहाली
भारत में आज फिर होई दिवाली
धरती क हिया हुलसाई अवधपुर बाजै बधाई।

हमरे रमइया बहुत दुख सहलैं
महला दुमहला ना तम्बू में रहलैं
अब ना जुलुम ई सहाई, अवधपुर बाजै बधाई।

अवध में बाजै बजनवां हो रामा

अवध में बाजै बजनवां हो रामा
जनमे ललनवां।।

राजा दशरथ जी क ऊंची पगड़िया
खुस हो के झूमै सखी सगरी नगरिया
रघुकुल करत गुमनवां हो रामा, जनमे ललनवां।

गावै बधाइया केहू गावै सोहरवा
जगमग होला सखी घरवा दुअरवा
झुनझुन बाजै झुनझुनवां हो रामा, जनमे ललनवां।

माता कौसिला देवी देवता मनावैं
माता सुमित्रा आंखी कजरा लगावैं
केकई झुलावैं पलनवां हो रामा, जनमे ललनवां।

केहू चाहै अनधन केहू चाहै सोनवां
केहू के जड़ाऊ हार केहू के कंगनवां
केहू मांगै बस दरसनवां हो रामा, जनमे ललनवां।।

पार्वती देवी "गौरा"

सोहर

धनि धनि चैत महिनवा के, सुघर समइया न हो
रामा एही मास जनमें श्रीराम, महलिया उठे सोहर हो।

माता कौशल्या, पिता दशरथ गुरु जी बशिष्ठ हवें हो
रामा धनि धनि अवधपुर लोग, खुशी चहुं ओर न हो।

राजा लुटावें अन्न-धनवा त माता रानी कंगनवा न हो
रामा केकई लुटावें मणि हार त, अवध निहाल भइलें हो।

माता सब लेली बलइया त, पिताजी गद-गद भइलें हो
रामा धनि-धनि भागि हमार त हरि बाल रूप अइले हो।

चइत महीना अगरइलें कि भागि बड़ हमार भइलें हो
रामा परम ब्रह्म लिहलें अवतार त हमरे ही माह न हो।

देवगण अकाशे से हाथ जोरि, फूलवा बरसावेंलें हो
रामा गौरा जी करें जयकार त राम जी उद्धार करिहें हो।

बन से घर अइनी रघुराई

बन से घर अइनी रघुराई,
घर घर बाजे लगल बधाई।

भरत मिलन करी गोड़ धोअनि,
भईया के गरे लगवले।
आईं राज हई आपन लिहिं,
अपने मन के बात बतवले।
परजा सङ्ग भूल भईल होखे,
मोहे माफ करबि ए भाई।
बन से घर अइनी रघुराई ...

जानकी अपना मन के बात,
माई कौशिल्या से बतीयवनी।
मांडवी, उर्मिला सुसुकी, सुसुकी
सीता जी के गरे लगवली।
देखते राम, सीता, लक्ष्मण के
सेवकन मंद-मंद मुस्काई।
बन से घर अइनी रघुराई ...

वेद,वेदांत, ब्राम्हण रहुई,
राम राज तिलक गद्दी अइले।
तीनों लोक प्रजा, ऋषि सनमुख,
गुरु वशिष्ठ मुकुट शिर धइले।
देव, ऋषि, गुरु, कुल आशीष,
अयोध्या हर्षित भये भाई।
बन से घर अइनी रघुराई ...

राम जी के करी ल भजनवाँ

राम जी के करी ल भजनवाँ
आपन सुफल जनमवाँ
मानुष देहिया एही ला मिलल।

सुर नर मुनी सभी जतन करेला
जागेला भगिया ई जोनी मिलेला,
करी राम के धेआनवाँ
निरमल करीं मनवाँ
कि भगती में मनवाँ हो जाय शीतल।

प्रभु के नजरिया सभे पे रहेला
ऋषि मुनी उन्हें समदरसी कहेला,
परानों के परान हई
करुना के खान हई
कि सारा विश्व इन्हीं से खिलल।

गानिका गीध अजामिल तरनीं
हमहुँ त रउरे चरनियाँ मे परनीं
भवसागर उतारी पार
कृपा करीं सरकार
कि राउर कृपा बरसेला पल पल।

राउर मंदिरवा अनुपम बनल बा
त्रेता अस अवध नगरिया सजल बा,
घर घर लल्ला के बधाई
सगरो राम के दोहाई
कि सबके जियरा खुशी से खिलल।

राम कृपा से सब काम बनेला
विश्व में भारत के डंका बजेला
सुनीं व्यथित के पुकार
करीं हमरो उद्धार
कि बराबर रहीं जा हमनी निश्छल।

राजकान्ता राज

अइनी राम जी नगरिया

राम जी के सुनके खबरिया
झूमे अवध नगरिया

आवऽ सखी आवऽ,चलऽ मंगल गावऽ
ढोल झाल आऊर मंजीरा बाजावऽ
अंचरे बहारब डगरिया
अइनी राम जी नगरिया।

राम लक्षुमन संगे अइली मईया जानकी
कान्हवा पर गद्दा लेके अइले हनुमान जी
लागे ना केहू के नजरिया
अइनी राम जी नगरिया।

चंदन काठ के चौकी बनाईब
मखमल चादरिया के आसन लगाईब
पंउआ पखारब जल गागरिया
अइनी राम जी नगरिया।

कुमकुम चंदन के टीका लगाईब
ताजा ताजा फलवा के भोग लगाईब
भरी भरी सोनवा के थरिया
अइनी राम जी नगरिया।

कंचन थारी कपूर के बाती
आरती उतारी हम दिन आऊर राती
गोड़ लागी धई धई चरनिया
अइनी राम जी नगरिया।

अन धन सोनवा के नइखे जरूरत
मनवा में बसे सिया राम जी के सूरत
राजकान्ता मांगे राम के सरनिया
अइनी राम जी नगरिया।

हमरा राम जी के लागे ना नजरिया सखी

हमरा राम जी के लागे ना नजरिया सखी
उनका आँख में लगावा काजर करिया सखी

गोले गोले गाल जिनकर बड़े बड़े आँखिया
पातर पातर ओठवा ह टूसा नियम नकिया
केशिया लागे जईसे बदरिया सखी
आहे
केशिया लागे जईसे बदरिया सखी
हमरा राम जी के लागे ना नजरिया सखी

ठुमकी ठुमुकी राम चलीले अँगनवा
गूंजे किलकारी दशरथ के भवनवा
निरखेली तीन तीन महतरिया सखी
आहे
निरखेली तीन तीन महतरिया सखी'
हमरा राम जी के लागे ना नजरिया सखी

मानव तन धरी पुरुषोत्तम कहइले
गुरू विश्वामित्र संगे मिथिला में अइले
सिया जी के राम धनुधरिया सखी
आहे
सिया जी के राम धनुधरिया सखी
हमरा राम जी के लागे ना नजरिया सखी

बड़े बड़े भूप सभावा में रहले बइठल
मोछिया पर ताव देके देह रहले अईंठत
ताके लगले राम जी के ओरिया सखी
आहे
ताके लगले राम जी के ओरिया सखी
हमरा राम जी के लागे ना नजरिया सखी

सीता जी के देखी देखी मने मुस्कइले
जनक जी के ठानल प्रतिज्ञा पूरा कइले
तूरी दिहले धेनुहा छू के डोरिया सखी
आहे
तूरी दिहले धेनुहा छू के डोरिया सखी
हमरा राम जी के लागे ना नजरिया सखी

राम कवितावली

मीरा श्रीवास्तव

आज घरे मोरे रामा अइहें

कहिया से हम जोहिले बटिया
राह ताकत मोरे थकी गइले अँखिया
आज घरे मोरे रामा अइहें।

रघुवर के संग, सीता सुन्दर,
साथे अइहन लखन जी भईया।
आज घरे मोरे रामा अइहें।

अंचरा से अपने बहारिले डगरिया
फूलवा बिछाइले भर-भर अंजुरिया।
आज घरे मोरे रामा अइहें।

गाई के गोबर लिपाई दुअरिया
गजमति चउका पुराई अंगनईया ।
आज घरे मोरे रामा अइहें।

प्रेम के अंसुअन से धोआइब चरनिया
आसन बिछाईब सरधा के चदरिया।
आज घरे मोरे रामा अइहें।

जगमग करेला हमरी अटरिया
धन-धन होइहें आज सगरी नगरिया,
आज घरे मोरे रामा अइहें।

बतिया मानीं तनी

राम जी के नाम लेके, शुरू करीं काम, बतिया मानीं तनी।
असहीं हो जाई चारो धाम, बतिया मानीं तनी।

कोशिला दुलारे राम, दशरथ नन्दन।
सिया जी के सइयाँ के, रोज करीं वन्दन।
तबे मिली हियरा के, ए सखी आराम, बतिया मानीं तनी।

राम जी के नाम जइसन मंत्र नइखे दोसर।
जप-जप राम जी के, हमहूँ जइबो तर।
भटकत मनवा के डोर लीहीं थाम, बतिया मानीं तनी।

जे जन राम जी के लिखले आ भजले।
उ जन जग में ए अमर हो गइले।
कहीं त गिनाईं हम, एकयेगो नाम, बतिया मानीं तनी।

राम जी ही सत्य हईं, राम जी ही सुंदर।
राम में समाइल बाटे संवसे समुन्दर।
डुबकी लगाके खोजीं, रतन तमाम, बतिया मानीं तनी।

जिनगी के दुखवा से जब घबराई मन।
तब भजीं राम जी के, मिली-जुली सभे जन।
छांह सुख राम दींहें काटि दुख घाम, बतिया मानीं तनी।

राम कवितावली

डॉ. कादम्बिनी सिंह

अजोधा में आइल बानी ना

हम त राम जी के नेहिया में अझुराइल बानी
अजोधा में आइल बानी ना।
उनका दरसन खातिर कहिए से अकुलाइल बानी
अजोधा में आइल बानी ना।

हमरा होसे नइखे रघुवर, रहिया माटी ह की पाथर।
हम त चल दिहनीं बस लेके सरधा के फुलवा अंजुरी भर।
इहो ना देखनी की पांकी में लसराइल बानी
अजोधा में आइल बानी ना।

सुंदर होइहें रूप सोहावन,निरखत जिनगी होइहें पावन।
अइसन नीर बही अंखियन से, देखि के आज लजइहें सावन।
प्रभु के रूप-समुंदर में डूबल उतराइल बानी
अजोधा में आइल बानी ना।

अब त दे दिहीं दरसनवा, इहे कहत बाटे मनवा।
रउरे छहियां के असरा में, रहलीं भटकत बनवा-बनवा।
बाकिर आवते इंहवाँ मय दुखवा भूलाइल बानी
अजोधा में आइल बानी ना।

रामलला मंदिर में अइले हो

रामलला मंदिर में अइले हो,
हिंद बाजे बधइया।

गली गली अवध के आज सजि गइली,
महल अँटारी रंग भगवा रंगइली,
रामधुनी देश--देश छइले हो,
लोग लेला बलइया।

आवेला भेंट, दूर देश ले कलेवा,
उमड़ल शहर गाँव करे खातिर सेवा,
दीनानाथ देखि अगरइले हो,
गोड़ परे नाहीं भुंइया।

दुरजन कुमतिमन्द करेले गरद,
पापी अनाड़ीन के उठे पेटे दरद,
भगतन के भागि जागि गइले हो,
अब गुँजे शहनइया।

असरा में कतना, कई पीढ़ी मरि गइली,
पाँच सइ बरिसवा पर शुभ घड़ी अइली,
धरती माँ आज इतरइली हो,
राम भइले सहइया।

राजा राम जी हमार

झूमत बा संसार,
बिरजिहें राजमहल में
जाके राजा राम जी हमार...

बाईस जनवरी दिन बा रोपाइल,
जन जन में उत्साह बा आइल।
रघुनंदन के होखत बाटे
सगरो जयजयकार,
बिरजिहें राजमहल में
जाके राजा राम जी हमार...

देवलोक उतरी अजोध्या गीत मंगल गवाई,
आशीष मंगिहे भगत पैनाली सिसवा नवाई।
सुख संपत्ति से भर जाई,
सभकर घर दुआर,
बिरजिहें राजमहल में
जाके राजा राम जी हमार...

वीणा सिन्हा

दोहा

हरष अउर उल्लास के, ना कवनो अनुमान।
अवध पधरिहे आज जब, राम सिया हनुमान ॥

पीयर धोती बांध के, पियरे अचकन साथ।
माँगे चलले राम जी, जनक सुता के हाथ॥

बहे फगुनहट बयरिया, हिय में उठत उमंग।
अवधपुरी में राम सिय, होली खेलत संग॥

जिनके हिय में राम सिय, बारें आठों जाम।
अइसन प्रिय हनुमान के, रोम-रोम सिय राम॥

राम नाम सुमिरन करीं, देके तनि करताल।
चढ़ी नशा जब राम के, निज मन होइ निहाल॥

बोलब जय हनुमान तअ, बिगड़ल बनि सब काम।
हरलें जिनका नाम पर, आपन चित प्रभु राम॥

चलत बारें गिरत परत, रामलला चरु ओर।
पग पायलियाँ झूमके, करता भाव बिभोर ॥

बेलपतर पर राम लिख, जब चढेला शिव सीस।
राम संगे शिव से मिलल, सतत कृपा आसीष॥

एगो दूगो बरिस कहाँ, चउदह बरिस विराम।
बनवासी तप त्याग के, राजा से प्रभु राम॥

कबहूँ भइल अनहार तअ, कबहूँ भइल अनजोर।
अवधपुरी में राम के, फिर से चलता जोर॥

रामलला के साँवरि सूरति

रामलला के साँवरि सूरति, कमल नयन मनहारी।
दुधिया दाँत चमकि बिजुरी जस, मणि लागे झलकारी।।

नखि चुकि हाथ नखी चुकि धनुही, नखि नखि तीर जुझारी,
राम लखन सह भरत सतुरधन, देखि खुसी महतारी।।

भरल उछाह पिता दसरथ के, गदगद सब नर नारी,
घर आँगन गुलजार भइल अब, आइल सुख अँकवारी।।

हरषित बा सब नगर अयोध्या, झलकत महल अटारी,
राम लला के गावत महिमा, ऋषि मुनि भगत पुजारी।।

धनि धनि भागि हमरियो जागल, जाइब अवध दुवारी।
दरसन पाइबि राम लला के, देब खुशी न्यौछारी।।

निशा राय

राम नाम अति पावन

राम जी के नगरी बड़ा रे मनभावन
सुन हो साजना! राम नाम अति पावन

कहाँ बा अंगनवा जहाँ खेले चारु भइया
महल देखा दऽ जहाँ रहे तीनू मइया
दशरथ महल के धूरि
माथा पर के चंदन
सुन हो साजना!
राम नाम अति पावन

हनुमत के गढ़ कहाला हनुमान गढ़ी
केहू कहे मारुति केहू बजरंग बली
इनके कृपा से होई
राम जी के दर्शन
सुन हो साजना!
राम नाम अति पावन

राम जन्म भूमि पिया हम के देखा द
सीता रसोइया के महिमा बता द
सरयू नहान करब
करि के गठबंधन
सुन हो साजना!
राम नाम अति पावन

इहवाँ के कँण कँण में राम जी के वास बा
मनसा पुराई हमरा पूरा बिसवास बा
अमर सुहाग माँगब
करि के निवेदन
सुन हो साजना!
राम नाम अति पावन !

अनिल कुमार दूबे "अंशु"

राघव जी के स्वागत बा!

अवधपुरी के रज कण-कण में,
राघव जी के स्वागत बा!
पांच सौ बरिस के बाद धरा पर,
राघव जी के आगत बा!!

बाटे करोड़ों जन के आस्था,
राम लला के चरणन में!
अति विश्वास भरल बा भीतरी!
जन-जन के अंतरमन में!!
रामसिया के जय-जय होई,
भक्तन के मन झाँकत बा!!
राघव जी के स्वागत बा! ...

भव्य विशाल मंदिर बन जाई!
सुन्दर सुघड़ आकार होई!
सत्य सनातन, चिर पुरातन,
सभके सपन साकार होई!!
सबके हिया से मिटी वेदना,
इहे मंदिर के लागत बा!!
राघव जी के स्वागत बा!...

राम लला वनवासी रहनी!
बाकिर उहो काल कटल!!
त्रेता युग अस उत्सव बा अब,
माथा से तिरपाल हटल!!
विश्व गुरु भारत बन जाई,
लउकत अइसन ताकत बा!!
राघव जी के स्वागत बा! ...

इंदुबाला

आपन-आपन राम

होइहें राम प्रतिष्ठित जग में
नाम भइल अति भारी
भरल उछाह हिया में सबके
नर होखे या नारी
जब बनबास भइल चौदह कऽ
रोवैं बाप-महतारी
कलजुग में संत्रास मिलल तऽ
रोअल दुनिया सारी

राम नाम बा जीवन दर्शन
मर्यादा बा असली शान
पालन करे वाला पावै
अपने जीवन में सम्मान

त्याग नाम बा रामचंद्र बस
तजलैं ऊ सुख सारा
सबकर आपन-आपन राम
सबके आँख के तारा

अइहें राम घरे अब अपने
आई नई दिवाली
जगमग दीप जरी खुसियन कऽ
सुनऽ सखी ! ऐ आली

आजु भइल अब पूर्ण मनोरथ
सजल अयोध्या नगरी
सुंदर मंदिर बनल राम कऽ
बाट निहारत सबरी

राम-राम बस निकसै मुख से
अंत समय जब आवे
गहीं शरण हम उनके सखि हो
हमरो पार लगावे

डॉ.नीलम श्रीवास्तव

नेह दियना जरा लिहले बानी

राम अइहन पता जब से लागल
दुअरा अंगना लिपा लिहले बानी।
नांव अइसन समाइल हिया में
मन के सुगना बना लिहले बानी।

भोरे उठि के डगरिया बहारीं
अपना रघुबर के बटिया निहारीं
कबले अइहन सिया राम अंगना
रोज छान्हीं पर कउआ उचारीं

पांव में ना गड़े कवनों कांटा
झारि अंचरा बिछा दिहले बानी

अपना घरहीं अयोध्या बसाइब
ओहिमें मनभावन मंदिर बनाइब
भक्त हनुमत सिया राम लछुमन
चारु लोगन के आसन लगाइब

आंखि में आस के तेल भर के
नेह दियना जरा लिहले बानी।

राम कवितावली

मनोज भावुक

रामे समाधान हउवें

हम जब-जब
हताश, निराश आ उदास होखेनीं,
राम मन परेलें।
एह से ना कि ऊ भगवान हवें,
बलुक एह से कि ऊ हमरो से बड़का,
नाकामयाब रहलें, फेलिओर रहलें।
हम आज ले ना 'सेट' भइनी,
ना 'सेटल'।
त उहो कब भइलें?

राजा के बेटा होइयो के बनवासी।
हमरा त बिहार में रोजगारे ना मिलल
त भटकहीं के रहे बने-बने।
कष्ट हमरो भइल
बाकिर राम जइसन कष्ट दुश्मनों के मत होखे।

पत्नी के हरण, पत्नी के वन-गमन, बेटा से युद्ध,
लोकलाज आ **मर्यादा** से मर्माहत
मर्यादा पुरुषोत्तम के
नदी में समा के अवसान!
अइसन अंत केहू के मत होखे।
अइसन मानसिक पीड़ा केहू के मत होखे।
अइसन विफल, अइसन फेलिओर केहू मत होखे।

दुख में, पीड़ा में, अवसाद में, विषाद में
आ असफलतो में राम सोझा आ के ठाड़ हो जालें
दुखहरन बनके।
जइसे कहत होखस-
हमरा से अधिका कष्ट में बाड़S का ??

जग जितला का बादो लोग हमरा के ना छोड़ल
त तू कवना खेत के मुरई हउवS ?
का हमार सब सपना पूरा भइल?
त तू काहे मुँह लटकवले बाड़S ?
त हमरा बुझाइल -
चान-सूरुज बने के बा त गरहन के सहहीं के पड़ी
रामत्व के अनुभव करे के बा त आग में तपहीं के पड़ी
डेगे-डेग लड़हीं के पड़ी
बाकिर जितला का बादो
सुख, शांति आ सकून भेंटा जाई,
एकर कवनो गारंटी नइखे।
सफलता-असफलता भरम ह
आ सुख-दुख सोच।

राम सफलता-असफलता
आ सुख-दुख से परे रहलन।

राम के अपना सोझा राखीं
सब कुछ बुझात रही
जिनगी के हर समस्या के
समाधान भेंटात रही।
राम समाधान हउवें।
रामे समाधान हउवें।
रामे निदान हउवें।

एही से जन्म से मृत्यु ले राम बाड़े
रोआँ-रोआँ आ साँस-साँस में राम बाड़े
राम बाड़ें त सांत्वना बा, संबल बा
प्रोत्साहन बा, प्रेरणा बा
हिम्मत बा, हौसला बा
जोश बा, जूनून बा
मुश्किलो घड़ी में ना घबड़ाये के लूर बा
दुश्मन से संवाद के सहूर बा
नेह-नाता निभावे के भाव बा
शबरी के जूठ बइर बा, केवट के नाव बा
साँच कहीं त जीवन के पाठशाला बाड़ें राम
सभकर रखवाला बाड़ें राम
हमनी के बाप-माई बाड़ें राम
हर रोग के दवाई बाड़ें राम।

राम कवितावली

डॉ.दिवाकर राय

राम बिनु सब कुछ बा बेकार

राम नाम ह सुधारस अइसन, पीके झूमे संसार,
राम जिनगी जीये के आधार,
राम बिनु सब कुछ बा बेकार।

उल्टा नाम जपके रत्नाकर बाल्मीकि बन गइलें,
पाँव पखार के केवट राजा जग में नाम कमइलें,
हर कोई चाहे मिल जाइत राम के अजगुत प्यार,
राम जिनगी जीये के आधार,
राम बिनु सब कुछ बा बेकार।।

राम कृपा से तरली अहिल्या, सबरी के कल्याण भइल,
राम नाम से तरलें कसाई, जग में लमहर नाम भइल,
राम शरण हर दुख के दवाई, राम नाम उपचार,
राम जिनगी जीये के आधार,
राम बिनु सब कुछ बा बेकार।

भाई, मित्र, पिता, राजा,पति, पुत्र राम जस होवे,
हर क्षण, हर पल, हर जरूरत, कर्तव्य ऊ आपन ढोवे,
रामराज्य फेरु आई तब जब अइसे बनी बेवहार,
राम जिनगी जीये के आधार,
राम बिनु सब कुछ बा बेकार।

राम के **मर्यादा** हमनी के जीवन राह दिखावे,
हर संकट से पार करे के सरल उपाय बतावे,
राम प्रभु के चरित अलौकिक कर दे बेड़ा पार,
राम जिनगी जीये के आधार,
राम बिन सब कुछ बा बेकार।

गजल

एगो रानी आ राजा के कहानी ना अयोध्या ह
खाली मंदिर शिवाला के कहानी ना अयोध्या ह

अयोध्या के कहानी खुद से लड़ के जग के जीतल ह
केहू से युद्ध लड़ला के कहानी ना अयोध्या ह

भुला के दुश्मनी सम्मान दुश्मन के दिहल जाला
हमेशा तीर मरला के कहानी ना अयोध्या ह

केहू के प्रेम में शिव के धनुषवा तूरला के ह
धनुष से मार देहला के कहानी ना अयोध्या ह

एगो भाई के खातिर भाई आपन सब लुटा देला
सिंहासन देला लेला के कहानी ना अयोध्या ह

भरत के सादगी बाटे त भक्ति बा विभीषण के
खाली लंका जरवला के कहानी ना अयोध्या ह

अहम रावण के लंका के कहानी ह जवन मरल
बाकिर केहू के मरला के कहानी ना अयोध्या ह

एमें शबरी माई बाड़ी एमें केवट के भक्ती बा
इ खाली राम सीता के कहानी ना अयोध्या ह

ए में पर्वत गरुण बानर हिरन नदिया समंदर बा
ए बाबू बस अयोध्या के कहानी ना अयोध्या ह

समर्पण त्याग तप भक्ती भलाई प्रेम यारी ह
लड़ाई द्वेष कइला के कहानी ना अयोध्या ह

राम कवितावली

अजय साहनी

रउरो एगो राम हईं !

जदि रउरा
गुरुजन, गुरु, पिता के देवेनी सम्मान
जदि रउरा खातिर....
"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"
जदि रउरा में
त्याग होई भाई खातिर–
एह कलयुग में
जहाँ एक धुर खातिर ले लिहल जाला जान।

छुआछूत जाति ना कवनो भेदभाव
खा लेत होखेम जदि शबरी के बेर
नारी पराई होखे भा आपन....
ओकर रक्षा खातिर करत होखेम–
दुष्टन के ढेर।

त
रउरो एगो राम हईं।
रउरो एगो राम।

श्वेता राय

अवधे नगरिया सरग बनि जाई....

अवधे नगरिया सरग बनि जाई,
अइहें जब विहँसत घरे रघुराई।

कले कले बीतल
इ रतिया अन्हरिया।
अइला से उनके
ई गमकी नगरिया।

सेंहुल किरनिया दमक छितराई,
अइहें जब विहँसत घरे रघुराई।
अवधे नगरिया सरग बनि जाई।

सरगम से गूंज उठी
चिड़ीयन क बोली।
भंवरा के गुनगुन से
बिखरी रंगोली।

झुर झुर पवन बही फूल मुस्काई,
अइहें जब विहँसत घरे रघुराई।
अवधे नगरिया सरग बनि जाई।

रतिया में हो जाई
झिलमिल अजोरिया।
कईसी बताई अपने
मन के लहरिया।

जगमग सब दीप जरी चौखट धराई,
अइहें जब विहँसत घरे रघुराई।
अवधे नगरिया सरग बनि जाई।

आजु के दिन
खातिन डहके परनवा।
अंखिया से लोर बहे
जइसे सवनवा।

माई के अचरा में दूध उतराई।
अइहें जब विहंसत घरे रघुराई।
अवधे नगरिया सरग बनि जाई....

अजय कुमार

राम बिना

कवनो सुबह कवनो शाम नाही होई।
राम बिना दुनिया के काम नाही होई।।

जहवाँ जनम भइलें राम चारो भाई के,
जग में अमर बाटे नाम तीनो माई के,
कतहीं अजोधा जइसन धाम नाही होई।।
राम बिना दुनिया के काम नाही होई।।

मरजादा राखि आपन वचन निभवलें,
चउदह बरस खातिर बनवा में गइलें,
फेरु केहू पुरुषोत्तम राम नाहीं होई।।
राम बिना दुनिया के काम नाही होई।।

रिसी मुनि माला जपे नमवे के गाके,
जोगी भोगी तरि गइलें नमवे के पाके,
सत्तनाम बिना सुर धाम नाही होई।।
राम बिना दुनिया के काम नाही होई।।

राम खाली नाम नाही राम महामंत्र ह,
दुनिया से पार जाये वाला एगो जंत्र ह,
नाम बिना कतहीं आराम नाही होई।।
राम बिना दुनिया में काम नाही होई।।

श्री राम वंदन

श्री राम के महिमा अइसन बा
कि वेद पुराण भी गावेला
श्री राम के नाम जपेला जे
भवसागर पार करावेला
हे रामचन्द्र दशरथ नंदन
केहू भी भेद ना पावेला

जब जब होला हानि धरम के
अवतार तू लेल रघुनंदन
दुष्टन के संहार करेल
भार हरेल रघुनंदन
आंनदित होला मुनि गन जन
तोहके बा नंदन अभिनंदन
तू अविनाशी तू ज्योति पुंज
तोहके बा शत शत अरू वंदन
हे रामचन्द्र दशरथ नंदन

धन्य हो गइल राम के नगरी
राम के मन्दिर पा के
धन्य हो गइल नर नारी अब
राम के यश के गा के
लालसा दिल के भइल पूरा
बेचैन के मन के चैन मिलल
झूम उठल अब अयोध्या नगरी
होली दिवाली साथ मनाके
खुशी मिलल अपार दिलवा में
मनवा नाही अघात बा
सांचो इ बुझात बा

वृन्दा पाण्डेय

अइलें रघुरइया ना...

अवधपुर बाजेला बधइया
कि अइलें रघुरइया ना

रहिया निहारत बीति गइल जुगवा
राम पुकारत जिभि परल छलवा
आइ गइले अब शुभ दिनवा
कि अइलें रघुरइया ना

सरजू मइया के बढ़ेला लहरिया
हम अपने राम के पखारबि पउवा
मिटी जुग-जुग के तपनिया
कि अइलें रघुरइया ना

नग्र अयोध्या पलक बिछाये
राम सिया के रहिया निहारे
दियना से जगमग नगरिया
कि अइलें रघुरइया ना।

धरती अकास छबि बरनि न जाई
सरग के शोभा जइसे महि छायी
भइल राममय सगरी जहनवा
कि अइलें रघुरइया ना।

अवधपुर बाजेला बधइया
कि अइलें रघुरइया ना।

राम कवितावली

संजय कुमार

हाइकू

१. साकार रूप
निराकार धइले
राम नांव से

२. अजोधिया जी
जुड़इली सउँसे
परानी संगे

३. लइकाइँसे
देखवनी रउआ
छत्री धरम

४. बनल जोड़ी
बिसनू लछिमी के
फेर त्रेता में

५. काल्हु के राजा
आज के बनवासी
छन भर में

६. मान रखनी
बाबूजी के बचन
धन्न रउआ

७. भाग के खेला
मईया हेरइली
जो रे रावन

६. बानरराज
भेटइले भाग से
की रचल लीला

७. जरि गइल
लंका सोना के संगे
घमंड तोर

८ . समुंदरों के
बन्हनि भगवान
खेले खेल में

९ मरा गईले
नाती पोत सहिते
राकस लोग

१०. घमंडे त ह
भगवान के जेवन
सभे कहेला

११. गियाने होखे
आ चरितर ना त
उड़ि जइब

१२ धन तागत
धइले रही जाई
उनुका सोझा

१३. फेर अइहे
जब होइ अनेत
सुराज लेले

१४. सीरी रामजी
संगे सीता मईया
होखे जैकार

राम लला

गूंजत हहुऐ राम क नारा, सुन थौ दुनिया ध्यान से
राम लला फेर घरे में अइलन खबर हौ हिन्दुस्तान से
चम चम नगरी चमक रहल
नगर अयोध्या दमक रहल
केहू ढोल बजाव थौ
सोहर केहू गाव थौ
जुग जुग जिया ललनवा हो
जागल भाग भवनवा हो
हमहूं बोली राम लला
तोहऊं बोला राम लला
जय सियाराम जय जय सियाराम, बनल अयोध्या चारो धाम
सपना पूरा भयल देस क प्रेम से बोला जय श्री राम
प्रान प्रतिष्ठा हो जाये, फिर चला अयोध्या सान से
राम लला फेर घरे में अइलन खबर हौ हिन्दुस्तान से
गूंजत हहुऐ राम क नारा, सुन थौ दुनिया ध्यान से
राम लला फेर घरे में अइलन खबर हौ हिन्दुस्तान से

राम के आवे के पड़ी

जब जब रावण के ताकत बढ़ी,
राम के आवे के पड़ी।
नभ के नक्षत्रन के मिलके,
ई विषम-काल सुलझावे के पड़ी।

जब पाप और अनाचार के,
राक्षस जन अइसे घूमिहे।
जब जब ताकत के घमंड में,
पागल हाथी अस झूमिहें।

गाण्डीव उठाके तीर चढ़ाके
जग के त्राण दिलावे के पड़ी।
राम के आवे के पड़ी ।

जब नारी पर शक करके
केहू अपमान करी, शाप दिही।
जब चुप होके पाषाण बनल
ऊ आनंद विहीन जीवित रही।

आपन पाँव के धूल कण से
उनकर उद्धार करेके पड़ी।
राम के आवे के पड़ी ।

जब ऋषि महर्षिन के संहार
से अस्थि-समूह बन जाई।

जब सभ्यता कराह उठी
मानवता मूक बन जाई ।
तब भुजा उठा प्रण करके
अरि-समूह के ढहावे के पड़ी।
राम के आवे के पड़ी।

राम एह धरती पर कभी
मनुष्य रूप में ना अइहें।
राम अब दसरथ सुत बन
बाल लीला ना करिहें ।

अब राम-भक्त के मिलके
अंतर में राम जगावे के पड़ी।
राम के आवे के पड़ी।

रावण तबे जलिहे जब
अहंकार मिट जाई।
रावण तबे मिटिहे जब
लोभ लालच ना सताई।

राम भक्त बने खातिर
मन शुद्ध बुद्ध बनावे के पड़ी।
राम के आवे के पड़ी।
राम के आवे के पड़ी।

राम की नगरिया में

चलऽ सखी ले हिय हुलास, राम की नगरिया में।

ओही नगरिया में सिरी राम सोहैं ,
मंदिर सोहावन त मनवाँ के मोहैं।
पुजिहें सभ हियरा के आस, राम की नगरिया में।

दरसन के खातिर बा मन अकुलायल,
रामजी क रुपवा बा आँखि में समायल।
हरिहें बिपत हऽ बिसास, राम की नगरिया में।

अपने दरस से ऊ सबरी के तरलँऽ,
नारी अहिल्या के, साप से उबरलँऽ।
गीधो के दिहलँ ऊ सरगऽ में बास, राम की नगरिया में।

सरजू में चलि के नहायल जाई,
बइठ गीत चरनन में गावल जाई।
देख२ बा सगरों उजास, राम की नगरिया में।

हिन्दू मुसलमान सभे केहू जात बा,
भेद बाटे कवनों ई नाहीं बुझात बा।
सबही के हियरा में रामे के बास, राम की नगरिया मे।

ऋचा वर्मा

कबो-कबो हम सोचीला राम जी

हे राम जी, रउरा के प्रणाम,
राउर चरण में बा हमार चारो धाम,
हर घड़ी जीभ पर रहेला राउरे नाम।
उ दिन बेकार लागेला जे दिन ना पढ़ीं हम रामायण,
पर जिय तानी नारी विमर्श के इ जुग में,
रामायण पाठ करते करते कुछ सवाल उठल बा हमरा मन में,
प्रभु जी जवाब देहब का!
जे सवाल उठल बा हमरा मन में,
जेकरा से हम समझ सकीं रघुकुल के मयार्दा।

रघुकुल में बेटी रहबे ना कइली
आकि उनकर रहल ना रहल बराबर रहे,
रउरा के करेके रहे रावण वध
लक्ष्मण जी के निभावे के रहे भाई के धरम,
का एकरा ला जरूरी रहे सीताहरण
अउर चोटिल करेके उर्मिला के मन?
कैकेई के जिद, दशरथ जी के वचन,
राउर होखल पुरुषोत्तम,
इ सभनी के आकांक्षा के पूरा करे खातिर
काहे सीता ही बनली साधन,
पर माफ करम राम जी
हमरा लागेला कि राम अउर रामकथा ना रहे स्थूल अस्तित्व के नाम,
एक मनगढ़ंत किस्सा होखे के बावजूद
सूक्ष्मतम रूप में रउरा हमनी के अंतर में विराजीले।
राम होखस भा रावण इ कोई व्यक्ति नइखन, बल्कि विचार बारन।

रामायण आज भी प्रासंगिक बा हमनी के जीवन के आधार बा।
पर अब जरूरी बा एकरा के अलग ढंग से लिखे के,
काहे कि अब हमनी के सोचत बानी,
दूसरा कवनो ग्रह पर दुनिया बसावे के,
इ नयका रामायण में स्त्री पुरुष के पाछे ना बल्कि साथ चले वाली होइहन,
अउर वचन के नाम पर राम के वनवास देहल
ना होई दशरथ जी के मजबूरी,
काहे कि अगर दशरथ जी कैकई के जिद ना मनतन,
त ना राम जी वन जइतन, ना सीता जी के अग्नि परीक्षा देवे के परित,
ना लक्ष्मण जी उर्मिला के छोड़ जइतन अकेले,
ना कैकई के हमनी के खलनायिका मनतीं।

राजा राम जी हे...

रतिया में आवे ना हमरा निनिया,
दिनवा में चैन कहंवा हे...
कब अइहें परभु राम जी, होई दरसनवा हे... !

हाली से अजोधया सजाई सभे,
महल रंगाई पुताई करी हे...
सगरी दियरी जराई, अइहे राम जी हे...

गोड़ पखारेब पहिले आरती करब,
बलइया लेके नजर उतारब हे...
खिंचब हमहूं लकीरवा कहीं जास न राम जी हे...

सुन रंगरेजवा अरजिया हमरी एही बेरिया,
ललका चुनरी छापी सीता मैया लागी रे,
पैजनिया बाजत अइहे दुलहीन संगे राम जी हे...

चउका पुराई गोबर लिपाई देहब हे,
खीर दाल पूरी थरिया परोसेब मुँहवा दिखाई चमेली हारवा देहब ...
होखे लखन जइसन देवर नगर राजा राम जी हे...

भरल आंखी लोर दौरे भईया भरत मिलन बा,
मईया दौरल आइल तीनो लेके आरती हे...
जुराई गइल करेजवा बजरंगी जेकरा बसे हिरदया सिया राम जी हे... !

मनवा के लोभे

खींचेलें राम जी बकइयाँ मनवा के लोभे,
पीछे ले लहुरा लखन भईया मनवा के लोभे।

कवना नगरिया में दूनो भइया जनमेलें,
कहवाँ बाजेला बधइया मनवा के लोभे।

अवध नगरिया में दूनो भइया जनमेलें,
जगवा में बाजेला बधइया मनवा के लोभे।

केई लुटावेलँ अनधन सोनवा,
के इनकर लेवेला बलइया मनवा के लोभे।

कौशिल्यापति लुटावेलँ अनधन सोनवा,
तीनो मइया लेवेली बलइया मनवा के लोभे।

खेलत-खेलत भैया चनरमा के माँगेल,
डरेलें फिर देखी परिछइयाँ मनवा के लोभे।

थपरी बजाई प्रभु कबो-कबो नाचेलँ,
बिहसेलें बाबा अऊरी मईया मनवा के लोभे।

खेलत- खेलत भईया दुअरा पर गईलें हो,
फुलवा बरसावेला नगरिया मनवा के लोभे।

ढोल, मजीरा, शहनाई संघे बाजेला,
बाजेला कमर करधनिया मनवा के लोभे।

छप्पन भोग मईया लेई पीछे दऊरेली,
दऊरेली घरवाँ अँगनिया मनवा के लोभे।

केथुक पलना, केथुन लागल डोरी,
केई गावेला इनके लोरिया मनवा के लोभे।

सोने का पलना रेशम लागल डोरी,
लोरी गावेली तीनों मईया मनवा के लोभे।

आवतानी राम जी

झूमऽ नाचऽ गावऽ भाई, आवतानी राम जी,
बाइस तारीख के होखीं, प्रतीष्ठित प्राण जी...

पान सौ बरीस के अब, वनवास टूटल,
भारत के लोगिन के अभिलास पूरल,
तिरलोक देखी बैइठल, सिंहासन राम जी...
बाइस तारीख के होखी ....

हम सबका भाग जागल, मनवा अनुराग बढ़ल,
राम जी के नाव लेत तन-मन उमंग चढ़ल,
रामराज आवता अब, युग के फरमान जी....
बाइस तारीख के होखी ....

सुर, नर, मुनि, जन अयोध्या में अइहन,
'प्राण प्रतिष्ठा पूजन' फूल बरिसइहन,
शंख, वीणा, मृदंग, झांझर, बजी आसमान जी...
बाइस तारीख के होखी ....

साँवर राम जी, गोर सिया, लछिमन
हनुमत जी राम जी के बइठल बानी चरनन,
बरम्हा, बिसनु जी, आयेब, आयेब सिव भगवान जी...
बाइस तारीख के होखी ....

मिथिला के लोग आई, चौका पुराई,
यूपी, बिहार अमबंदनवार लगाई,
सउँसे भारत नाची, गायी सिया राम जी....
बाइस तारीख के होखी ....

प्रीत पुरानी हवे

जे ना माने राम के बचकानी हवे.
जाने ना राम कथा उ अज्ञानी हवे..
सोहर खेलवना गावत बाटे लोगवा.
मगर राम धुन गजब मस्तानी हवे..

मीठे मीठ ह जइसे अमृत नीयर.
राम रस लागत हमके जुबानी हवे..
धन्य धन्य मइया कौशल्या जी
राम जी के मधुर मधुर बानी हवे..

अंगना में खेलेलन चारो भइया.
हरदम राम जी के अगुवानी हवे..
बाजत बाटे चारो ओर बधइया
खुशी में नाचत कुल परानी हवे..
मगन बाड़न आज ई "आग्नेय"
राम जी से त प्रीत पुरानी हवे..

राम कवितावली

डा.मधुबाला सिन्हा

धूम मचल चलीं अजोधा नगरी

हाथ धनुष तन पीतांबर
धई के तपसी के भेख
विश्वामित्र संग वन के चलले
सगरो नगरी रहलख निरेख
गिन गिन के राकस के मरलें
दूर हटवलें मुनियन के कलेस
सिया सवम्बर जनक जब नधलें
मुनि जवरे अईलन हुलेस
सिव के धेनुखा ना टूटल तब
जनक सुता तकली निरास
मेघ वरन रघुराई चललन
हरखित मन सिया धईली आस
धेनूखा तोड़ी सिया बियहलें
बाजल ढोल अजोधा में
सगरो नगरी मुदित मन झूमे
लछमी अयिली अजोधा में
मातु पिता के वचन जोगावे
चौदह बरस के लिहलें वनवास
राह ताकत सगरो नगरी
लवटे के मन रहे विस्वास
काल समाइल रावण के
ले गयिलें सिया के उठाय
हनुमत तब लंका के जराई
सिया विभीषण रहे भेटाय
तीन दिन विनय कर जोरी
राम रहस पथ सागर से मांग
क्रोधित वत्सल सिंधुपति से
कापंत देह विभंजन आंग
वानर जूथप सेना सजाई
अवधपति अयिलन सागर पार
धर्म नीति में बनहल रीति से
न कईलन ऊ पहिला वार
कुंभकरन मेघनाथ रावन
सभ कर मिटल अहंकार
धूरा फांकत गोलोक वासी भ
चहुंपल सभे जम के दुआर
चौदह बरीस के भुखल अंखियां
नगर नगर में बाजल नगारा
रामलला घर लवट के अईलें
लखन सिया हनुमत अपारा
खुसी भइल आजू फेरू लल्ला
बरिसन बाद घरे आवतारें
धूम मचल चलीं अजोधा नगरी
लखन सिया जौरे आरती उतारे।

भगवन उहे नु हवा

लेबा अपनाई कि तू देबा ठुकराई, भगवन उहे नु हवा
पाथर अहिल्या तू दीहला जगाई, भगवन उहे नु हवा

गंगा जी के तीरे तीरे, केवटन के गऊँवा,
मिलल चरणोदक सहजे, धोई राउर पउँवा,
केवटा के लिहलीं अपना, हिया से लगाई,
भगवन उहे नु हवा।

बन बन फिरी कइला देवतन के काज हो,
दौरि के बचाई लीहला, द्रौपदी के लाज हो,
बइर खइला जवन दीहली सबरी जुठियाई,
भगवन उहे नु हवा।

पाप पुण्य देखता त, होखत कइसे काम हो,
बाली अ पूतना जइते, कइसे राउर धाम हो,
रोवे लगला गिद्ध आपन गोदिया उठाई,
भगवन उहे नु हवा।

ध्रुव, प्रह्लाद, अजामील सुदामा,
केकर केकर केतना, बताई हम नामा,
हमरो ओरिया ताका, सनेहिया लगाई
भगवन उहे नु हवा।

रामजी के भइल जनमवा

रामजी जे ले ले अवतरवा हो रामा
दसरथ भवनवा।
जुटेला अवध के लोगवा हो रामा
कोसिला अँगनवा।

केई बजावेला नाग-नगाड़ा
केई बजावेला बधावा हो रामा
दसरथ भवनवा,
राम जी जे ले ले अवतरवा हो रामा
दसरथ भवनवा।

राजा बजावले नाग-नगाड़ा
रानी बजावेली बधावा हो रामा
दसरथ भवनवा।

केई लुटावेला अन-धन सोनवा
केई लुटावेला कँगनवा हो रामा
दसरथ भवनवा।

राजा लुटावले अन-धन सोनवा
रानी लुटावली कँगनवा हो रामा
दसरथ भवनवा।

आई रघुनन्दन अब त रउरे इंतजार बा

अँखियन में आशा भरके देखत जहान बा,
आई रघुनन्दन अब त रउरे इंतजार बा।

केहू लावे फूलवा आ केहू लावे पत्तिया
जल भरी भरी लावे संगी आ संघतिया
अँचरा से रहिया बहारब एकहू ना खार बा
आई रघुनन्दन अब त रउरे इंतजार बा।

मनवा के मटिया से दीयना बनाई के
नेहिया के तेलवा से दीयना जराई के
जगमग भइल अयोध्या कहाँ अब अन्हार बा
आई रघुनन्दन अब त रउरे इंतजार बा।

चऊका पुराएब हम त मंगल गाएब
सिया संगे रऊरा जे अवध पधारेब
घरे घरे लागल अब त वंदनवार बा
आई रघुनन्दन अब त रउरे इंतजार बा।

राम नाम से मानुष तरि जाय

महिमा अइसन प्रभु राम के
नाम लेई बाल्मीकि बनि जाय।

अधरमी विधर्मिन का कहे के
सबकर बेड़ा पार लगि जाय।

राम सभकर सभे बाटे राम के
राम नाम से मानुष तरि जाय।

राम हंई सनातन संस्कृति के
भारत राम से ही जानल जाय।

अइसन बान चलल राघव के
चहुंओर राम राम होई जाय।

राम नाम सूचक बाटे धर्म के
नाम से संकट दूर होई जाय।

राम नाँव जे लेई

धर्म के हर परिभाषा में ह, राम क नाँव महान।
राम बिना पत्ता न डोले, जानत सकल जहान।

कलजुग में सेवरी क बईरि, रामजी आके खयिहें।
सत्य, अहिंसा, मानवता क सबमें भाव जगयिहें।।

सरजू तीरे अब केशरिया, झंडा के फहरयिहें।
भरत,लखन, शतरुघन, सीता, संग राम अयोध्या अयिहें।।

परंपरा क नीति निभावे, खातिर मिलिहें राम।
मानवता क मूरति उनक, लउकत बा ललाम।।

भक्ति भाव से पूजी जे, ओकर मनसा पूरा करिहें।
राम नाँव जे लेई ओके, भवसागर से तरिहें।।

रउरा स्वागत में ...

राम एह धरती पर प्रकट भइल बानी।
सब मनई प्रेम से पुकरले बानी।
रउरा अइला के उत्सव हम मनाईला।
रउरा स्वागत में सुन्दर गीत हम गाईला।
करुणा के सागर बानी भक्त के उधारक बानी।
हे प्रभु जी रउवा अन्तयार्मी बानी।
सबकर प्यारा दशरथ के दुलारा हईं।
दीन-दुखियन के रउवा सहारा हईं।
राउर रूप देखके हम के सुकुन मिलेला।
जब जाइला अयोध्या त भक्ति के जुनून मिलेला।
जे भक्त रउरी शरण में आवेला।
ऊ जनम-मरण के बंधन से मुक्ति पावेला।

रोम रोम में राम हवें

चैत्र शुक्लपक्ष नवमी के दिनवा जनम लेहीलें राम ललनवा,
माता कौशल्या आ राजा दशरथ के हर्षित हो गइल मनवा,
देखि देखि अद्भुत छवि पुलकित भइले सम्पूर्ण अयोध्या नगरिया,
साथे साथे जनमलें चारो भ्राता श्री राम, भरत, लक्ष्मण आ शत्रुघ्न,
कई दानवन के संहार कइलें आ पालनहर्ता के धर्म निभवलें,
रावण के संहार करीके सम्पूर्ण सृष्टि के रक्षा कइलें,
शबरी के झूठा बेर खइलें आ अहिल्या के ताड़नहार भइलें,
हनुमान जी के हृदय में सदैव रहिलें श्री राम,
भगवान राम के पावे खातिर जपीं पहिले जय हनुमान,
माता जानकी आ श्री राम के सेवा में हमेशा रहिलें हनुमान,
माई आ बाबू के सच्ची सेवा से मिल जालें आजो प्रभु श्री राम,
हमनी के रोम रोम में हवें प्रभु श्री राम।

तोहरे दरस के जिया बेकरार..

सरयू के तीरे बसल अयोध्या
दशरथ के नंदन करऽ हो उद्धार
जिदगी क दिनवा त कम होत जाता
तोहरे दरस के जिया बेकरार

सिनवा के चीर हम कइसे देखाई
हम नाहिं हनुमत संगी तोहार
मनवा मूरतिया तोहरे बसल हौ
आवा हो सपनवा में हमरे दुआर
तोहरे दरस के जिया बेकरार ..

रतिया पहर हम दियवा जरवलीं
खोल के अँखिया अगोरली बहार
भोरवा में झपकी जइसे लगल
छूके निकल गइला कनवा पुकार
तोहरे दरस के जिया बेकरार ..

कुंडलियां

बहुत दिनन के बाद अब,
जागल बाटे भाग।
रामचन्द्र की काज में,
लोग गइल बा लाग।
लोग गइल बा लाग,
मुदित बा भारतवासी।
राम अयोध्या सत्य,
आत्मा बा अविनाशी।
कह ह्नमाहिरह्व कविराय,
सकल जन खुशी मनाई।
दान-पुण्य की साथ,
रोज हरिकीरतन गाईं।।१।।

प्रभु के महिमा बा बहुत,
देखल विश्व समाज।
कवनो कुछऊ कष्ट ना,
रामचन्द्र के राज।
रामचन्द्र के राज,
परस्पर सब मिल रहें।
प्रभु के कृपा अथाह,
ना केहू दुःख कुछ सहे।
कह "माहिर" कविराय,
राम यश बा अति पावन।
राम जपत के साथ,
कोटि अघ पाप नसावन।।२।।

अवध में अइनी श्रीराम प्रभु

अवध में अइनी हमर श्रीराम प्रभु, हमर श्रीराम
सीता लखन सङ श्री हनुमान प्रभु श्री हनुमान

माई कोसिला के अँखियन के तारा
राजा दसरथ के प्रान से प्यारा
संतन के प्रभु पूरा कइनी सब काम
हमर प्रभु....

केतना दिनन से प्रभु आसा रहे लागल
सुतल भाग हमनी के आज बाटे जागल
सरजुग के जल में रउआ कइनी अस्नान
हमर प्रभु....

अहिल्या के तार देनी, सँवरी के तरनी
भवकुप में परल रही हमनी के उबरनी
जटायु के तरनी रउआ गइले परम धाम
हमर प्रभु....

जाके जनकपुर धनुष के तुरनी
सीता सुकुमारी के विआह रचवनी
सियाजी खातिर कइनी रउआ रावन से संग्राम
हमर प्रभु....

धर्म के जुद्ध कइनी पाप पर विजय पइनी
सब के सुख देके भेजनी सुरधाम
हमर प्रभु....

राम कवितावली

रेणु अग्रवाल

रामजी त बाड़े सभका मनवा में

दउरी-दउरी खोजेला लोगवा
धरती अउर असमनवा में
केहू नइखे बूझत मरम के बतिया
रामजी त बाड़े सभका मनवा में

नारी के सम्मान जहाँ होई
बुजुरगन के आदर होई
राम नगरिया उहे होई भईया
गुरुजनन से प्रीत होई
ईटा पाथर देखा जिन
राम बाड़ें करमवा में
केहू नइखे बूझत....

भाई भाई के बैरी भइल बा
अब त एह जहान में
लालच कूटी कूटी के भरल बा
अब देखा इनसान में
सेवा पथ पे चला भईया
राम मिलिहें एही जनमवा में
केहू नइखे बूझत....

सगरो समाज राजनीति के
दंगल भइल बा
केकरो मन में शांति नइखे
जिनगी अमंगल भइल बा
सुखवा लोग अगोरत बाड़न
दुखवा के कारनवा में
केहू नइखे बूझत....

राम कवितावली

करुण बाला

अवध में शोर हो गइले

बन से आ गइले लछुमन राम,
अवध में शोर हो गइले।

जय जय गूंजे राजभवन में, नगर में बाजे शहनाई,
प्राण जाये पर वचन ना जाये, दिहले रीत निभाई,
अवध में शोर हो गइले।
बन से आ गइले लछुमन ...

हाथ जोड़ के बोलेली कैकेई, सुनी ए राम रघुराई,
ई कलंक अब कईसे छूटी, हमें लिही महतारी बनाई,
अवध में शोर हो गइले।
बन से आ गइले लछुमन ...

द्वापर के माता देवकी होइह, हम होइबो कृष्ण कन्हाई,
सुन ए माता जनम के दाता, दूध ना पियब तोहार माई,
अवध में शोर हो गइले।
बन से आ गइले लछुमन...

आह्वान

राम राज्य जे चाहत बाणी,
राम राज्य निर्माण करीं।
हउयें रघुनन्दन पुरखा राउर,
लव कुश के आह्वान करीं।।

रउरे वंसज से पुरखन के
कोई त पहचान करे।
बलशाली के पूजा होई,
कायर से ना केहू डरे।।

जहाँ धर्म के सही समझ बा,
विजय सुनिश्चित राम करीं।
जहाँ धर्म ना संग दिखत होखे,
आपन चेलवे प्राण हरी।।

अगर पुरखा बलवान रहले राउर,
लइकन के बलवान करीं।
भर दीं आपन सारी विद्या,
लइकन के विद्वान करीं।।

चुनौती स्वीकार करब हम
घोड़ा रोक दिखायम जा।
लीं संकल्प अब आपन देश के,
विश्व गुरु बनवाएम जा।।

अवध में बाजे बधाई

सिया संघे अइलें रघुराई, अवध में बाजे बधाई ना।
पीछे-पीछे तीनू भाई, अवध में बाजे बधाई ना।।

उमड़ि गइल भीर, हम पहिले निहारब।
आज भव्य मंदिर मे, आरति उतारब।
देखि-देखि अँखिया जुड़ाई, अवध में बाजे बधाई ना।।

हरदम अधरमी से, जीतल बा धरम।
रावण ना कंस के, बँचल बाटे भरम।
भइल बा जब-जब लड़ाई, अवध में बाजे बधाई ना।।

राम जी हँईं, दिन दुखियन के संगी।
साथे रहें हरदम, वीर बजरंगी।
झंडा केसरिया लहराई, अवध में बाजे बधाई ना।।

अवध में वनवास से, प्रवेश मोरा राम के

अवध में वनवास से, प्रवेश मोरा राम के
अब टाट से ठाट में, आवास मोरा राम के।
अमंगल हर, मंगलमय सार मोरा राम के,
सर्वमंगल, कल्याणमय द्वार मोरा राम के।
संत के प्रताप से, भक्त के उल्लास से
न्याय के परिणाम से, स्वागत मोरा राम के।
मोदी के आह्वान से, योगी के प्रयास से
लोगन के योगदान से, स्वागत मोरा राम के।
राष्ट्र के समृद्धि में, विश्व के कल्याण में
भारत के पहचान में, स्वागत मोरा राम के।
बिहसल हिया, हुलसल मन
नयन के अभिराम से,
अंतर्भाव के पुष्प शंख से सुस्वागत मोरा राम के,
सुस्वगत मोरा राम के।

जयकार राम के थमत नइखे

रहल प्रतीक्षा जेकर बहुते
ऊ बहु-सुहावन घड़ी आ गइल।
हरेक हृदय हुलसित भइल
हनुमानगढ़ी हरष में आ गइल।।

पुनर्जन्म जइसे होखे राम के
विश्व में अइसन खुशी छा गइल।
जननी सब कौशल्या भइनीं
अनुभूति धन्य होवे के पा गइल।।

कृपा राम के खुदे भइल
लमहर लड़ाई के फल आ गइल।
छवि पतित पावन राम के
नयनन में अद्भुत छटा छा गइल।।

डूबलन सभे देवतन हरष में
गगन से पुष्प-वृष्टि आ गइल।
जयकार राम के थमत नइखे
श्रीराम पुकार हिय से आ गइल।।

धन्य-धन्य जिनगी सबके भइल
साधु-संत के बलि फल पा गइल।
भव्य-दिव्य राट्र मंदिर बनल
आँख देखल सजल सपन पा गइल।।

जात मजहब के भेद हटल
सेवकाई राम के सबका भा गइल।
घर राम के ह सब श्रीराम के
देखऽ दुनिया से बधाई आ गइल।।

सपना साँच हो गइल

राम लला क दर्शन हो गइल,
मन हरखित आपन हो गइल।
सपना जवन रहल मंदिर क,
देख२ आज साँच हो गइल।

बाल मनोहर रूप ई देख अ,
केतना नीक लगेला।
सीता मईया क रसोई,
सबके पेट भरेला।
हनुमान गढी मे हनुमत बइठै,
सीयाराम भजेले।
सिंह दुआर पर गरूडराज
सबकर ध्यान धरेलें।
अवधपुरी क सुन्नर छवी ई,
मनवा क हमरे भा गइल।
सपना जवन रहल मंदिर क,
देख२ आज साँच हो गइल।

केकर केकर नाव धरी हम,
गिनती कम परी जाई ना।
कार सेवकन अउर भक्तन क,
करनी कही समाई ना।
गइल अन्हरिया आइल अंजोरिया,
अब रामराज्य ही आई ना।
सरयू मईया सब जाने ली,
उनके केहू भुलवाई ना।
बरिस बरिस क रहल तपस्या,
पूरा आज हो गइल।
सपना जवन रहल मंदिर क,
देखऽ आज साँच हो गइल।

बबुआ राम अइहें हो

अयोध्या में होखता तैयारी
सजेला घर दुआरी।
कि बबुआ राम अइहें हो।
राम अइहें हो बबुआ राम अइहें हो
झूमत हर नर नारी कि बबुआ राम अइहें हो

गली गली रंगोली बनत बा।
देशवा विदेशवा से, लोगवा आवत बा।
घर घर बटत जिम्मेदारी कि बबुआ राम अइहें हो।
राम अइहें हो बबुआ राम अइहें हो ..

पांच सौ बरिस से, रहे इंतजार हो।
अंखिया अब करिहें, उनकर दीदार हो।
बन जाई जगवा पुजारी कि राम अइहें हो।
राम अइहें हो बबुआ राम अइहें हो ..

विश्व बंधुत्व में लोग जुड़ जाई।
जात धरम के भेद मिट जाई ।
राकेश बाड़े नमो, योगी के आभारी, कि बबुआ राम अइहें हो।
राम अइहें हो बबुआ राम अइहें हो ..

गजल

दिनवाँ होला सुरू राम के ध्यान से।
राति जाले गुजर नाम रसपान से।

जिनगी सरजू के पनिया पबित्तर करे–
मन इ जगमग भइल राम गुणगान से।

माई सीता, लखनलाल हिय में रहें–
सीखे भगती सभे बीर हनुमान से।

सरधा सबरी के अइसन हमेसा रही–
बाँटी भगतन के केहू न भगवान से।

सत असत पर हमेसा से बिजई बनी–
ई बतावे ला मानस परम ग्यान से।

त्याग अउरी समरपन त अनमोल बा–
नाव रघुकुल के बाटे बचन मान से।

दोसती, फर्ज, मरजाद, ममता, दया–
बाटे सामिल रमायन में सम्मान से।

लोक थाती चरित राम मानस मिली–
बाबा तुलसी नियन नेक बिदवान से।

"कृष्ण" आठों पहर रोज उनके भजऽ–
नून–रोटी चले जेकरा बरदान से।

के हउवन राम?

जाति–पाती के भेद मिटावे वाला हउवन राम
दीन–दुखियन के कलेजा से
लगावे वाला हउवन राम
राम उहे हउवन जे अपने घर के बहरी
14 के कहे 500 साल बइठलन
आ अपने लोग से हार मान जाए वाला हउवन राम

राजा ना जन नायक हउवन
दिल में पूजे लायक हउवन
कलजुग में आसा बन अइले
अइसन जग के पूरक हउवन राम

दिल के अंजोर हउवन राम
अंधकार पर परकास हउवन राम
जिनगी जिए के कहानी हउवन राम
आ जीवन जीये के कला सिखावे वाला हउवन राम

बुराई केतनो बड़का होखे
ओकरा एक दिन मिटहीं के बा
कलजुग में पाप केतनो उफने
घड़ा एक दिन फुटहीं के बा
मन में ई बिस्वास जगावे वाला हउवन राम

राम एतने भर नइखन
राम त हर जगहे बाड़न,
जेने करुणा बा ओने बाड़न
हम केतना बताई उनका बारे में
बेटिहा के त आपन दामाद नीमने लागेला
काहे की हमनी के बिहारी हईं सन
हमनी के त पाहुने हउवन राम

पधारऽ हे राम

पधारऽ हे राम
तनी हमरो घरवा
आस लगा के बइठल बानी
ताकत बानी अपना दुवरवा

कब तक अंखिया बिछइले रहीं
तहार सुरतवा देखे खातिर
हमरो मनवा रख द तनी
हमहूँ त भक्ते हईं आखिर
जेकरा एगो नाम से खाली
जीवन सफल हो जाला
का होई जब मिली हमरा दर्शन
सुंदर मोहक सूरत वाला
पधारऽ हे राम
तनी हमरो घरवा

घर घर होई कीर्तन भजन
अयोध्या पति के अइला पर
सीता लक्ष्मण सहित सभे के
दर्शन होई गइला परर
बस एतने मनोकामना बा
राम के नाम पर जीवन न्योछावर
करके मोक्ष दुआर जायेके बा
पधारऽ हे राम
तनी हमरो घरवा

दुनिया भर में गूंज रहल बा जय जय जय श्री राम

दुनिया भर में गूंज रहल बा जय जय जय श्री राम
दुल्हिन जइसन चमकत बा आपन अयोध्या धाम

सालों साल से रहे परतीक्षा राम मंदिर के खातिर
कलयुग में विरोधियन के चेहरा लउकल सातिर
राम भक्तन में दरसन के लेके बा मचल संग्राम
दुनिया भर में गूंज रहल बा जय जय जय श्री राम

राम नाम पर सियासत में खूब चलल बा तीर
बीजेपी मंदिर मुद्दा के लेके लगल रहे गंभीर
रामज्योति से मनी दिवाली चमकी देस के नाम
दुनिया भर में गूंज रहल बा जय जय जय श्री राम

मर्यादा पुरुषोत्तम से सबक मिलेला त्याग के
राम जी के अब पूजा होखी रतिया भोरवा जाग के
कण कण में बाड़े बसले अयोध्या के प्रभु राम
दुनिया भर में गूंज रहल बा जय जय जय श्री राम

–

रामेजी राम

राम के नाम से बनत सब काम,
धाम चारों विराम, राम नामे में करे ला।
बाप, बंधु, भाई आ माई सन दानी,
बात मानीं इ साँच, राम नामे में शोभे ला।
बिपत में बान आ दरिद्रा के दुर्दशा हऽ
ज्ञान-विज्ञान, मनन मोती सन चमके ला।
राम हऽ सबेर साँझ, रात आ बिहान हटे,
अइसन हऽ चीज जे मुश्किल से मिले ला।

जिनगी के फुनगी पर, फूल जे खिले ला सब,
राम नाम के सुगंध सगरो छिंटाला।
सारा संसार में आकास आ पतालो में
कहीं कुछ जे साँस, आस एकरे कहा ला।
धनी- निर्धनी चाहे रोगी-निरोगी हो,
जोगी-वियोगी विश्वास से भेंटा ला।
मरा-मरा जप के जे रम जा ला राम में,
त२ ओकरे से सउँसे रामायण लिखा ला।

राम नाम के प्रताप, श्राप जे अहिल्या के,
ताप जे जनक के, सुग्रीव पाप जा ला।
बाप दशरथ के आ जाप शबरी के,
दाप-धाप जटायु के भवमुक्ति बनी जा ला।
लंघन समुद्र के, उलंघन अहिरावण के,
बंधन में लंका के ईंधन बनि जा ला।
राम नाम चंदन हऽ जतने घिसा ला इ,
साँच कहीं पानी के पानी बढ़ि जा ला।

राम नाम सेतु हटे, हेतु ह धरम के इ,
केतु ह विजय के जे सगरो फहरा ला।
भवसार नौका पतवार बरियार हटे,
एक बेर मुँह से जे इहो बहरा ला।
अइसन इ राम नाम, रोम-रोम गाँथीं तऽ
स्वामी से सेवक बन जादा गहिरा ला।
स्वामी जी सेतु बाँध पैदल करी लें पार,
आ महाबीर सागर के लंघन करी जा ला।

होखे आदर्श सिरीराम जी के लेखा जो,
त्याग राज-साज बनवास करे धारण।
निशिचर विहीन करे भूतल के भार,
पितुराज्ञा से शीत-घाम करके निवारण।
आपन विपत्ति भूल, ओकरा से पहिले जे,
जूझ जाए बालि सँग, मित्रता के कारण।
प्रेम के सुनेम बन, सिंधु लाँघ राह विकट,
बीस बाँह, दस मुख सँग शत्रु करे पारण।

बालपन खेले तऽ हार जाए अनुज से,
कि हौसला बढ़े न कबो हार मुँह देखे वो।
पहिले खिलाय के, सुलाय के ही सूते आप,
राजपद त्याग बन जाए भाई लेखे वो।
करे जो विवाह, चारों भाई सब सँग-सँग,
स्वार्थ, द्वेष, ईर्ष्या तऽ कबहू न सीखे वो,
ऐसो राम बालधीर, कुँअर किशोर वीर
युवा रणधीर इतिहास हू निरेखेवो।।

अंगद के पाँव, हनूमान के हूँ छाँव,
जाम्बवान हूँ के दाँव आ विभीषण के मंत्र बा।
अइसन सुभाव, नेह-छोह के जे बाढ़ बा,
कि दुश्मन आ दोस्त, सँगे एकरंग तंत्र बा।
घोर अपराध कऽ के शरण में आवे तऽ
ऊहो जयंत लेखा भइल स्वतंत्र बा।
तनिक अपवाद से जे पत्नीविहीन होखे,
अइसन इ राजा के साधल संयंत्र बा।

शिव के अनन्य भक्त, भक्तन के भक्त बा जे,
शरणागत लेल जे सदैव सुखधाम बा।
शील, सौंदर्य, शक्ति तीनों के संगम जे,
धीर-वीर, सौम्य भाव, रखितो बलधाम बा।
जुग इ संक्रांतिकाल अइसन बा आइल कि,
सौम्य, वीर भाव युक्त मनुज के काम बा।
सुख-दुख समान, नाहिं तनिको अभिमान,
सर्वगुण के निधान, ऊहे राम अभिराम बा।

लोकाभिराम, रणरंग में उमंग,
बरुण करुणा, क्षमा में जे शिव के स्वरूप बा।
करतार ब्रह्मा, चतुर्भुज सम पालक जे,
अइसन जे इंद्र सम, भूपन के भूप बा।
एक बेर साधे कमान प्राणहारी जे,
बोले दुबारा ना सत्य जे अनूप बा।
सौ करोड़ नाम भले अक्षर जे एक कहे,
एतने में तारे ऊ राम एकरूप बा।

राम राम राम कहीं बात तऽ इहे ह सही,
आ जबले संसार रही, बही रामधार हो।
राम-राम जियतो में, सुंदर प्रणाम भाव,
मुअलो में राम नाम सत्य के अधार हो।
केकरो धिक्कारीं तऽ घृणा करीं राम राम,
राम त जम्हाई आ सपनो के पार हो।
बैठत में राम-राम, ऊठत में राम-राम,

चलत में राम-राम, जीवन के सार हो।
सोवत में राम-राम, जागत में राम-राम,
जोखत में रामे जीराम व्यापार हो,
भोजन में राम, सब प्रयोजन में राम
राम नाम हवे ब्याहन के गीत-जेवनार हो,
गीतन में राम, संगीतन में राम,
सब प्रीतन में रामे के नाम हथियार हो,
सूर के सिपाही, आ तुलसी के स्वामी जे,
कहत कबीर राजा राम भरतार हो।।

परिचय दास

राम

राम :
एगो सकर्मक परिचित आभामय ..अकास..
ई मनुष्यता ह, रहस्य के उत्कृष्टता। इहाँ तक ले कि
हमनी के आत्मा क्षितिजहीन हो जाले आ अथाह दृष्टि में विस्तार पा जाले,
हमनी के देह परा के साधन ह सुखी जीवन जीए के,
हमनी के आत्मा ह अमर प्रकाश के विशाल सूरज।

राम : खाली काव्य व्यक्तित्व के सम्मान में ना, बलुक चेतना के सार के सम्मानो में ! इहाँ प्रत्यक्ष दृष्टि, प्रकाश के पूर्णता, मूल लय आ प्रकटीकरण के सार !!

राम : जवन हमनी के व्यापक आत्म से जुड़ाव हो रहल बा, हमनी के जागल विचार से परे रहस्यमय रास्ता।

राम : जब आत्मा आपन भाषा बोलेले त हमनी के लगे कविता होले। पवित्रता, चेतना, गूढ़ता ले आत्मा आ विधि के भाषा .....।

सहानुभूति आ ईमानदारी के सबसे तीव्रता से, आत्मा में प्रवेश से चमकत प्रकाश से बना देले आत्मीय संदर्भ : माने राम।

रउआँ खाली प्रियतम के राम के रूप में संबोधित करके रहस्य ना हासिल कर सकेनी। आत्मा के लय पर शरीर के ट्यून करे खातिर अधिका सूक्ष्म प्रकृति, अधिका नाजुक स्पर्श, अधिका सूक्ष्म संवेदनशीलता आ एक तरह के कलात्मक जादू जरूरी बा। रहस्य के दूसर पंक्ति एकदम आम बा, यानी कि शरीर के शब्द आ लय में आत्मा के अभिव्यक्ति।

राम में आत्मा के संदर्भ साफ बा : ई प्रधान भा केंद्रीय राग हवे; नाम आ रूप के रूप में, अइसन शरीर के रूप में जवन ठोस, जिंदा आ जीवंत, निकट आ अंतरंग बनावेला जवन अन्यथा अस्पष्ट आ अमूर्त, दूर, अलग-अलग हो सकत रहे। राम-रसायन ठीक एह दुनु के बीच के खेल में बा, दुनु के बीच के लुका-छिपी में. दूसर ओर, जइसन कि हम कहले बानी, वैष्णव कविता के अधिकांश भाग, एगो अमूल्य आ सुन्दर चिता निहन, निस्संदेह आध्यात्मिक महत्व के छिपावेलाः शुद्ध महत्व ना बालुक शानदार तरीका से विस्तारित संकेत अवुरी प्रतीक, उ लोग के अपना पूरा वैभव में अग्रभूमि में राखल गइल बाः जइसे कि ओह लोग के मकसद असली मतलब छिपावल होखे. जब वैष्णव कवि कहेले कि
अरे प्रिय, अउरी का कहब राधा,
काहे कि नश्वर शब्द कमजोर होला?
जिनगी में, मौत में,
अस्तित्व में आ साँस में भी
राधा तोहरा छोड़ के कवनो दोसर देवता के खोज ना कर सकेले।

राम :
जनमे से सुंदरता देखत रहनी ह
तबो हमार आँख बा
जवन संतुष्ट नइखे होखत;
हजारो युग से इंतजार करत रहनी ह, छाती से छाती।
हम कर रहल बानी।

राम : एगो व्यावहारिक आ रहस्यवादी कविता । लउकत आ अदृश्य के बीच। चेतना के अन्य क्षेत्र भा डोमेन पर लागू होखे। राम के अन्याय से प्रतिरोध के रूपक खाली रहस्यवादे ना होला। अइसहीं, वड्र्सवर्थ में, शेली आ कीट्स में , स्पेंसर में रहस्य। वड्र्सवर्थ के प्रकृति-पूजन में। हेब्रिड्स के बीच समुंदर के सन्नाटा तोड़त।
चाहे , वड्र्सवर्थ द पगन
देखल जाय प्रोटियस के समुंद्र से निकरत;
या बूढ़ ट्राइटन के आपन उड़ावल सींग बजावत सुनीं। पवित्र भोर के भजन। रहस्य।
राम महारहस्य। प्रकट आ रहस्य के बीचो बीच।

एक बेर फेरु सुनीं ई सरल, पारदर्शी, बाकिर जीवंत लाइनः
बाकिर जब आत्मा अनन्त काल के अपनावेले त शरीर कइसे खोखला जगह ना लागी?
या ऊ ओतने गहिराह अनुभव से भरल बा, एगो शांत, संग्रहित प्रकाशमान चेतना सेः
साँस पकड़ के हल्ला के दुनिया से बचि गइनी
एकांत में एक तरफ बइठ गइनी
आ सच्चाई के आग में एहसास के अनुभव कइलस, जवन दिल में लय ले आइल।
जब देखनी त बाहरी दुनिया के भीतरी दुनिया के रूप में जानत रहनी। अर्थातः राम।

एह तरी, उहाँ सूरज के रोशनी नइखे, चाँद से कवनो रोशनी नइखे
कवनो चमक नइखे आ तारा आन्हर हो जालें; ऊहाँ
ना बिजली चमकेला, ना कवनो सांसारिक आग। काहें कि जवन कुछ उज्जवल बा उ सब ओकरा चमक के परछाई भर बा
आ ई सब अपना चमक से चमकत बा।
मने : राम।

राम कहलन : दोसरा के छूवे वाला शब्दन के निजता आ प्यार दीं।
रात सुग्घर बा,
त हमरा लोग के चेहरो।
तरई सुन्दर बा,
त हमरा लोग के अँखियो ।
सूरजो सुन्दर बा,
हमरा लोग के आत्मो सुन्दर बा।

हे सपना के देखनिहार, अपना सब सपना, दिल के सब धुन हमरा लगे ले आईं।
हमरा लगे ले आईं, कि हम सगरो लोगन के नील रंग के बादर कपड़ा में लपेट सकीले, दुनिया के बहुते खुरदुर अँगुरी से दूर।

या ई ओतने गहिराह, चकाचौंध करे वाला आ खुलासा करे वाला बाः
जइसे दुनिया में आग घुस गइल बा, बाकिर...
ऊ अपना के ओह रूप में आकार देली जवन ओकरा मिलेला, ओही तरह से सब जीव के भीतर एके आत्मा बा, बाकिर उहे अपना रूप में आकार देला; ईहो एह सब से बाहर के बात बा।

स्वाभाविक रूप से मूल के बात करत बानी, जवन काव्य मूल्य के पूरा न्याय कर सके ऊहे बात होखऽता। काहे कि राम में कवि के व्यक्तिगत प्रतिभा के अलावा भाषा के औजारो शामिल बा। राम में देवता लोग के भाषा तुलनात्मक रूप से आसान आ स्वाभाविक बा, ओकर मतलब मानव भाषा में अगर एकदम असंभव ना होखे त 'टूर डी फोर्स' होखी। संस्कृत भाषा के ढाल आ गढ़ल ऋषि लोग के हाथ में भइल, माने कि आध्यात्मिक चेतना में जियत, घूमत आ जियत। आध्यात्मिक स्वर के संगे ऊ निरपेक्षता जवन भारतीय भाषा में निहित बा, हालांकि ऊ लोग भी आध्यात्मिक माहौल में साँस लिहल आ पलल बढ़ल। राम से जुरल कविता-भाषा धरती के बहुत नजदीक बा आ पृथ्वी के गंध आ बहाव से भरल बा।

राम : एक वैज्ञानिक स्वर। रचना के एगो टोन, एगो मन के ऊंच, महानायक, दीठ संपन्न अलग, तपस्वी। एगो उच्च प्रकाश, चेतना के एगो शक्ति ...

राम : तीव्रतामय काव्यमय कंपन। एगो बड़हन विचार-शक्ति, एगो करुणामय धारणा, एगो तीव्र तंत्रिका संवेदन–भीतरी वास्तविकता सभ के साथ होखे के पहिचान।

राम : तत्त्वमीमांसा से आगे अलग से समूहबद्धता। आश्चर्यजनक अभिमान आ कल्पनाशीलता से भरल। राम-मनः बिसेसता से चिंतनशील, अंतर्निरीक्षणात्मक - "**अंतर्मुखी**"; भौतिकी आ तत्त्वमीमांसा से आगे।

राम : धारणा, अनुभव, एहसास झ चाहे ऊ कवनो क्रम भा दुनिया के होखे झ संवेदनशील आ सौंदर्य शब्द आ आकृति में व्यक्त कइल, कविता के परिचित रूप से जानल आ सराहल होला। बाकिर बढ़त जिद के साथे एगो नया मोड़।

राम : एक काव्य-अनुभव एक शांत आ धवल अभिव्यक्ति, एगो निश्चित आ मजबूत सूत्रीकरण । सभ अनुभव आ भावना के तर्कसंगति । जीवन के संघर्ष के मूल मंत्र। तर्क आ तर्कसंगतता परम भा अंतिम भा महत्वपूर्ण वास्तविकता ना ह, कि हमनी के चेतना में तर्कहीन भा अवचेतन के बड़हन भूमिका होला आ कला आ कविता भी एही मानसिकता के अभिव्यक्ति होखे के चाहीं, तबो ई सब बा कहल आ कइल एगो तर्कसंगत आ बौद्धिक तनाव आ रूपरेखा के माध्यम से कइल गइल, जइसे कि पुरान दुनिया के स्पष्ट रूप से गैर-बौद्धिक लेखन में ना मिल सके।

राम : विश्लेषणात्मक शक्ति, पद्धति में रचनात्मक चेतना। एगो रोचक कथा : जवना के एगो महत्वपूर्ण भूमिका बाः शुद्धि, उदात्तीकरण, कैथरिस। जइसे-जइसे आदमी अपना खास भा मुख्य रूप से महत्वपूर्ण स्वभाव से ऊपर उठत जाला आ मानसिक संतुलन के ओर बढ़त जाला, ओकर रचनात्मक गतिविधि भी ई नया मोड़ आ स्थिति ले लेले बा। बिकास के सुरुआती दौर में मानसिक जीवन गौण होला, शारीरिक-महत्वपूर्ण जीवन के अधीन होला; एकरा बाद ही मानसिक के एगो स्वतंत्र आ आत्मनिर्भर वास्तविकता मिलेला। अइसने गतिशीलता काव्य आ कलात्मक सृजन में : विचारक, दार्शनिक शुरू में पृष्ठभूमि में रहेला, ऊ बाहर देखेला; बीच-बीच में दरार आ छेद से झांकल; बाद में ऊ सबसे आगे आवेलें, आदमी के रचनात्मक गतिविधि में प्रमुख भूमिका निभावेलें।

राम , मने ,आदमी के चेतना के मानसिक क्षेत्र से अतिमानसिक क्षेत्र में जाए के पड़ेला। एह हिसाब से उनकर जीवन आ गतिविधि के साथे-साथे उनकर कलात्मक रचना एगो नया सुर आ लय, एगो नया साँचा आ शैली ले लिहलें : राम।

राम : शुद्ध आ विस्तार , उच्च, व्यापक आ गहिराह वास्तविकता के एगो व्यापक फ्रेम, अधिका चमकदार पैटर्न, अधिका महीन रूप से व्यक्त रूप , सच्चाई आ सामंजस्य के मुखर करे आ व्यक्त करे खातिर। एगो रोशनी जवन प्राकृतिक रूप ह । साधारण आ पारलौकिक के बीच कवनो ना कवनो तरह के प्रत्यक्ष आ अप्रत्यक्ष शुद्ध कविता,एक शुद्ध शब्द। आचरण के एगो उदाहरण। वाल्मीकि एगो अउरी प्राचीन आ आदिम प्रेरणा, एगो बड़हन आलोचनात्मक संवेदना के प्रतिनिधित्व करत । रहस्य के कुछ अइसने जवन होमर के प्रतिभा के आधार । ग्रीस में ई सुकरात रहलें जे अनुमानित दर्शन के आंदोलन के सुरुआत कइलें आ बौद्धिक शक्ति पर जोर दिहल धीरे-धीरे बाद के कवि लोग, सोफोक्लस आ यूरिपिड्स में अभिव्यक्ति मिलल।

वाल्मीकि नारद से पूछलन कि का एह संसार में कवनो अइसन व्यक्ति बा जे हमेशा सच बोले, धर्म जानत होखे आ ओकर पालन करे, वीर्य से भरल होखे आ हर तरह के गुण से संपन्न होखे।

राम के निहितारथ : आदमी के पहिले के व्यस्तता धार्मिक रहे; दुनिया आ सांसारिक चीजन के चिंता करत घरियो ऊ परलोक में, देवी-देवता के बारे में, परलोक के बारे में आ अउरी जगहन पर एह सब के बारे में सोचत रहले। परिष्कार आ विकास के प्रक्रिया से गुजरल रहित। हालांकि धर्म दुनिया से परे भा पीछे के सच्चाई आ वास्तविकता के आकांक्षा ह बाकिर ई आदमी के वास्तविक सांसारिक स्वभाव से बहुते जुड़ल बा आ हमेशा अपना साथे अशुद्धि के परछाई ले के

चलेला।

धार्मिक कवि सांसारिक कलंक के कम कइल भा ढंकल चाहत बाड़न, काहे कि ओकरा ओकरा के पूरा तरह से पार करे के तरीका नइखे मालूम, दू तरह सेः एगो मजबूत विचार-तत्व से, आध्यात्मिक तरीका से, जवना के कहल जा सकेला आ दूसर एगो मजबूत प्रतीकात्मकता से, गुप्त तरीका से। धार्मिक के रहस्यवादी कवि में बदल देला। सही मायने में आध्यात्मिक, जइसन कि हम कहले बानी, अबहियों चेतना के एगो उच्च स्तर बाः जवना के हम आत्मा के आपन कविता कहत बानी ओकर आपन पदार्थ आ तरीका बा झ प्रकृति आ स्वधर्म।

राम : पार्थिवता से अछूता आकाश-प्रकाशित आनंद!
ऊपर से नीचे तक धनुष, .
प्रकृति - ऊ अजन्मा प्रकाश जवना के कवनो सोच पता ना लगा सके,
एगो परिचित चमक से हमार मिजाज भर दीं।
माटी के मुँह से हम निहोरा करत बानीः
हमरा से दिल से दिल तक अंतरंग शब्द बोलीं,
आ तोहार सब निराकार महिमा प्रेम में बदल जाई
आ राउर प्यार के इंसान के चेहरा में ढाल दिही।
राम : आध्यात्मिकता आ पदार्थमय तरीका के बीचोबीच पूर्णता
उनकर आत्मा अनन्त काल से घुल-मिल जाला
आ अनंत के मौन के बीच ।
नश्वर विचार से पाछे हटला में,
आत्म-दृष्टि के एकलता में,
ओकरा के राहहीन ऊँचाई पर ले जाइल जा रहल बा,
मानवता के अपना साधन से ।
समाधि के अध्वनि ऊँचाई में जागत एगो आँख।

राम के शक्ति खाली रहस्यमय से बेसी कुछ ह। हमनी के अनंत के जादू । प्राचीन शुद्धता आ सिद्धता में, अनिवार्य सादगी में अभिव्यक्ति।

राम : शुद्ध आ विस्तृत रूप में, उच्च, व्यापक आ गहिराह रूप में अहंकारहीनता के वास्तविकता के चौड़ा फ्रेम, अधिका चमकदार पैटर्न, अधिका महीन । व्यक्त- अव्यक्त के मध्य । सत्य आ सामंजस्य खातिर रूप , स्वर आ संगीत। एह अर्थ में कि ई रोशनी अक्सर आवेला स्वाभाविक रूप से। ऊ एकरसता से हट के साधारण आ अलौकिक के बीच कवनो ना कवनो तरह के प्रत्यक्ष आ तत्काल संपर्क स्थापित करे के कोशिश कइलन।

प्रतीकात्मकता के साथ। चेतना के उच्च स्तर । राम के रूप में हमनी के आत्मा के आपन कविता हई जा, आपन पदार्थ आ तरीका हई जा - प्रकृति आ आत्मधर्म हई जा।

राम : बालू के दाना में अहंकारहीनता के दुनिया बने के फूलन में चित्रात्मकता,
काल के हथेली में एक पल में अनंत के पकड़ लीं।

राम : पार्थिवता से अछूता आकाश-प्रकाशित आनंद!
ऊपर से नीचे ले
प्रकृति-पुरुष- अजन्मा प्रकाश, जवना के विचार के पता ना चलल , नाहियो चल पावल,
ऊ ज्योति हमनी के चित्त में एगो परिचित चमक से भर दिहलस।
दिल से दिल ले अंतरंग शब्द ,
मने हृदय प्रेम में बदल गइल।
राम के अर्थ : आत्मा अनन्त काल में घुल-मिल गइल मौन के स्वीकृति में आत्म-दृष्टि के एके चितवन में
इंसानियत के दृष्टि।

राम :
दीया के बाती के मुस्कान
सत्यसन्ध
सार्थक गहिर अर्थ
शिला तोरि के बहि के आवेले
एगो सभ्यता के नदी
राम के धवल जल।

भाषांतर / मैथिली कविता

सीता दाइ क सासुर सं

सीता दाइ क सासुर सं
आयल समाद अछि
दिन पुरलनि
दोसर बनवास क
रामकथा मे।

ओ बनवास रहनि
ससुर क वरदान देला सं
ई बनवास भेलनि
अनदिन खरमास भेला सं
हरलनि सभ संताप
जनक केर, धनुष तोड़िकें
जीवथि पुरुषोत्तम
इतिहास क रामकथा मे।

कास फुलायल
अवधपुरी सं जनकपुरी धरि
उजरल उपटल डीह
कठहंसी हंसय नोरायल
कलि क अछांही सं निकसल
रघुकुल **मर्यादा**
अंकुरी नया खसल
घरवास क रामकथा मे।

समय पाबि तरुवर फरलै अछि
सरजू तट पर
छाड़ि टटघरा दुःख क
राम बनौता नव घर
देव उठाओन पाबनि संग
करतार क पाबनि
धात गाछ फरल
उपवास क रामकथा मे।

महासिंधु पर सेतु बनल
जिनका प्रताप सं
वैह रमापति राखथि
कर्म क त्रिविध ताप सं
ग्रह कें गृह मे परिवर्तन
जे आइ भेलै अछि
शांतिपर्व से, अभिनव
व्यास क रामकथा मे।

भाषांतर / मगही कविता

श्रीराम आहो

दीप जलाके बैठल हिओ श्रीराम आहो,
खीर बनाके बैठल हिओ श्रीराम आहो।

चौदह वर्ष अँधेरा में काटलहो तो कैसे
कैसे सूत पैल्हो जमीन पर जे बतलाहो
की डर नै लग हेलो तोरा अंधार रातन में
कैसे कंद खाके रह पैल्हो जे बतलाहो
आँख बिछा के बैठल हिओ श्रीराम आहो।
दीप जलाके बैठल हिओ श्रीराम आहो।।

हियाँ अयोध्या भी तोरा बिन बीरान हेलो ऐसे
जैसे शरीर में जान नै हेलो की बतलइयो
तोरा भले लगा होतो की तोरा भूल गेलिओ हम
हर पल तोरे याद में कटलिओ की बतलइयो
द्वार सजाके बैठल हिओ श्रीराम आहो।
दीप जलाके बैठल हिओ श्रीराम आहो।।

राम पर लोकप्रिय लोकगीत

राम पर अइसन बहुत सारा गीत बा जवन जनम से लेके मरण तक, बियाह-शादी से लेके पूजा-पाठ ले सदियन से गवाता। ओकर गीतकार के बा, पता नइखे। इहाँ दू गो लोकप्रिय गीत दिहल जा रहल बा। बहुत सारा गायक लोग ई लोक गीत गवले बा, गावत बा। एकनियो के गीतकार के नाम पता नइखे। अगर केहू प्रमाण के साथे गीतकार के नाम बताई त आगे के अंक में प्रकाशित कर दिहल जाई- **संपादक**

आज मिथिला नगरिया निहाल सखिया

आज मिथिला नगरिया निहाल सखिया,
चारों दूल्हा में बड़का कमाल सखिया॥

माथेमडी मोरिया कुंडल सोहे कनुआ,
कारी कारी कजरारी जुल्मी नयनवा,
लाल चंदन सोहे इनके भाल सखियां,
चारों दूल्हा में बड़का कमाल सखिया॥

श्याव श्याव गोरे-गोरे जुड़िया जहान है,
अखियो ने देखली हा सुनली हा कान है,
जुगे जुगे जोड़ी जिए बेमिसाल सखिया,
चारों दूल्हा में बड़का कमाल सखिया॥

गगन मगन आज मगन धरतीया,
देखी देखी दूल्हा जी के सांवरी सुरतिया,
बाल वृद्ध नर नारी सब बेहाल सखियां,
चारों दूल्हा में बड़का कमाल सखिया॥

जेकरा लागी जोगी मुनि जप-तप कइलन,
से ही हमरा मिथिला में ही हमरे भइलन,
आज लोढ़ा से सैकाई इनकर गाल सखियां,
चारों दूल्हा में बड़का कमाल सखिया॥

आज मिथिला नगरिया निहाल सखिया,
चारों दूल्हा में बड़का कमाल सखिया॥

राम पर लोकप्रिय लोकगीत

राम पर अइसन बहुत सारा गीत बा जवन जनम से लेके मरण तक, बियाह-शादी से लेके पूजा-पाठ ले सदियन से गवाता। ओकर गीतकार के बा, पता नइखे। इहाँ दू गो लोकप्रिय गीत दिहल जा रहल बा। बहुत सारा गायक लोग ई लोक गीत गवले बा, गावत बा। एकनियो के गीतकार के नाम पता नइखे। अगर केहू प्रमाण के साथे गीतकार के नाम बताई त आगे के अंक में प्रकाशित कर दिहल जाई- **संपादक**

होलिया खेले राम लला

सिया निकली अवधवा की ओर होलिया खेले राम लला।
रामलला हो भगवान लला।
सिया निकली अवधवा की ओर होलिया खेले राम लला।

केकर राम केकर हो लक्ष्मण, केकर हो, केकर बाबू भरत लला,
होलिया खेले राम लला।
रामलला हो भगवान लला।
सिया निकली अवधवा की ओर होलिया खेले राम लला।

कौशल्या के राम सुमित्रा के लक्ष्मण, कैकेई के हो, कैकेई के भरत हो लाल,
होलिया खेले राम लला।
रामलला हो भगवान लला।
सिया निकली अवधवा की ओर होलिया खेले राम लला।

केकर हाथ कनक पिचकारी, केकर हाथ अबीर, होलिया खेले राम लला।
रामलला हो भगवान लला।
सिया निकली अवधवा की ओर होलिया खेले राम लला।

राम के हाथ कनक पिचकारी, सिया जी के हो, सिया जी के हाथ अबीर,
होलिया खेले राम लला।
रामलला हो भगवान लला।
सिया निकली अवधवा की ओर होलिया खेले राम लला।

राय यशेन्द्र प्रसाद, उमेश कुमार पाठक 'रवि', डॉ. शंकर मुनि राय, चंद्रेश्वर, दिनेश पाण्डेय, डॉ. कादम्बिनी सिंह, डॉ. अशोक द्विवेदी, भगवती प्रसाद द्विवेदी, ऋचा वर्मा, डॉ. सुनील कुमार उपाध्याय

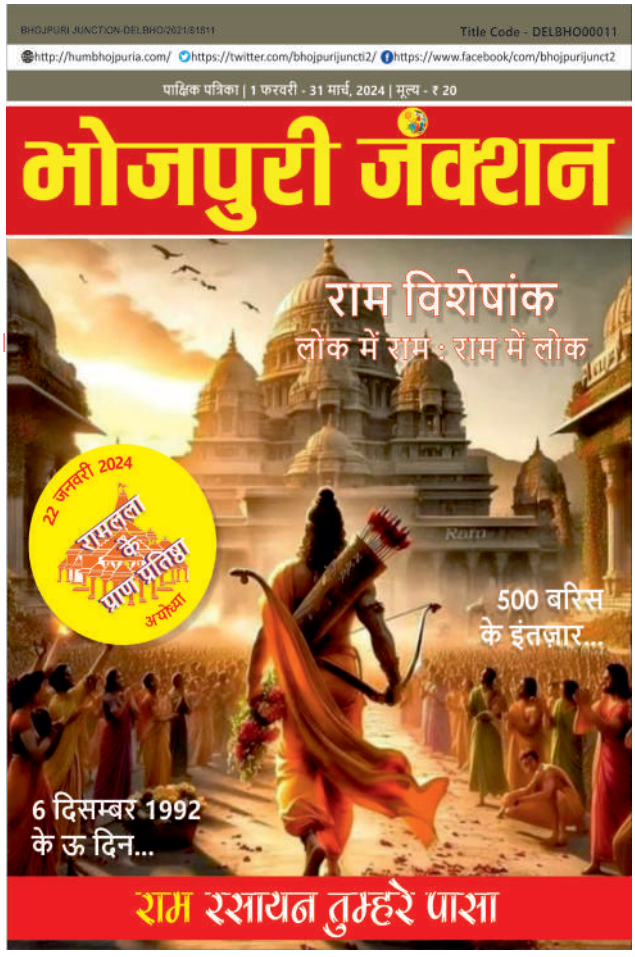

हर अंके दुर्लभ विशेषांक होखत बा ...

माननीय संपादक जी,

राम जी पर निकलल गद्य अंक पढ़ के मन अइसन भाव-बिभोर हो गइल ह जेकर बरनन कइल मस्किल बा। इ अइसन संग्रह ह जे परिवार के अब धरोहर हो गइल बा। एकरा के प्रिंट करा के मढ़ा के रखे के जरूरत बा जे हमनी के आवे वाला संतति के पढ़े के मिलो। तबे त संस्कृति के मूल्य बाचल रही।

एहिसे रऊआ सभन से निहोरा बा कि पत्रिका के असली कागज पर छपल प्रतिओ उपलब्ध करावे के बेबस्था राखे के इंतजाम होखो। हर अंके दुर्लभ विशेषांक होखत बा जेकरा के वास्तविक रूप से सहेज के राखल भोजपुरी समाज खातिर बहुते जरूरी बा। अब त प्रिंट ऑन ऑर्डर तकनीक भी उपलब्ध बा जेकरा मार्फत अइसन कइल संभव बा। एहपर धेआन दीहल जाव। जादे सुभ.....
जै रामजी के !

राय यशेन्द्र प्रसाद, फिल्मकार
अन्वेषक आ शिक्षाविद्, गोपालगंज (बिहार)

ई अंक भोजपुरी के एगो थाती बा

आदरणीय भावुक जी,

सादर नमस्ते,

भोजपुरी जंक्शन के 'राम विशेषांक' बहुत बढ़िया ढंग से प्रकाशित भइल बा। असल में ई अंक भोजपुरी के एगो थाती बा। एम्मे भोजपुरी मनीषीन के भरपूर श्रम आ आसिरबाद साफ लउकत बा। सफल आ सबल विशेषांक खातिर आपके (संपादक के) विशेष साधुवाद पहुँचे।

उमेश कुमार पाठक 'रवि',
आईटीआई रोड, चरित्रवन, बक्सर, बिहार

सब भोजपुरिया पत्रिकन में अइसने सामग्री छापे के प्रयास होखे के चाहीं

बहुत बढ़िया अंक। देख के मन खुश हो गइल। बहुत बढ़िया सामग्री आ ओइसने आकर्षक छपाई।

भोजपुरी पत्रकारिता में राम पर आधारित साइत ई पहिला विशेषांक ह। सब भोजपुरिया पत्रिकन में अइसने सामग्री छापे के प्रयास होखे के चाहीं।

रउरा मेहनत के प्रनाम!

डॉ शंकर मुनि राय, वरिष्ठ साहित्यकार, छत्तीसगढ़

'भोजपुरी जंक्शन' भोजपुरी लोक से गहिरारे जुड़ल पत्रिका बिया

'भोजपुरी जंक्शन' (फरवरी-मार्च, 2024) के राम पर केंद्रित अंक के संपादन बहुत सुंदर तरीका से भइल बा। मनोज भावुक के संपादन में निकले वाली ई पत्रिका अपना हर सामान्य आ विशेष अंक के साथे एगो नया मानक गढ़ रहल बिया। संपादक कवि-गीतकार मनोज भावुक के पास पत्रिका के संपादन के हर तरह के हुनर दिखाई पड़ रहल बा। केवनो विशेषांक में केवन-केवन लेखक से लेख लिखवावल जाई, कइसे लेखक प दबाव बनावल जाई, केवना लेखक के केवन तरतीब में रखे के बा, केवन लेख के कइसे प्रस्तुत करे के बा-एह सब के बेहतर से बेहतर समझ एकर संपादक मनोज भावुक के पास बा। ऊ निरंतर 'भोजपुरी जंक्शन' के माध्यम से भोजपुरी के आनलाइन साहित्यिक पत्रकारिता में एगो नयकी मिसाल कायम करि रहल बाड़न। मनोज भावुक के 'भोजपुरी जंक्शन' एगो आंदोलन के रूप ले रहल बा। एकरा प्रकाशन से एने तीन-चार साल के भीतर समकालीन भोजपुरी साहित्य में एगो नया माहौल पैदा भइल बा। 'भोजपुरी जंक्शन' भोजपुरी लोक से गहिरारे जुड़ल पत्रिका बिया, एह से एकर हर अंक में भोजपुरी समाज, संस्कृति के मर्म के सामने ले आवे के कोशिश दिखाई परेला। 'भोजपुरी जंक्शन' के संपादकीय दृष्टिकोण (दीठि) के भीतर समकालीनता, आधुनिकता आ परंपरा के समावेश दिखाई परेला। ऊ लोक जीवन के भीतर पइसल आस्था प नजर रखले बा त दोसरा ओर आधुनिक ज्ञान-विज्ञान आ तार्किकता के भी आपन सोझा से हटे नइखे देत। एही दीठि के परिणाम बा श्री राम प केन्द्रित अंक। मनोज भावुक के आपन रचनाशीलता होखे भा जीवन जिए के ढंग भा उन्हुकर संपादन कला- सबमें लोकप्रियता अर्जित करे के एगो अजगुत गुन बा। हम उन्हुकर एह करिश्माई व्यक्तित्व के जरूर प्रशंसक हो सकीला। हमार शुभकामना उन्हुका संगे बा।

चंद्रेश्वर, वरिष्ठ साहित्यकार, लखनऊ

भोजपुरी खातिर अइसने उत्जोग-जतन के दरकार बा

सोस्ती सिरी।
सुहृद मनोज जी,

राम पर केंद्रित 'भोजपुरी जंक्शन' के अंक देख के मन सुखद अहसास से भर गइल। तयशुदा विषय में एके जगह भरखर सामग्री भेंटलि। ईहो कि आम से लेके खास तक, भोजपुरी जनमानस राम से कबो बिमुख ना रहल, एह बात के तस्दीक पोख्ता भइल। दुनिया गुन-दोसमय ह त कवनो चीज प एके नजरिया होखल संभव नइखे। दृष्टि के बिकार कुछ-के-कुछ देखे प बेबस क देला। "राम कवनों संकीर्ण विचारधारा में नइखीं बंधल। राम भारत के प्राण-शक्ति हईं।" श्री आर० के० सिन्हा जी के ई कथन एगो अइसन तथ्य ह जेकरा के उल्हा ना सिद्ध कइल जा सके।

भोजपुरी लोकमन में, तेकर सुख-दुख में, सरबस चाहना में, आपसी आचार-बेवहार में, जीवन के परोजन के तलाश में, सगरे राम के आदर्श सबसे ऊपर रहल एकर पड़ताल करत भगवती प्रसाद दविवेदी जी, डॉ प्रेमशीला शुक्ल जी, डॉ संध्या सिन्हा, डॉ यश्वी मिश्रा आलेखन से पूरा परिदृश्य आँखि के सोझे भ गइल। चन्द्रेश्वर जी के 'भारतीय काव्य में राम के महानायकत्व' आ जयकान्त सिंह 'जय' जी के 'राम काव्यपरंपरा में मानस' साहित्य के अध्ययन-अनुशीलन करे वाला लोगन्ह खातिर भरपूर सामग्री उपलब्ध करावेवाला आलेख बाड़ें। डॉ ब्रजभूषण मिश्र जी के आलेख 'भोजपुरी साहित्य में श्रीराम' एह लोकभाषा के एक सुदीरघ अनुशीलन, बारीक परेखन आ निकट से देखे ना बलु ओह में शरीक रहला के निजी अनुभव से उपजल चीज ह, जवन धरोहर 'कटेगरी' के चीज बा।

केकर-केकर बखान कइल जाव? मजिगर जुटान कइले बानीं। अइसने उत्जोग-जतन के दरकार बा। एह नेक काम बदे रउआ के अनेकन साधुवाद,

दिनेश पाण्डेय, वरिष्ठ साहित्यकार, पटना

गागर में सागर

भोजपुरी जंक्शन के 'राम जी विशेषांक' पर आइल पहिलका भाग पढ़ लेनी। सांचो सम्पादकीय 'राम रसायन तुम्हरे पासा' पढ़ के हृदय विह्वल हो गइल ह आ राम जी के आभा में अपना के भुला के एगो पृथक लोक में विचरन कर रहल बा। धन्य बा ऊ लेखनी जे राम जी के महिमा रच देले। आगे आदरणीय भगवती प्रसाद द्विवेदी जी के 'लोक में रामः राम में लोक' पढ़ के बहुते अलग अनुभव भइल ह। एक से बढ़के एक आलेखन के पढ़ के दिमाग एगो नवीन ऊर्जा से भर रहल बा। आदरणीय चंदेश्वर सर के आलेख में निराला जी के राम की शक्ति पूजा के सुंदर व्याख्या पढ़ के अउरी आगे पढ़े खातिर आंख चमक जाता। सांचो राम जी के ई विशेषांक उदास निराश मन में आस जगावे वाला साबित होई। आदरणीय मनोज भैया के कहानी के प्लॉट सहेज लेले बानी मने मन! हमरा आदरणीय विनय बिहारी सर आ आदरणीय उदय नारायण सर जी के आलेखन में का जाने काहे खास मरम बुझाइल ह आ ओहसे स्वयं के जोड़ पावतानी! सब कुछ बेहतरीन बा ह अंक में। अंत में इहे कहेम कि संयम, प्रेम, सदाचार, शिष्टाचार आ दुनिया में जेतने सत्कर्म बाड़ें ओकर साक्षात प्रतिमूर्ति भगवान राम जी हंई। उनकर ई विशेष अंक जे पढ़ ली ओकरा सही अर्थ में गागर में सागर भेंटाई। राम जी के सदा जय!

डॉ. कादम्बिनी सिंह, शिक्षिका, कवयित्री, बलिया

सामयिक, सन्देशपरक आ सुन्दर सम्पादकीय

बढ़िया संपादकीय लिखाइल बा। आजु का सन्दर्भ में, ललित विचारपूर्ण आ प्रासंगिक बा। अइसन सामयिक आ सोद्देश्य लिखाव, त केहू के नीक लागी। समय के मांग इहे बा।
स्नेह आ शुभकामना।

डॉ. अशोक द्विवेदी, संपादक, पाती, बलिया, उत्तर प्रदेश

एह से बढ़िया संपादकीय होइए ना सकेला

अद्भुत अंक। श्रीराम पर अतना बहुआयामी आ नूतनता से ओतप्रोत एगो इतिहास रचेवाला विशेषांक। एह अभिनव संपादन खातिर हमार बधाई आ शुभकामना! लालित्य आ काव्यात्मकता से सराबोर रउरा एह सारगर्भित संपादकीय में सउँसे जिनिगी आउर जीवन शैली समेटा गइल बा। बूनी में समुंदर भर देले बानीं। एह से बढ़िया संपादकीय होइए ना सकेला। आनंदित करत चिंतन के दुआर खोल देले बानी।

भगवती प्रसाद द्विवेदी, वरिष्ठ साहित्यकार, पटना

मनोरंजन और जानकारी से भरपूर अंक है भोजपुरी जंक्शन का राम विशेषांक

बहुत ही प्रतिभाशाली संपादक मनोज भावुक जी के परिश्रम का प्रतिफल भोजपुरी जंक्शन का राम विशेषांक एक सुखद अनुभूति की तरह मेरे मोबाइल के स्क्रीन पर अपनी उपस्थिति दर्ज कर रहा है। संपादकीय 'राम रसायन तुम्हरे पासा' राम की महिमा, उनके संघर्ष से लेकर 22 जनवरी 2024 को अयोध्या में उनकी मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा समारोह तक को बड़े मनोरम ढंग से प्रस्तुत करती है। इसी राम मंदिर के निर्माण का जश्न मनाते 'सुनी सभें' कॉलम में आर के सिन्हा जी कहते हैं कि 'इ बदलत भारत के प्रतीक ह..।' लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकार भगवती प्रसाद द्विवेदी जी ने 'लोक में राम, राम में लोक', डॉ संध्या सिन्हा जी ने 'ललना बाजे लागल...' , डॉक्टर मन्नू यादव 'कृष्ण' जी ने 'बिरहा में राम', प्रेमशीला शुक्ल जी ने 'लोक में राम' में बहुत से लोकप्रिय दोहों, कजरी, फगुआ एवं अन्य लोकगीतों को उद्धरित कर पाठकों को भाव विभोर कर दिया है। डॉ ब्रजभूषण मिश्र जी और उदय नारायण सिंह जी ने अपने आलेखों में भोजपुरी समाज और भोजपुरी भाषा का राम के साथ के संबंध को बहुत ही संगीतमय ढंग से प्रस्तुत किया है। चंदेश्वर जी ने 'भारतीय काव्य में राम के महानायकत्व, डॉ यश्वी मिश्रा जी ने 'कबीर, तुलसी आ लोक के राम', रवि नंदन सिंह जी ने 'भारतीय संस्कृति कऽ आधार..' अमित दुबे जी ने 'हमनी के राम' आलेखों में हमारे वेदों, विभिन्न रामायणों, विभिन्न भाषाओं के काव्यों में एवं विभिन्न कवियों की दृष्टि में राम के वर्णित चरित्र पर व्यापक प्रकाश डाला गया है और इसी कड़ी में सबसे महत्वपूर्ण है एस .डी .ओझा जी का आलेख 'मा निषाद प्रतिष्ठां शाश्वती समाः' जिसमें विभिन्न प्रकार के रामायणों जिसमें फारसी में अनुवादित रामायण और आदि कवि वाल्मीकि के श्लोक को उद्धरित किया गया है ने इस पत्रिका को केवल पठनीय ही नहीं बल्कि संग्रहणीय भी बना दिया है। विनय बिहारी सिंह जी, मंजूश्री जी अपने आलेखों ने (जिसमें मेरा भी एक आलेख शामिल है) 'राम' नाम की महिमा पर प्रकाश डाला है। इसके अलावा भी राम के कितने रुप है लोगों के मानस में बंगाल के राम कैसे हैं, कैकयी के राम कैसे हैं, राम से रामलीला है जो सार्वदेशिक हो चुका है, राम से रामराज है, जिसकी चाहत हम सबके दिल में है, सब कुछ है इस पत्रिका में। इस पत्रिका में एक मगही भाषा के आलेख को भी स्थान देकर संपादक जी ने इसकी व्यापकता को विस्तार दिया है। साथ ही फिल्मों ने राम को किस तरह दशार्या है, विषय पर लिखकर मनोज भावुक जी ने इस पत्रिका को केवल बुद्धिजीवी या भक्ति रस में डूबे पाठकों को ही नहीं बल्कि वैसे लोग जिन्हें केवल फिल्मों से मनोरंजन प्राप्त होता है, के लिए भी कुछ सामग्रियां प्रस्तुत कर दी हैं। और अगर एक ही विषय पर पढ़ते पढ़ते आपको एक ब्रेक की जरूरत हो तो पढ़ लीजिए मनोज भावुक जी की कहानी 'कहानी का प्लॉट', एक हिंदू लड़के और मुस्लिम लड़की की प्रेम कहानी। यह कहानी है या हकीकत, कहना मुश्किल लगता है जैसे कि यह कहना की राम हकीकत हैं या फसाना।

ऋचा वर्मा, वरिष्ठ साहित्यकार, पटना

राम विशेषांक अनमोल अंक बा

पाक्षिक पत्रिका भोजपुरी जंक्शन के राम विशेषांक पढ़ के मन गदगद हो गइल। एह पत्रिका के संपादक भोजपुरी के गौरव आदरणीय मनोज भावुक जी सम्पादकीय में बड़ी नीमन प्रकाश डलले बानीं। बहुत गूढ़ बात सम्पादक जी लिखले बानीं कि जीवन रट्टामार उत्तर से ना चले, विचारपूर्ण चेतना से चलेला। संगीत सा (सोहर) से शुरू होला आ नि (निर्गुण) पर खतम होला। सगरी रामे राम बा।

राम रसायन जे भी खाई
रोग शोक ना पंजरा आई।

रामजन्म भूमि पर मंदिर निर्माण से भारतीय संस्कृति में नया अध्याय शुरू हो गइल। पूरा विश्व राममय हो गइल। आदरणीय ब्रजभूषण मिश्र जी के ई कहल बड़ा महत्वपूर्ण बा कि त्रिभुज के भीतर के भोजपुरिया इलाका अवध आ मिथिला दूगो संस्कृतियन के मेल करावे के काम कइले बा।

गवनई के हर विधा जईसे फगुआ चईता विरहा सोहर झूमर खेलवना सब में रामजी के वर्णन बा। डा.संध्या सिंहा जी एपर प्रकाश डलले बानीं। डा.जयकांत जी भोजपुरी आलोचना के पहिलका मानक ग्रंथ पर विप्र जी के माध्यम से ध्यान आकर्षित कइले बानीं। अपना देश के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा.डी एस कोठारी जी पटना सायंस कालेज में अपना भाषण के दौरान तुलसीदास जी के सापेक्षिक सिद्धांत ज्ञान पर चर्चा कइले रहनीं। भगवान निरपेक्ष हई बाकी सब सापेक्ष।

रघुबर छवि के समान
रघुबर छवि बनीयां

कहे के मतलब कि रघुबर के तुलना केवल रघुबर से ही हो सकेला। कुल मिलाके ई अंक अनमोल रहल। उदय नारायण सिंह जी के सउनाईल शब्द खांटी भोजपुरी बा। अंत में आदरणीय मनोज भावुक जी आ पूरी टीम के साधुवाद। शुभकामना। असहीं साफ सूथर भोजपुरी परोसत रहीं।

डॉ. सुनील कुमार उपाध्याय, पूर्व प्राचार्य सह विभागाध्यक्ष भौतिकी, एल.पी.शाही कालेज पटना

हम भोजपुरिआ के सफर

पढ़ीं भोजपुरी

लिखीं भोजपुरी

बोलीं भोजपुरी

हम भोजपुरिआ के सफर

पढ़ीं भोजपुरी

लिखीं भोजपुरी

बोलीं भोजपुरी

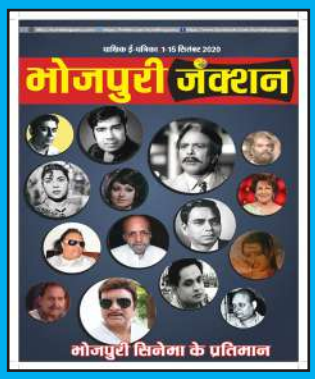
मोजपुरी जंक्शन
भोजपुरी सिनेमा के प्रतिमान

मोजपुरी जंक्शन
भोजपुरी सिनेमा के कलाकार

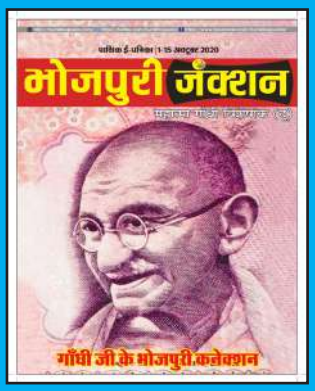
मोजपुरी जंक्शन
गाँधी जी के भोजपुरी कनेक्शन

मोजपुरी जंक्शन
लोक परंपरा में माई

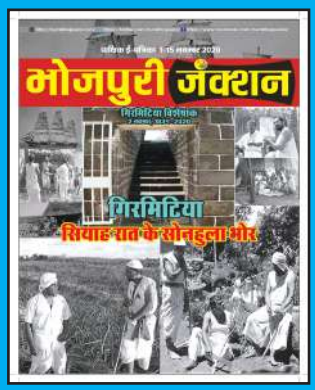
मोजपुरी जंक्शन
गिरमिटिया
सियाह रात के सोनहुला भोर

मोजपुरी जंक्शन
दिवरी-बाती अउर छठ विशेषांक
उगी हे दीनानाथ...

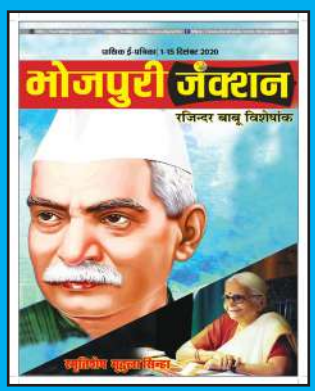
मोजपुरी जंक्शन
रजिन्दर बाबू विशेषांक

2021
मोजपुरी जंक्शन
भईया के मुँह से फूटे संगीत
भउजी के कंगना से खनके ताल
अखिल विश्व में सभे रहे खुशहाल
शुभ हो, मंगलमय हो नयका साल

मोजपुरी जंक्शन
गांव से खिचड़ी लाइव

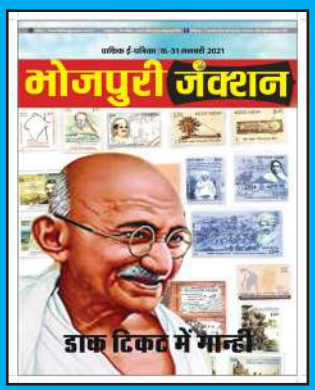
मोजपुरी जंक्शन
डाक टिकट में गान्ही

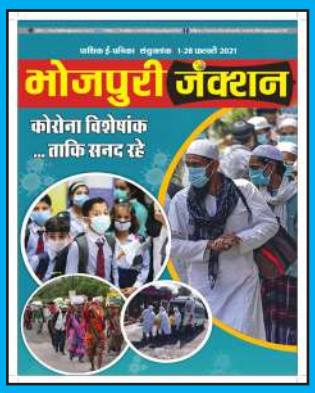

पाक्षिक ई-पत्रिका संयुक्तांक 1-28 फरवरी 2021
भोजपुरी जंक्शन
कोरोना विशेषांक
... ताकि सनद रहे

पाक्षिक ई-पत्रिका 1-15 मार्च 2021
भोजपुरी जंक्शन
एगो कोरोना रहे...

पाक्षिक ई-पत्रिका 16 मार्च-15 अप्रैल 2021
भोजपुरी जंक्शन
होली विशेषांक
फगुनाहट हऽ कि कोरोनाहट

पाक्षिक ई-पत्रिका 16-30 अप्रैल 2021
भोजपुरी जंक्शन
चइता विशेषांक
हम काटब गेहूं
गोरी कटिहऽ तू मुसुकी

पाक्षिक ई-पत्रिका 1-15 मई 2021
भोजपुरी जंक्शन
कोरोना काल
का आदमी के आदमी बना सकी?

पाक्षिक ई-पत्रिका 16-31 मई 2021
भोजपुरी जंक्शन
कोचिंग से बेसी
'सोचिंग' के जरुरत बा

पाक्षिक ई-पत्रिका संयुक्तांक 1-30 जून 2021
भोजपुरी जंक्शन
माई-बाबूजी विशेषांक
पानी प पानी लिखे के कोशिश

पाक्षिक ई-पत्रिका संयुक्तांक 1-31 जुलाई 2021
भोजपुरी जंक्शन
माई-बाबूजी विशेषांक
काहे खातिर फादर्स डे
आ
काहे खातिर मदर्स डे

पाक्षिक पत्रिका संयुक्तांक 1-31 अगस्त 2021
भोजपुरी जंक्शन
देशभक्ति विशेषांक
सुंदर सुभूमि भइया भारत के देसवा से

Title Code - DELBHO00011
पाक्षिक पत्रिका 1-30 सितंबर 2021 मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जंक्शन
सुनीं सभे
विशेषांक
समसामयिक मुद्दन पर
विचार मंथन

Title Code - DELBHO00011
पाक्षिक पत्रिका 1-15 अक्टूबर 2021 मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जंक्शन
प्रेमे इलाज बा तनाव के

Title Code - DELBHO00011
पाक्षिक पत्रिका 16-31 अक्टूबर 2021 मूल्य - ₹ 20
भोजपुरी जंक्शन
मन के रिचार्ज करीं

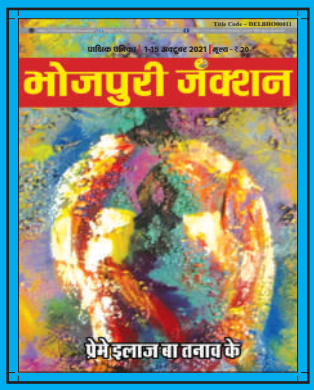

भोजपुरी जंक्शन
संस्मरण विशेषांक
अनुभव के आँटिया ह संस्मरण

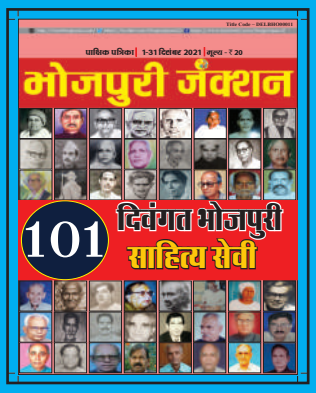
भोजपुरी जंक्शन
101
दिवंगत भोजपुरी साहित्य सेवी

भोजपुरी जंक्शन
जिनगी संभावना ह, समस्या ना

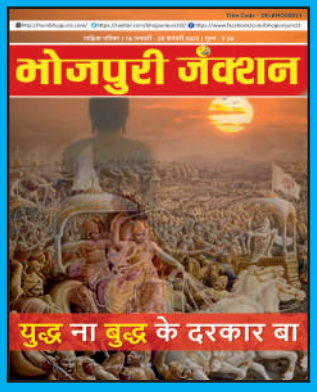
भोजपुरी जंक्शन
युद्ध ना बुद्ध के दरकार बा

भोजपुरी जंक्शन
रूस-यूक्रेन युद्ध विशेषांक
जिंदगी युद्ध ना उत्सव ह

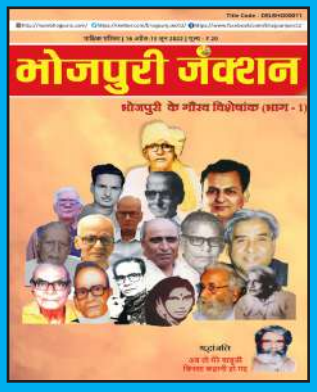
भोजपुरी जंक्शन
भोजपुरी के गौरव विशेषांक (भाग - 1)

भोजपुरी जंक्शन
संपादकीय विशेषांक
ए हो रामा !
हम भोजपुरिआ | भोजपुरी जंक्शन | 62 अंक

भोजपुरी जंक्शन
जन्म-मृत्यु विशेषांक
(भाग -1)
कवनो ठगवा नगरिया लूटल हो
- कबीर

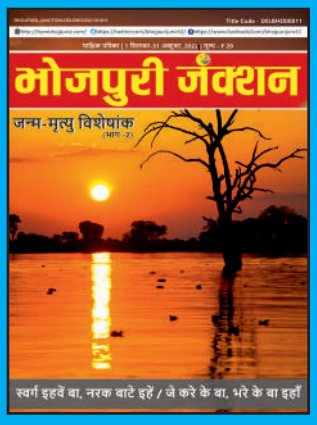
भोजपुरी जंक्शन
जन्म-मृत्यु विशेषांक
(भाग -2)
स्वर्ग इहवें बा, नरक बाटे इहें / जे करे के बा, भरे के बा इहाँ

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग -1)
ऑपरेशन थियेटर में भोजपुरी तेलगन
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग-2)
रोज रात समीक्षा, रोज सुबह उत्सव
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग-3)
समीक्षा रचना के पुनर्सृजन ह
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जंक्शन
किसान कवितावली
(भाग-1)
62 कवि
62 कविता
कब होई किसान बनला पर छाती उतान ?

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग-4)
बूझेली चिलम जेकरा पर चढ़ेला अँगारी
भोजपुरी सिनेमा के संसार

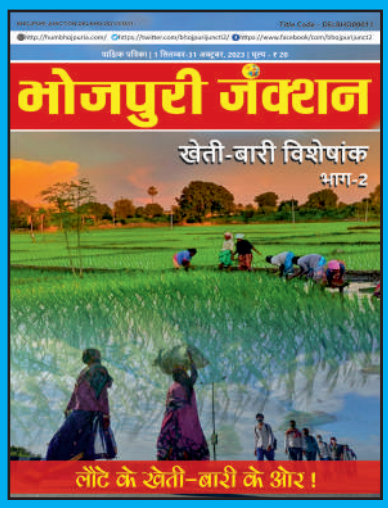
भोजपुरी जंक्शन
खेती-बारी विशेषांक
भाग-2
लौटे के खेती-बारी के ओर !

भोजपुरी जंक्शन
खेती-बारी विशेषांक
भाग-3
छठी मइया के अर्पित खेती-बारी अंक

भोजपुरी जंक्शन
खेती-बारी विशेषांक
भाग-4
संजीवनी बूटी ह
मोटका अनाज
आबाद रहे हरदी-धान

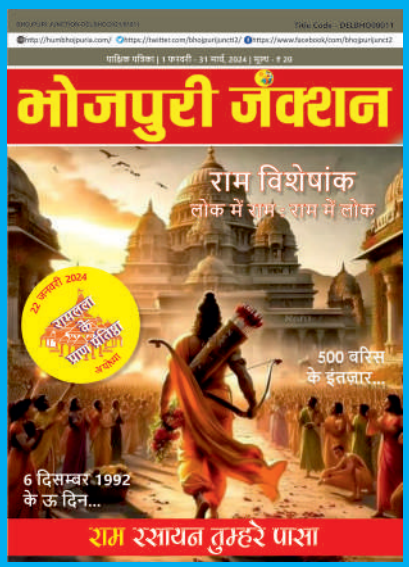
भोजपुरी जंक्शन
राम विशेषांक
500 बरिस
के इंतजार...
6 दिसम्बर 1992
के ऊ दिन...
राम रसायन तुम्हरे पासा

भगवान राम पर मुस्लिम शायर लोग के अशआर

है राम के वजूद पे हिन्दोस्तां को नाज
अहल-ए-नजर समझते हैं उसको इमाम-ए-हिंद
अल्लामा इकबाल

दया अगर लिखने बैठूं तो होते हैं अनुवादित राम
रावण को भी नमन किया ऐसे थे मर्यादित राम
अजहर इकबाल

हो गए राम जो तुम गैर से ए जान-ए-जहां
जल रही है दिल-ए-पुर-नूर की लंका देखो
कल्ब-ए-हुसैन नादिर

अच्छों से पता चलता है इंसां को बुरों का
रावन का पता चल न सका राम से पहले
रिजवान बनारसी

नक़्श-ए-तहजीब-हुनूद अब भी नुमायां है अगर
तो सीता से है, लक्ष्मण से है और राम से है
मौलाना जफर अली खान

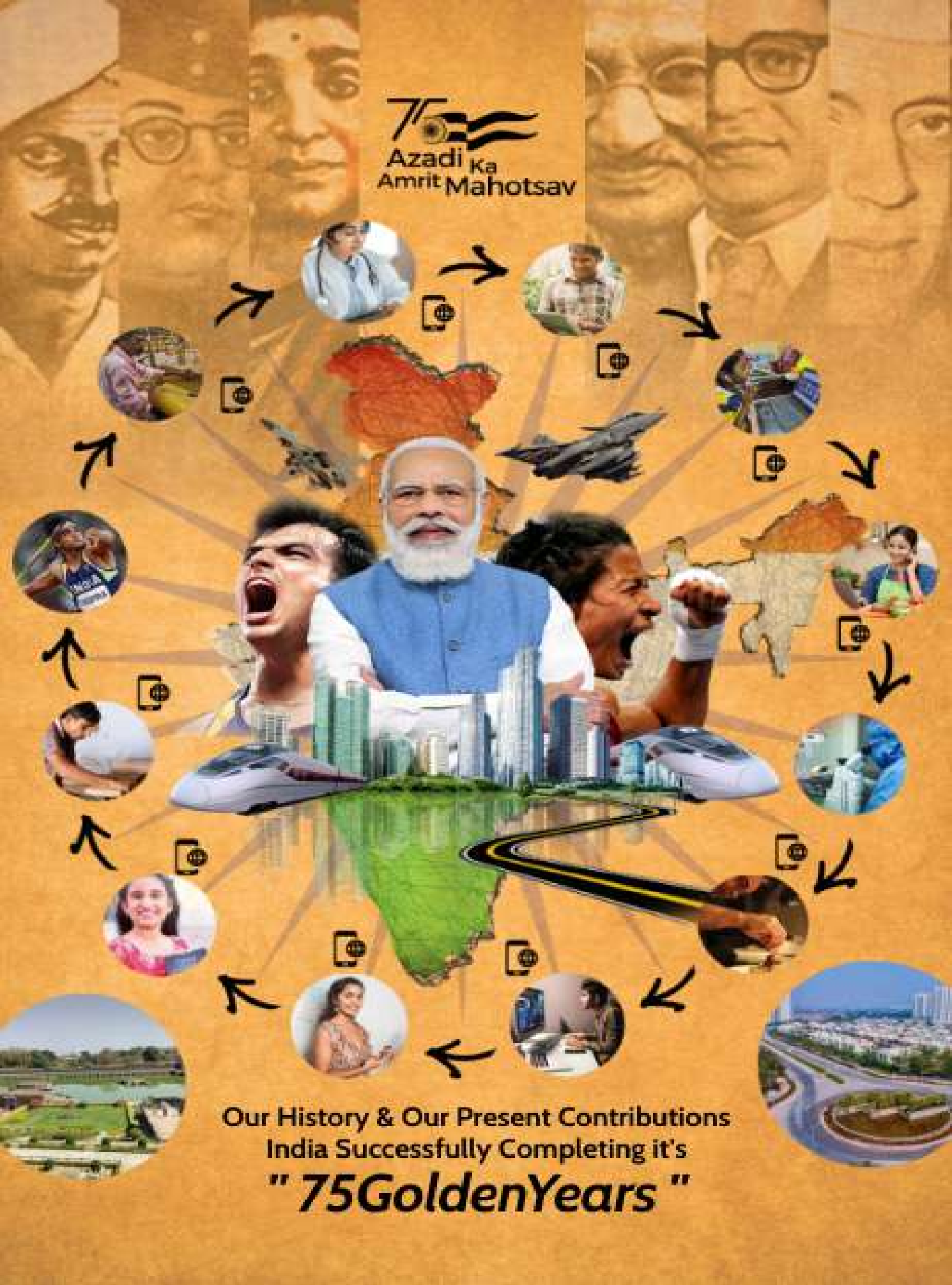
Azadi Ka Amrit Mahotsav
Our History & Our Present Contributions
India Successfully Completing it's
" 75GoldenYears "